छत्रपती शिवाजी महाराज

महाराज महादजी शिंदे (सिंधिया)

सन 1983 में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बदलने में अहम भूमिका निभाने वाले युवा विधायक

ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर

(शिंदेशाही राऊत)

प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद (परभणी)

दैनंदिनी

श्रीमद्भगवद्गीता के चुनिंदा श्लोकों सहित

दैनंदिनी धारक की जानकारी

(खोई हुई दैनंदिनी धारक को लौटाने के लिए उपयुक्त जानकारी)

पूरा नाम : _____

_____

पता : _____

_____

फोटो

गाँव : _____

तहसील : _____

जिला : _____

राज्य : _____

दूरभाष (मोबाईल) : | | | | | | | | | | |

आपत्कालीन संपर्क : | | | | | | | | | | |

ई-मेल : _____

शैक्षिक अर्हता : _____

व्यवसाय : _____

जन्म तिथि : / /

रक्त गट :

स्वास्थ्य सम्बंधित जानकारी

_____

_____

_____

उपरोक्त जानकारी लिखने के उपरांत व्हॉट्सॲप स्कॅनर द्वारा हमें भेजे और संपर्क में रहें।

(**प्रक्रिया :** स्वयं के व्हॉट्सॲप सेटींग में जाकर नाम के सामने के इस चिन्ह को क्लिक करे तथा SCAN CODE द्वारा यहाँ दिया हुआ कोड स्कॅन किजिए।)

Scan Me &
Whatsapp

अनुक्रम

1.	संविधान प्रास्ताविक में दिये ध्येय तथा ध्येयों के बारे में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक	2
2.	मराठवाड़ा के कुछ लोकनेताओं की पहचान	4
3.	दूधगांवकर परिवार की अध्यात्मिक तथा विशेष ऐतिहासिक बातें	6
4.	ॲड. गणेशराव को समर्पित विख्यात कवि फ. मुं. शिंदे (फकीर मुंजाजी शिंदे) इनकी कविता	9
5.	भारतीय संस्कृति के संबंध में कुछ विद्वानों के विचार तथा श्रीमद्भगवद्गीता के चुनिंदा श्लोक	10
6.	सम्माननीय ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब : संक्षिप्त परिचय	14-15
7.	बापुसाहेब के हितचिंतकों के शब्दों में निम्न मुद्दों पर योगदान का वर्गीकरण	
	• पद	16
	• लोकनेता	17
	• रचनात्मक कार्य	21
	• एक समझदार जनसेवक	28
	• बापुसाहेब के ही शब्दो में	34
8.	सांसद ॲड. दुधगांवकर इनके कार्यों का सारांश	35
9.	साथिदारों के बापुसाहेब पर लिखें 6 लेख	41
10.	दिनविशेष, ऐतिहासिक घटनाएँ, तिथीयाँ एवं अपनी संस्कृति के कुछ खास संदेश QR Codes	52
11.	**वार्षिक दैनंदिनी**	
	• श्रीमद्भगवद्गीता के चुनिंदा श्लोक	3, 11, 54, 92, 138,160
	• हर महिनों के लिए लेआऊट	58
	• दृष्टिक्षेप 2024 एवं 2025	88
	• Lined Pages for Notes	97
	• Blank Pages	142
12.	भविष्य के लिए योजना – ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA)	163
13.	अभियानों की जानकारी हेतु QR Codes	168
14.	दुधगांवकर परिवार तथा बापुसाहेब के कर्तृत्व की तस्वीरें	170
15.	सन 1971 से 2014 – ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब का कार्यसारांश	176

अनेक पिढीयों से पंढरपुर वारी में संत ज्ञानेश्वर माऊली के पादुकाओं का अभिषेक करना यह सन्मानप्राप्त परिवार

www.Dudhgaonkar.in

Hope diary owner's goals are in line with at least main words as in preamble of constitution of India.

PREAMBLE OF THE INDIAN CONSTITUTION

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [**SOVEREIGN** SOCIALIST SECULAR **DEMOCRATIC REPUBLIC**] and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political ;
LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship ;
EQUALITY of status and of opportunity ;

and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation ;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

दैनंदिनी धारक के सपने और ध्येय भारतीय संविधान के उद्देशिका में दिये गए मुख्य शब्दों के अनुरुप होंगे, यह अपेक्षा हैं ।

भारतीय संविधान की उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक (संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष **लोकतंत्रात्मक गणराज्य)** बनाने के लिए,
तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढाने के लिए
दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949, इ. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।

(समाजवादी पंथनिरपेक्ष यह दो शब्द जुन 1975 में घोषित आपातकाल के दौरान डाले गये हैं।)

श्रीमद्भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक ध्येयों के संबंध में मार्गदर्शन करते हैं...

Chapter 7, Verse 16-17

"O best among the Bharatas, four kinds of pious men begin to do good actions (su-kriti) - the distressed, the inquisitive, the desirer of wealth, and he who is searching for truths / knowledge (Dnyani).

Of these, the one who is in full knowledge and who is always engaged in pure devotional service is the best. For I am very dear to him, and he is dear to Me."

अध्याय ७, श्लोक १६-१७

''हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन ! चार प्रकार की पुण्यात्माएँ सत्कर्म करना शुरु करते हैं - आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी तथा ज्ञानी।

इनमें से जो पूर्ण ज्ञानी हैं और जो नित्य भक्तियुक्त सेवा करने में मग्न है; वह सर्वोत्तम है क्योंकि मैं उसे अत्याधिक प्रिय हूँ और वह मुझे अत्याधिक प्रिय हैं ।''

अध्याय 7, श्लोक 16-17

''हे भरतश्रेष्ठ अर्जुना ! चार प्रकारचे पुण्यात्मा सत्कर्म करायला सुरुवात करतात.

- आर्त, जिज्ञासू, अर्थार्थी आणि ज्ञानी.

यापैकी जो पूर्ण ज्ञानी आहे आणि नित्य भगवदभक्तीमध्ये तल्लीन आहे तो सर्वोत्तम आहे, कारण मी त्याला अत्यंत प्रिय आहे आणि तो मला अत्यंत प्रिय आहे.''

Chapter 7, Verse 18

"All these devotees are certainly magnanimous (generous) souls, but he who is situated in knowledge I consider to be just like Me, this is My opinion. Being engaged in My transcendental service, **he is sure to attain Me, the highest and most perfect goal."**

अध्याय ७, श्लोक १८

''निःसंदेह ये सब (ऐसा सत्कर्मी आचरण करने वाले) भक्त महान हैं लेकिन जो मेरे ज्ञान में स्थित हो गया है, उसे मैं अपनी तरह ही मानता हूँ, **यह मेरा मत हैं** । मेरी दिव्य सेवा में लीन होने के कारण वह निश्चित मेरी; **सर्वोच्च तथा सर्वोत्तम लक्ष्य की प्राप्ति करता हैं** । ''

अध्याय 7, श्लोक 18

''निःसंशय हे सर्व (असे वागणारे) भक्त महान आहेत; परंतु जो माझ्या ज्ञानामध्ये स्थित झाला आहे, त्याला माझ्या स्वतः प्रमाणेच मानतो. माझ्या दिव्य सेवेमध्ये युक्त झाल्यामुळे तो नक्कीच **माझी; सर्वोच्च आणि सर्वोत्तम लक्ष्याची प्राप्ती करतो.**''

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी हेतू **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

आदरणीय महान होकर गए, चरित्र उनका देखो जरा...
उनके जैसा हम बनें, यही बोध मिले खरा...!

मराठवाडा के कुछ प्रेरणास्त्रोत

सहकार महर्षि कै. शिवाजीराव नाडे (मुरुड)

ज्येष्ठ स्वतंत्रता सेनानी सहकार महर्षि शिवाजीराव नाडे (मुरुड) जी का उम्र के 96 वर्ष में देहावसान हुआ। (सन 2021 में)

वर्तमान पीढि को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी आत्मीय लगे, कारण क्या है ?

मोदी जी का आचरण, युवाओं की महत्त्वाकांक्षाओ को समझ लेने की दृष्टि, विकास दृष्टि, भ्रष्टाचार का विरोध, गरीबों की सेवा करनी चाहिऐ आदि विचारों को पुष्टी करने वाले निर्णय। यह विचारधारा नई पीढि को पसंद आने के कारण सन 2014 में नरेंद्र मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बनें।

इसके कई दशक पूर्व, 'शिवाजी' नाम सार्थक करने वाले, आज की नई पीढि का इन्हीं विचारों पर आधारित कार्य सन 1946 से ही श्री. शिवाजीराव नाडे साहब ने कर दिखाया।

दूरदृष्टि रखने वाले इस नेता ने उस समय किए हुए कार्यों के कारण ही **निजी चीनी कारखानों के राज्य संघटन के अध्यक्ष, कर्तृत्वसंपन्न व्यक्तित्व श्री. बी.बी. ठोंबरे कहते हैं कि,** ''पुराने उस्मानाबाद जिले के भाग्यविधाता हैं श्री.शिवाजीराव नाडे !!'' (सन 1981 के पहले लातूर जिला उस्मानाबाद जिले का ही हिस्सा था।)

ऐसे कर्तृत्वसंपन्न नेता का देहावसान उम्र के 96 वें वर्ष में वृद्धावस्था के कारण हुआ। वे अपनी उम्र के 90 वर्षों तक जनसेवा का कार्य करते रहे। 1946 से 2015 तक महाराष्ट्र की राजनीती में एक महत्त्वपूर्ण नाम, अर्थात श्री.शिवाजीराव नाडे जी रहें। भूतपूर्व मुख्यमंत्री विलासरावजी देशमुख, अपना चुनाव प्रचार कार्य शिवाजीराव नाडेजी को साथ लेकर ही करते थे।

आदरणीय नाडे जी के कुछ महत्वपूर्ण कार्य:

- युवाओं ने व्यसनाधीन नहीं होना इसलिए मुरुड शहर में कोई भी बार आज तक शुरु नहीं होने दिया।
- चीनी के कारखाने शुरु कर पाँच सालों में ऋणमुक्त कर दिए।
- मुरुड में लगभग 60 ग्रामविकास संस्थाएँ तथा सहकारी संस्थाएँ निर्माण की।
- मुरुड को मराठवाडा तथा महाराष्ट्र का शैक्षणिक केंद्र बनाया। यहाँ की पाठशाला में छः हजार छात्र थे। यह महाराष्ट्र की गुणवत्तापूर्ण पाठशालाओं में से एक है। इसीलिए भूतपूर्व प्रधानमंत्री नेहरुजी ने यहाँ की पाठशाला को भेंट दी थी।
- लातूर-उस्मानाबाद जिले मे अंडरग्राऊंड टेलिफोन वायरिंग की संकल्पना आदरणीय शिवाजीराव नाडे जी की ही थी।
- नाडे जी ने किसानों के लिए बिजली के खंभे स्वयं की निगरानी मे खडे करवाए।
- लातूर जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक की सुंदर इमारत की संकल्पना नाडे जी की ही थी।
- उस्मानाबाद-लातूर जिले के वर्तमान नेताओं के लिए गुरुतुल्य नेता थे नाडे जी।
- कितने ही कटु अनुभव आए तो भी मुहँ से एक भी अपशब्द न निकालने वाला व्यक्तित्व। कोई व्यक्ति बहुत ही बुरा है, ऐसा उन्हें लगा तो केवल इतना ही कहते थे - ''बदमाश है, लुच्चा है...''

ज्येष्ठ स्वतंत्रता सेनानी सहकार महर्षि, लोकनेता आदरणीय शिवाजीराव नाडे जी को उनके समधी दुधगांवकर परिवार की ओर से, ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल में समूचे मराठवाडा प्रांत से आए हुए कर्मचारियों की ओर से तथा परभणी जिले की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि...!!

जनसाधारण का हित ध्यान में रखकर शिवाजीराव नाडे जी ने सहकार क्षेत्र की वृद्धि के माध्यम से सबकी समृद्धि का आदर्श स्थापित किया। यही आदर्श सूत्रचे देश में आने वाले समय में कार्यान्वित होगा, ऐसा हमें विश्वास है। देश के युवाओं ने निर्व्यसनी रहकर समाज हित के कार्य करना, **यही सहकार महर्षि आदरणीय शिवाजीराव नाडे जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।**

लोकनेता मा.सांसद बाळासाहेब पवार

- ✓ **लोकनेता बालासाहेब पवार जी ने गाँव, पक्ष, जात, धर्म, गुट, चुनाव क्षेत्र, विभाग, प्रांत आदि मर्यादाओं को तोडकर मराठवाडा में जनहित का कार्य किया।**
- ✓ **महाराष्ट्र राज्य का मुख्यमंत्री पद मराठवाडा प्रांत को मिले, इस हेतु उन्होंने आंदोलन चलाया।**
- ✓ **मराठवाडा प्रांत में सहकार क्षेत्र की वृद्धि की।**
- ✓ **मराठवाडा को न्याय दिलाने, अधिकारों का एहसास कराने तथा विकास करने के लिए उन्होंने बडा संघर्ष किया।**
- गंगापूर का निजी चीनी कारखाना सहकार क्षेत्र में रुपांतरित करने वाले महान व्यक्ति हैं-बालासाहेब पवार जी। यह देश का शायद पहला उदाहरण है
- रामनगर (जालना) तथा कन्नड, इन दोनों सहकारी चीनी कारखानों का निर्माण
- परभणी स्थित वसंतराव नाईक कृषि विश्वविद्यालय
- जालना जिला निर्मिति में निर्णायक भूमिका
- अंबाजोगाई का शासकीय ग्रामीण वैद्यकीय महाविद्यालय
- औरंगाबाद का भगीरथ खाद निर्मिति प्रकल्प। औरंगाबाद जिला मध्यवर्ति सहकारी बैंक के अध्यक्ष
- मराठवाडा शिक्षण प्रसारक मंडल की शुरुआत की
- कन्नड का छत्रपति शिवाजी शिक्षण प्रसारक मंडल
- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय परिसर में स्थित भारत सरकार का क्रीडा क्षेत्र से संबंधित 'साई' का उपकेंद्र हो, यह आग्रह

ऐसे अनगिनत कार्य उन्होंने किए।

सहकार महर्षी स्व. लिंबाजीराव नागोराव दुधगांवकर

- परभणी जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक (PDCC) के आज तक के सर्वाधिक सफल अध्यक्ष (1970-1987)
- राज्य शासन के सहकार महर्षि पुरस्कार से सम्मानित
- जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष - उपाध्यक्ष (परभणी तथा हिंगोली लोकसभा क्षेत्र)
- निर्विरोध जिला परिषद सदस्य बनें। महाराष्ट्र राज्य का यह शायद एकमात्र उदाहरण

स्वतंत्रता सेनानी दुधगांवकर परिवार के संबंध में कुछ विशेष

सन 1695

पंढरपूर के श्री विठ्ठल भगवान महाराष्ट्र के आराध्य दैवत माने जाते हैं। औरंगजेब ने जब आक्रमण किया था तब पंढरपूर की विठ्ठल मूर्ति का सूर्याजी घाटगे पाटील ने 4 वर्ष 11 दिनों (2 अक्टूबर 1695 से 11 अक्टूबर 1699) तक बडी ही शूरता तथा पवित्रता के साथ संरक्षण किया था। यह महान कार्य करने वाले घाटगे पाटील परिवार की सदस्या, समीर गणेशराव दुधगांवकर की मामी जी हैं। इस क्षेत्र के चार प्रख्यात परिवारों में से एक देगांवकर घाटगे पाटील परिवार है।

सन 1850

महाराष्ट्र राज्य का सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक तथा धार्मिक उत्सव '' पंढरपूर की वारी '' है, जिसका महत्व जानकर प्रधानमंत्री मोदी जी देहु (पुणे) दर्शन के लिए आए। वारी में 'वेळापूर' (पंढरपूर) इस स्थान पर संत ज्ञानेश्वर माऊली की पादुकाओं का अभिषेक होता हैं। कई पिढियों से यह अभिषेक करने का सौभाग्य महाराष्ट्र में केवल दुधगांवकर परिवार का है।

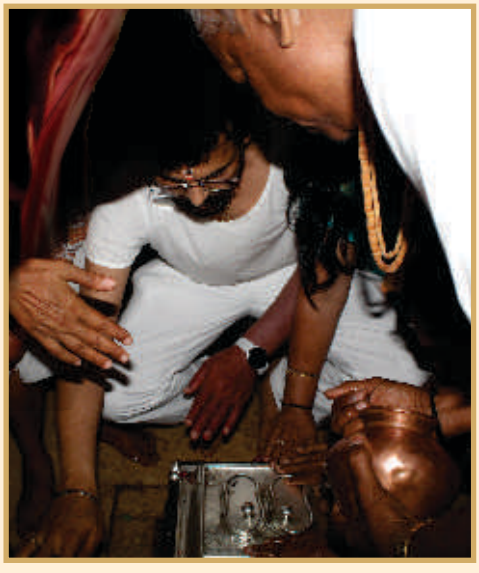

संत ज्ञानेश्वर माऊली की पादुका अभिषेक के सूवर्णक्षण। **(2019, 2023)**

सन 1909

शिर्डी के साईबाबा मात्र पाँच परिवारों से भिक्षा माँगते थे। इन पाँच परिवारों में से पहला परिवार अर्थात श्री. वामनराव गोंदकर परिवार। इस प्रकार श्री साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करनेवाले भाग्यशाली परिवार के साथ ऋणानुबंध स्थापित करने का सौभाग्य दुधगांवकर परिवार को मिला है ।

सन 1940

रझाकार के अन्यायी शासन के खिलाफ सशस्त्र आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले प्रेरणादायी, ख्यातिप्राप्त स्वतंत्रता सेनानी कै. तुकारामबापू पाटील (तादलापूर, तहसील उदगीर, जिला लातूर) ॲड. गणेशराव दुधगांवकर की सासु माँ के पिताजी हैं ।

श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर के चरणकमल
पिछले छः-सात दशकों से परभणी को नहीं लगे थे ।
परभणीवासियों का यह सौभाग्य कि
ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) के आग्रहपूर्वक
निमंत्रण पर 2019 में परभणी पधारे
श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरी पीठाधीश्वर
पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्री. गणेशराव दुधगांवकर
को समर्पित
विख्यात कवी फकीर मुंजाजी शिंदे
इनकी कविता...

फ. मुं. शिंदे
(अध्यक्ष, 87 वां अखिल भारतीय
मराठी साहित्य संमेलन)

जिवलग : फ. मुं. शिंदे

आले शोधत शोधत
होतो आम्ही अंधारात
उचलून समजून
वसविले उजेडात

अंतरीचे अनुबंध
जणू आधीचेच होते
त्याच्यातून मुग्ध असे
वर उसळून नाते

आकाशावर नात्यांस
तसे काही नाव नाही
राहिले न वाटेमधी
अनोळखी गाव नाही

आमच्यासाठी तुम्हीच
जणू देवाचा प्रसाद
तुमच्या वहितीखाली
शेत आमचे आबाद

धागे विणता विणता
झाले नात्याचेच माग
आठवणीत सदैव
असे स्वप्नातही जाग

गणेशाच्या झोळीतले
आम्ही लाडके फकीर
नवसास पावणारे
तुम्हीच आमचे पीर

श्रीमदभगवद्गीता तथा भारतीय संस्कृति के संबंध में कुछ विद्वानों के विचार

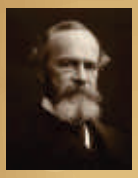

William James, Father of American Psychology Field *: "From the Vedas we learn a practical art of surgery, medicine, music,house building under which mechanized art is included. They are encyclopaedia of every aspect of life, culture, religion, science, ethics, law, cosmology and meteorology."*

उन्नीसवीं सदी के विचारकों में से एक, अमरीका के सर्वाधिक प्रभावी दार्शनिक **''अमरीकन मनोविज्ञान के जनक'' विलियम जेम्स :** ''जिन वेदों से हम शस्त्रक्रिया, औषध, संगीत, घरेलू इमारतें बनाने की व्यावहारीक कला सीखते हैं, जिनके अंतर्गत मशीनीकृत कलाएँ हैं, वे वेद जीवन संस्कृति, धर्म, विज्ञान, नीतिशास्त्र, कानून, विश्वविज्ञान तथा हवामानशास्त्र आदि सभी बातों के विश्वकोष है।''

W. Heisenberg, German Physicist*: "After the conversations about Indian philosophy, some of the ideas of Quantum Physics that had seemed so crazy suddenly made much more sense."*

डब्ल्यू.हेजनबर्ग, जर्मन भौतिकीविद : ''भारतीय तत्वज्ञान पर की गईं चर्चाओं के बाद, क्वांटम फिजिक्स की जो संकल्पनाएँ विचित्र लगती थीं, उनके अर्थ समझ में आने लगे।''

(क्वांटम फिजिक्स दुनिया का सर्वाधिक कठिन विषय माना जाता है।)

Dr. Arnold Toynbee, British Historian: *"It is already becoming clear that a chapter which had a Western beginning will have to have an Indian ending if it is not to end in the self-destruction of the human race. At this supremely dangerous moment in history, the only way of salvation for mankind is the Indian way."*

डॉ. अर्नोल्ड टोयनबी, ब्रिटीश इतिहासविद : '' यह पहले ही स्पष्ट होता है कि, जिस बात का पाश्चिमात्य आरंभ होता है इसका मानव जीवन की **समाप्ति न करने का** अंत यदि करना है, तो उसका अंत भारतीय पद्धति से ही होना आवश्यक है। **इतिहास के इन बहुत खतरनाक क्षणों मे, मानव जाति के लिए संरक्षक साबित होने वाला एकमात्र मार्ग, अर्थात - भारतीय मार्ग ही है।**''

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

(अमेरीका से पद्‌व्यूत्तर, सन २००२ से श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के अभ्यासक समीर गणेशराव दुधगांवकर इनकी टीम द्वारा बडी सजगता से हिंदी भाषा में अनुवादित किए गए श्लोक)

Chapter 18, Verse 61

(683rd Verse of total 700 Shrimad-Bhagavat-Gita Verses)

"The Supreme God is situated in everyone's heart, O Arjuna, and **is directing the wanderings of all living entities,** who are seated as on a machine, made of energy."

अध्याय १८, श्लोक ६१

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से ६८३वा श्लोक)

''हे अर्जुन! ईश्वर सभी जीवों के हृदय में स्थित है और **वह सभी जीवों का भ्रमण निर्देशित कर रहा है;** जैसे कि सभी जीव उर्जा द्‌वारा निर्मित यंत्र पर आरुढ हो ।''

अध्याय १८, श्लोक ६१

(श्रीमद्‌भगवद्‌गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी ६८३वा श्लोक)

''हे अर्जुन! परमेश्वर प्रत्येक जीवाच्या हृदयात स्थित आहे आणि **तो सर्व जीवांचे भ्रमण निर्देशित करीत आहे;** जसे काही हे सर्व जीव उर्जेने बनलेल्या यंत्रावर आरुढ असावेत.''

Chapter 2, Verse 46

"Whatever purpose is served by a small well of water is naturally served in all respects by a large lake. Similarly, one who realizes **the Absolute Truth** also fulfills the purpose of all the Vedas."

अध्याय २, श्लोक ४६

''छोटे कुएँ द्‌वारा संभव सभी कार्य बडे जलाशय द्‌वारा तुरंत संभव हो सकते हैं । उसी प्रकार जिस व्यक्ति को **परम सत्य (ईश्वर कि महानता)** की अनुभूति हुई है, वह व्यक्ति वेदों का उद्‌देश्य भी पूर्ण कर सकता है । ''

अध्याय २, श्लोक ४६

''लहान विहिरीद्धारे होऊ शकणारी सर्व कार्ये मोठ्या जलाशयाकडून सहजपणे होऊ शकतात. तसेच ज्याला **परम सत्य (देवाची महती)** कळले आहे तो वेदांचा उद्देश देखील पूर्ण करु शकतो.''

Chapter 2, Verse 48

"Perform your duty equipoised, O Arjuna, abandoning all attachment to success or failure. **Such equanimity is called yoga.**"

अध्याय २, श्लोक ४८

''हे अर्जुन ! सफलता और असफलता की आसक्ति का पूर्णतया त्याग करके तटस्थ भाव से तू तेरा कर्तव्य निभा । **ऐसे तटस्थ भाव को ही योग कहा गया है ।** ''

अध्याय २, श्लोक ४८

''हे अर्जुन ! यश आणि अपयशाबद्दलच्या संपूर्ण आसक्तीचा त्याग करुन समभावाने तुझे कर्म कर. **अशा समभावालाच योग असे म्हटले जाते.**''

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 12, Verse 02 to 04

(471st, 472nd & 473rd Verse of total 700 Shrimad- Bhagavat-Gita Verses)

The God said,"Those who fix their minds on Me and are always engaged in worshipping Me with transcendental faith are **considered by Me to be the most perfect.**

But those who fully worship the unmanifested, that which lies beyond the perception of the senses, the all-pervading, inconceivable, unchanging, fixed and immovable, the impersonal Conception of the **Absolute Truth** - by controlling the various senses and being equally disposed to everyone, such persons, **engaged in the welfare of all, at last achieve Me.**"

अध्याय १२, श्लोक ०२ ते ०४

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से ४७१वा, ४७२वा तथा ४७३वा श्लोक)

श्री भगवान ने कहा, ''जो लोग अपना मन मुझ पर स्थिर करते हैं तथा दृढ एवं दिव्य श्रद्धा से मेरी अखंड उपासना करने में लीन रहते हैं, **मेरे मत से वे सर्वोत्तम है।**

लेकिन जो लोग सभी इंद्रियों का संयमन करके और सभी में समबुद्धि रखते हुए-अव्यक्त; जो इंद्रियों की अनुभूति से परे, सर्वव्यापी, अचिंत्य, अविकारी, स्थिर एवं अटल ऐसे **परम सत्य** के निर्विकार रुप की पूर्ण उपासना करते हैं, **सभी के हित के लिए जो कार्य करने में मग्न होते हैं, वह अंततः मेरी प्राप्ति करते हैं ।''**

अध्याय १२, श्लोक ०२ ते ०४

(श्रीमद्भगवद्गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी ४७१वा, ४७२वा आणि ४७३वा श्लोक)

श्री भगवान म्हणाले, ''जे लोक त्यांचे मन माझ्यावर स्थित करतात आणि दृढ दिव्य श्रद्धेने माझी सतत उपासना करण्यामध्ये मग्न झालेले असतात, **ते माझ्या मते सर्वोत्तम आहेत.**

परंतू जे लोक सर्व इद्रिंयाचे संयमन करुन आणि सर्वांच्या ठायी समबुद्धी ठेवुन- अव्यक्त; जे इद्रिंयांच्या जाणिवेच्या पलीकडे असलेले, सर्वव्यापी, अचिंत्य, अविकारी, स्थिर आणि अचल अशा **परमसत्याच्या** निर्विकार रुपाची पुर्ण उपासना करतात, **''सर्वांच्या हितासाठी जे काम करण्यात गुंग राहतात'', ते शेवटी माझी प्राप्ती करतात.''**

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 6, Verse 17

"Regulated eating, recreation, regulated work in discharging your duty, regulated dreaming and wakefulness through Yoga **diminishes pains**."

अध्याय ६, श्लोक १७

''विनियमित आहार-विहार, कर्तव्य निभाते समय यथोचित कर्म करना, व्यक्ति का विनियमित (Regulated) कल्पनाशील होना तथा तटस्थ भाव रखते हुए सजग रहना - **ये बातें दुःखों को कम करती हैं।**''

अध्याय ६, श्लोक १७

''यथायोग्य आहार-विहार, कर्तव्य बजावतांना यथायोग्य कर्म करणे तसेच नियमन केलेला स्वप्नाळुपणा व समभाव जपुन जागृत राहणे - **सगळी दुःखे कमी करते.**''

Chapter 2, Verse 33 & 34

"If, however, you do not perform your religious duty of fighting, then you will certainly incur sins for neglecting your religious duties (Dharma) and thus lose reputation as a fighter.

People will always speak of your infamy (as a coward and a deserter). **For a respectable person, infamy is worse than death.**"

अध्याय २, श्लोक ३३ / ३४

किंतु यदि तुमने धर्मयुद्ध करने का तुम्हारा कर्तव्य नहीं निभाया तो कर्तव्य की उपेक्षा करने के कारण तुम्हें निश्चित रुप से पाप लगेगा तथा इस कारण से योद्धा के रुप में तुम अपनी कीर्ति गँवाओगे ।

तुम्हारे संबंध में लोग हमेशा बदनामीकारक बातें (एक डरपोक एवं भगोड़ा व्यक्ति) कहते रहेंगे। **सम्माननीय व्यक्ति के लिए बदनामी मृत्यु से भी बुरी होती है ।**

अध्याय २, श्लोक ३३ / ३४

''परंतु तु जर धर्मयुद्ध करण्याचे तुझे कर्तव्य निभावले नाहीस तर कर्तव्य करण्यामध्ये दुर्लक्ष केल्यामुळे तुला निश्चितपणे पाप लागेल आणि यामुळे योध्दा म्हणुन तु तुझी कीर्ती गमावशील.

लोक नेहमी तुझ्याबद्दल बदनामीकारक गोष्टी (एक भित्रा आणि पळपुटा व्यक्ती) बोलतील. **सन्माननीय व्यक्तीसाठी बदनामी ही मरणापेक्षाही वाईट असते.**''

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

सन्माननीय बापूसाहेब : संक्षिप्त परिचय

नाम : **ॲडव्होकेट गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)**

लोकाभिमुख नाम : **बापूसाहेब**

जन्म/मूल गाँव : दुधगांव, ता. जिंतूर, जि. परभणी

निवास स्थान : दुधगांवकर फार्म हाऊस,
पोखर्णी फाटा, मु.पो. पोखर्णी (नृसिंह), ता.जि.परभणी

स्थायी पता : द्वारा–ज्ञानोपासक महाविद्यालय,
पो.बॉ.नं. 54, परभणी – 431 401.
ता. जि. परभणी (महाराष्ट्र)

दूरभाषा क्रमांक : (02452) 242016 मो.नं. +9194 2272 7444

जन्म दिनांक : 9/9/1945 (जन्मतिथी : श्री गणेश चतुर्थी, इसलिए गणेश नामकरण हुआ।)

शिक्षण : बी.ए., एल.एल.बी. (ॲडव्होकेट)

परिवार : पत्नी – डॉ.सौ. संध्याताई गणेशराव दुधगांवकर, M.Sc., Ph.D. (1981)
बेटी – मधुरा गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Maths & Comp. Science (USA)
बेटा – समीर गणेशराव दुधगांवकर, M.S. Mech. Engg. USA (2001)

रुचियाँ : श्रवण – व्याख्यान, प्रवचन, गायन
वाचन – विविध साहित्य कृतियाँ, ग्रंथ, किताबें
प्रबोधन – युवा संघटन / युवा कल्याण

राजकीय क्षेत्र में योगदान :

- **सन 1980 के आमदार (काँग्रेस)** –
  वसमत विधानसभा चुनाव क्षेत्र, जि. हिंगोली (पुराना जिला परभणी)
- **सन 1985 के आमदार (काँग्रेस)** – जिंतूर विधानसभा चुनाव क्षेत्र जि.परभणी
- **राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)** – कार्यकाल – सन 1983 ते 1985
  रोजगार गारंटी योजना, तंत्रशिक्षा, सेवायोजना खाता, महाराष्ट्र राज्य
  मा.ना. श्री. वसंतदादा पाटील, मुख्यमंत्री तथा
  मा.ना. श्री. रामराव आदिक, उपमुख्यमंत्री इनका मंत्रिमंडल
- **अमरावती तथा बुलढ़ाणा दोनों जिलों के पालकमंत्री**
- **सन 1990** विधानसभा पाथरी, जि.परभणी (काँग्रेस)– काँटे की लढत में हार।
- **सन 1994 स्थानिक स्वराज्य संस्था विधान परिषद चुनाव क्षेत्र (अपक्ष), परभणी–हिंगोली (केवल 11 मतों से हार)**

* **खासदार सन 2009 – पंद्रहवीं लोकसभा सदस्य चुने गए । (शिवसेना)**

लोगों के विश्वास की वजह से 19 साल बाद अद्‌वितीय यश संपादन किया।

भ्रष्ट विरोधकों ने साजिश कर बडे समय तक संवैधानिक पद से दूर रखा, फिर भी 19 साल बाद पुनः बडा पद प्राप्त किया, ऐसा देश का शायद एकमात्र उदाहरण!!

सहकार क्षेत्र में योगदान :

* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो., ता. जिंतूर
* अध्यक्ष, 1960 में स्थापित तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जिंतूर
* अध्यक्ष, 1975 जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी
* संचालक, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई. सन 1978
* संचालक, IFFCO नई दिल्ली. सन 1989
* संचालक, नाफेड. सन 1987-88
* संचालक, कृषक भारती को.सो. सन 1989
* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बँक, परभणी
* **चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई. सन 1989**
* **संस्थापक/अध्यक्ष–PAFFCO खाद कारखाना, जिंतूर. सन 1989 ते 2001**
* **संस्थापक, नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव. सन 1989 स्थापित**

पक्ष संघटन/विस्तार कार्य :

* काँग्रेस पक्ष प्रवेश सन 1975
* जिला अध्यक्ष युवक काँग्रेस सन 1976
* सरचिटणीस म.प्र.काँ. सन 1987
* उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्र.काँ. सन 1994
* जालना जिला संपर्क प्रमुख – शिवसेना सन 2004-09

शिक्षा कार्य :

* **राज्य की विना अनुदानित शिक्षा नीति तैयार कर, भारती विद्यापीठ, MGM, MIT जैसे बहुत संस्थाओं को मंजुरी**
* मराठवाडा के 45 आयटीआय संस्था तथा 45 टेक्नीकल हायस्कूल को मान्यता देकर आरंभ किया
* **संस्थापक अध्यक्ष : ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी (स्थापना स. 1981)**
  - आजतक 50,000 परिवारों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने वाली संस्था
  - स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के अंतर्गत प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित शिक्षण मंडल
  - संस्था के तीन महाविद्यालय तथा छः माध्यमिक विद्यालय, समूचे परभणी जिले में कार्यरत प्रसिद्ध शिक्षण मंडल ।

महाराष्ट्र के प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद श्री. गणेशराव दुधगांवकर इनके पचास साल के कर्तृत्व के सारे पहलुओं के लिए **www.Dudhgaonkar.in/Ganeshrao** वेबसाइट पर अवश्य भेंट दें ।

पद

* राजनीतिक जीवन का आरंभ– जनरल सेक्रेटरी, श्री. शिवाजी महाविद्यालय, परभणी
* डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय में छात्र संगठन, सिनेट कार्यकारी मंडल सदस्य ।
* परभणी के मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय के कार्यकारी मंडल के सदस्य।
* सन 1960 से परभणी जिला परिषद में एक महत्त्वपूर्ण समूह।
* **सन 1980 में विधायक (काँग्रेस)**
  * वसमत विधानसभा मतदारसंघ, जि. हिंगोली (पहले परभणी जिला)
* **सन 1983 में राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार)**
  – रोजगार हमी योजना, तंत्र शिक्षण, सेवायोजना विभाग, महाराष्ट्र राज्य
  मा.ना.श्री. वसंतदादा पाटील (मुख्यमंत्री) तथा मा.ना.श्री. रामरावजी आदिक (उपमुख्यमंत्री) इनके मंत्रीमंडल कार्यकाल में–
  –अमरावती तथा बुलढाणा, इन दोनों जिलों के पालकमंत्री ।
* प्रमुख अतिथि, मराठवाडास्तरीय संत जनाबाई साहित्य सम्मेलन, गंगाखेड । उस समय प्रारुप के संबंध में बापुसाहेब ने तुरंत कहा था, ''अरे, इतनी रकम से क्या होने वाला है? जरा बड़ा प्रारुप तैयार करो तथा हम एकदिवसीय नहीं बल्कि दो दिन का भव्य तथा शानदार साहित्य सम्मेलन आयोजित करेंगे।''
* **सन 1985 में विधायक (काँग्रेस)**
  जिंतूर विधानसभा मतदारसंघ, जि. परभणी
* **15 वी लोकसभा सदस्य (सन 2009-2014) (शिवसेना)**
  – केंद्र सरकार के कोयला, खाण तथा पोलाद इस स्थायी समिती के सदस्य।
  – सांसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम स्थापित किया।
* **संस्थापक, 1989 में स्थापित नृसिंह सहकारी साखर कारखाना, लोहगाव**
* **संस्थापक अध्यक्ष– PFFCO खाद कारखाना, जिंतूर सन 1989 से 2001**
* संचालक, दुधगाव वि.का.से.स.सो, ता. जिंतूर
* अध्यक्ष, 1960 में स्थापित जिंतूर तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग संस्था, जिंतूर
* अध्यक्ष, 1975 में स्थापित जि.स. खरेदी विक्री संघ, परभणी
* संचालक, म. रा. स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई, सन – 1978
* **चेअरमन, म.रा.स. मार्केटिंग फेडरेशन, मुंबई, सन – 1989**
* संचालक, IFFCO, नई दिल्ली, सन – 1989
* संचालक, नाफेड, सन – 1987-88
* संचालक, कृषक भारती को. सो. सन – 1989
* चेअरमन, ज्ञानोपासक नागरी सहकारी बैंक, परभणी
* अध्यक्ष तथा संचालक, महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघ

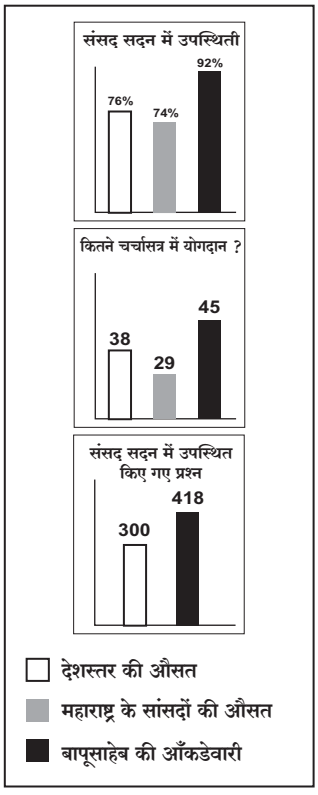

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

लोकनेता

- 'निजामकालिन बंगले में बापुसाहेब रहते थे। उसे 'गोल बंगला' कहते थे। इस गोल बंगले में उनके मित्रों की हमेशा भीड लगी रहती थी।
- बापुसाहेब जी ने महाविद्यालयीन जीवन में मागासवर्गीय छात्रवृत्तिधारक विद्यार्थियों का संगठन तैयार किया तथा इस संगठन के माध्यम से व्याख्यानमाला का आयोजन किया।
- राज्य का मुख्यमंत्री पद मराठवाडा प्रांत को मिले, इस हेतु पक्षीय स्तर पर समर्थन किया। इसी समर्थन का परिणाम स्व. शंकरराव चव्हाण जी को मुख्यमंत्री पद प्राप्त हुआ।
- महाराष्ट्र तथा देश के सुसंस्कृत व्यक्तित्व यशवंतरावजी चव्हाण तथा वसंत दादा पाटील ये गणेशशव जी के आदर्श थे। उनके वास्तव राजनीतिक गुरु मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण तथा मा. श्री. लिंबाजीराव दुधगांवकर थे। इनकी वैचारिक विरासत को बापुसाहेब ने आगे बढ़ाया। मा. श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री बनाने में बापुसाहेब आग्रही थे।

- सन-1978 को कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी को तत्कालिन केंद्र शासन ने प्रतिशोध की भावना से गिरफ्तार किया, इस प्रकार की भावना जनमानस की हुई अतः देशभर में जेलभरो आंदोलन शुरु हुआ। परभणी जिले में भी जिला युवा कांग्रेस के अध्यक्ष ॲड. गणेशराव जी दुधगांवकर इनके नेतृत्व में जेल भरो आंदोलन संपन्न हुआ।
- विधायक बनने हेतु हर बार मतदारसंघ बदलने का साहस केवल बापूसाहेब ही दिखा सके।
- हाफ दाढ़ी... मूछोंवाला... उँची कदकाठी, बलशाली व्यक्तित्व के धनी, अर्थात - गणेशरावजी दुधगावंकर । मराठी फिल्म में यदि व्हिलन की भूमिका करने का अवसर मिला होता, तो इस भूमिका को गणेशरावजी ने न्याय दिया होता । यह हंसी-मजाक की बात छोड़ो, लेकिन **गणेशरावजी वास्तव में 'हीरो' है । विशेषत: शिक्षा क्षेत्र में उन्होंने दिए हुए योगदान को देखा जाए, तो वह शिक्षा महर्षि ही है । उनका सहकार क्षेत्र का योगदान देखा जाए, तो वह सहकार महर्षि ही है । गणेशराव दूधगांवकर ज्ञानोपासक है ।** उन्होंने स्थापित की हुई पाठशालाएँ, महाविद्यालय तथा छात्रावासों के नाम पढ़ने पर उनको ज्ञानोपासक कहना सार्थक लगता है । अपनी प्राण प्रिय संस्थाओं को 'ज्ञानोपासक' यह नाम देना; यह सोद्देश की हुई कृति है ।
- **कांग्रेस पार्टी में नवचैतन्य निर्माण किया:** बापुसाहेब के वसमत विधान- सभा सदस्य के रुप में चुनकर आने से पूर्व वसमत तहसील में कांग्रेस पार्टी दुर्बल थी। कुछेक कार्यकर्ता पार्टी में थे। इन कार्यकर्ताओं में चेतना का अभाव था। बापुसाहेब के संगठन चातुर्य के कारण इन कार्यकर्ताओं में नवचैतन्य निर्माण हुआ।
- 1985 में परभणी जिले के सभी विधानसभा चुनावक्षेत्रों की उम्मीदवारी दुधगांवकर जी के कहने पर दी गई थीं। इस चुनाव में दुधगांवकर जी ने तकरीबन सभी उम्मीदवारों को चुनकर लाया था अतः काँग्रेस पक्ष में उनका वजन और

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

भी बढ़ गया था।

- समूचे महाराष्ट्र में भ्रष्टाचार निर्मूलन आंदोलन चलाया। किसान कांग्रेस, महाराष्ट्र कृषक समाज राज्यस्तरीय पत्रकारिता अधिवेशन, जलसिंचन परिषद ऐसे अनगिनत आंदोलनों का नेतृत्व बापुसाहेब ने किया।
- कृषि,सहकार, शिक्षा,आरोग्य,रेल,हाईवे आदि विषयों पर उनका अभ्यास है।
- राज्य में बाबासाहेब भोसले मुख्यमंत्री बने, तब उन्हें पद से हटाने का दृढसंकल्प बापुसाहेब ने किया था। अंततः एक वर्ष के भीतर ही बाबासाहेब भोसले को पद छोड़ना पड़ा। वसंत दादा पाटील मुख्यमंत्री बने और आदिक उपमुख्यमंत्री बनाए गए। उस समय मंत्रीमंडल में बापुसाहेब को शामिल किया गया। **इस प्रकार राजनीति में बापुसाहेब का प्रभाव था।**
- अजिम इन्हें मंत्री पद दिया गया तो वे मराठवाडा प्रांत की समस्याओं को हल करेंगे। **यह बात बापुसाहेब ने मुख्यमंत्री वसंत दादा पाटील को समझायी। बापुसाहेब ने वचन भी दिया था और उसे पूरा भी किया। अब्दुल अजिम बापुसाहेब के साथ मंत्री बनें।**
- महाराष्ट्र की राजनीति में मराठवाड़ा प्रांत से मुख्यमंत्री पद के सच्चे दावेदार बापुसाहेब ही थे। सच देखा जाए तो बीस वर्ष पहले ही बापुसाहेब महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री बनना अपेक्षित था।
- राज्य की राजनीति में काँग्रेस पक्षश्रेष्ठीने बापुसाहेब की बातें नहीं मानी। उस समय कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी होते हुए भी बापुसाहेब ने सुरेश वरपुडकर को जब काँग्रेस का टिकट नहीं दिया गया, तो शिंगणापुर विधानसभा मतदारसंघ से घोड़ा' इस चिन्ह पर अपक्ष के रुप में खड़ा किया और चुनकर भी लाया और परभणी जिले में नए नेतृत्व का निर्माण किया।
- **'ज्ञानोपासक' इस शब्द में ही सब कुछ समाया हुआ है। यह शब्द ही अर्थपूर्ण है। 'ज्ञानोपासक' इस शब्द के सहारे गणेशरावजी दूधगांवकर जैसे लगता है - छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजश्री शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की शैक्षणिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। यह काम स्वागतार्ह ही है। इसके साथ ही यह काम अभिनंदनीय तथा अभिमानास्पद भी है। मुझे तो गणेशरावजी की महानता इसी कार्य में अनुभव होती है। इसी ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापूसाहेब का सही उपयोग समाज को होगा। उनके हाथों एक नहीं अनगिनत पीढ़ियों का निर्माण होगा। उनका यह कार्य बेजोड़ है।** इसीलिए परभणी, जिंतूर, सेलू, मानवत, पाथरी आदि तहसीलों का इलाका ही नहीं बल्कि समूचा मराठवाडा गणेशराव दूधगांवकरजी के कर्तृत्व के गीत गाएगा।

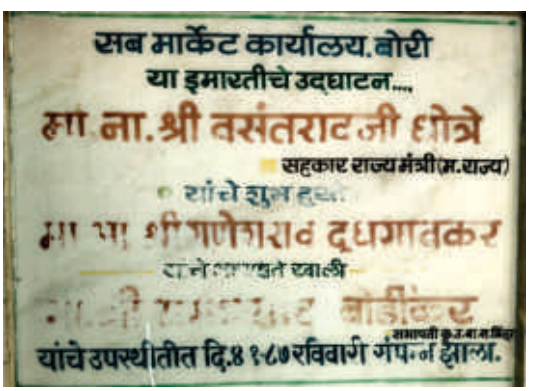

- बापुसाहेब ने जिंतूर तालुका युवा कांग्रेस अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी श्री. रामप्रसादजी बोर्डीकर पर सौंप दी। उसी के फल- स्वरुप बापुसाहेब ने श्री. रामप्रसाद जी बोर्डीकर को जिंतूर कृषि उत्पन्न बाजार समिती के सभापति पद पर विराजमान किया।
- पालम तहसील के भाऊसाहेब भोसले जी को परभणी जिला परिषद के उपाध्यक्ष के रुप में पदासीन किया।
- लोग तथा मित्र जोडना, यह बापुसाहेब के स्वभाव की प्रमुख विशेषता। बापुसाहेब का संगठन कौशल अनोखा है,

अद्भुत है। यह कौशल अन्य राजनेताओं में दुर्लभ है।

- बापुसाहेब एक प्रेरणादायी, स्फूर्तिदायी तथा दिशादर्शक नेतृत्व के धनी हैं। यह ऋषितुल्य एक उत्साही व्यक्तित्व, अजातशत्रु, विनयशील, बुजुर्गों का आदर सम्मान करने वाला, निर्व्यसनी, सात्विक वृत्ति, चरित्रसंपन्नता, लोकसंग्रही स्वभाव के समाज के सभी वर्ग के लोगों को अपने साथ लेकर चला है।
- मराठवाडा प्रांत की मिट्टी के संबंध में अभ्यासपूर्ण वक्तव्य देने वाला बापुसाहेब के अलावा अन्य कोई नेता नहीं है। अपने प्रांत के कृषि, सिंचन, लघु उद्योग, शैक्षिक क्षेत्र, संस्कृति, कला, क्रीड़ा आदि विभिन्न क्षेत्रों पर विद्वत्तापूर्ण तथा अभ्यासपूर्ण वक्तव्य देने की क्षमता केवल बापुसाहेब में है।
- मराठी भाषा के संत कवि जगतगुरु तुकाराम की काव्य पंक्ति- ''जे जे आपणाशी ठावे ते ते इतरांशी सांगावे, शहाणे करुनी सोडावे सकल जन'', को सार्थक करने वाला जीवन बापुसाहेब का रहा है।
- स्व. शंकररावजी चव्हाण ने कहा था कि, यदि आपने ॲड. गणेशराव दुधगांवकर इन्हें चुनाव में विजयी कर दिया, तो मैं तुम्हें मंत्री पद दिलाता हूँ। पंडितराव देशमुख को बापूसाहेब ने चुनाव में पराजित किया। तब स्वर्गीय शंकरराव जी चव्हाण ने दिया हुआ अपना वचन पूरा किया और बापूसाहेब को राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) रोजगार हमी योजना, तंत्रशिक्षण तथा सेवायोजन इस विभाग का मंत्री पद दिया गया।
- परभणी जिले में उच्च शिक्षा की गंगा लाने वाला पहला आदमी, बापुसाहेब हैं। अपनी प्रतिष्ठित शिक्षा संस्था में केवल गुणवत्ता को देखकर ही प्रोफेसरों की नियुक्तियाँ की हैं। दूर-दराज के जिलों के निवासियों को भी मात्र गुणवत्ता के कारण 'अपनी शिक्षा संस्था में अध्यापक के रुप में नियुक्तियाँ प्रदान की। जाति, धर्म, संप्रदाय आदि बातों का उन्होंने कभी भी विचार नहीं किया। उन्होने महत्त्व दिया केवल व्यक्ति की गुणवत्ता को। बापुसाहेब ऐसे गुणग्राहक व्यक्ति हैं।
- सावजी बैंक के संदर्भ में आर्थिक आयामों के संबंध में बापुसाहेब ने समय-समय पर मार्गदर्शन किया है। बैंक के आदरणीय संचालक को प्रेम से मुकुंद इस इकहरे नाम से ही उन्होंने संबोधित किया।

- बापुसाहेब ने 70% समाजकारण तथा 30% राजनीति इस सूत्र को अपनाया है। राजनीति में उनका शिष्य वर्ग बहुत बड़ा है। एक चरित्रसंपन्न नेता, ऐसी बापुसाहेब के व्यक्तित्व की पहचान है।
- विधान परिषद सदस्य का चुनाव बापुसाहेब मात्र छः मतों से हार गए वास्तव में यह पराभव ही नहीं है। बापुसाहेब के कार्यकाल में अनेक कार्यकर्ता निर्माण हुए। परभणी के मा. रामप्रसाद बोर्डीकर, आ. सुरेश वरपुडकर, वामन मोरे, गंगाखेड-पालम के भाऊसाहेब भोसले, रतनलाल तापडिया, वसमत के देवराव जाधव, खलील भाई, जावेद भाई, पूर्णा के उत्तमराव कदम, बालाजी पालीमकर, मंगलचंद गोरे आदि उनमें उल्लेखनीय नाम हैं।
- परभणी की राजनीति में सफल रहे तथा जिले का राज्यस्तरीय नेतृत्व करने वाले आ.सुरेश वरपुडकर हो अथवा मा. रामप्रसाद बोर्डीकर हो; ये एक समय बापुसाहेब के नेतृत्व में तैयार हुए व्यक्तित्व हैं।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- बाबुराव भालेराव की नियुक्ति उन्हें बताए बिना ही वसमत तालुका सहकारी जिनिंग प्रेसिंग लि. वसमत, इस संस्था के अध्यक्ष पद पर की। पूर्णा सहकारी साखर कारखाना, संजय निराधार समिती, नियोजन समिती आदि समितियों पर असंख्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की।
- परभणी जिले में कांग्रेस को प्रबल पार्टी बनाने का काम जिन परिवारों ने किया है, उनमें दुधगांवकर परिवार शीर्षस्थ है।
- बापुसाहेब सत्यशोधक, समाजवादी विचारों के राजनेता हैं। उन्होंने सामाजिक तथा शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु राजनीति को साधन के रुप में अपनाया। सत्य के पक्ष में खड़ा रहने वाला राजनेता, स्वभाव की उदारता तथा मानवता आदि गुणों से वे जनमानस में 'लोकनेता' के रुप में ख्यातिप्राप्त हुए।
- सामाजिक-सांस्कृतिक समारोह में राज्यमंत्री पद पर होने के बावजूद भी गणेशराव जी एक रसिक श्रोता के रुप में आद्यंत उपस्थित रहते थे। उनके साथ काम करने वाले कार्यकर्ता सुरेश वरपुडकर तथा बोर्डीकर सहकार क्षेत्र में पदाधिकारी थे।
- परभणी, हिंगोली तथा जालना इन तीन जिलों का प्रतिनिधित्व करने वाले बापुसाहेब एकमेवाद्वितीय नेता हैं।
- मराठवाड़ा के अल्पसंख्यांक समुदाय के हितों के प्रति बापूसाहेब हमेशा सजग रहे। सभी जाति, धर्म तथा संप्रदायों के लोगों को साथ लेकर चलने वाला नेता के रुप में गणेशराव जी दुधगांवकर ख्यातिप्राप्त नेता हैं।
- समाज के दुर्बल, असहाय, शोषित लोगों को बापुसाहेब ने हमेशा सहारा दिया है। समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का एहसास उन्हें हमेशा रहा है ।
- सामाजिक कार्य हो या राजनीति हो, दोनों सैद्धांतिक स्तर पर होने चाहिए; ऐसा उनका मत था । यह उनका बहुत बड़ा सद्‌गुण है । महाराष्ट्र की राजनीति में ॲड. गणेशराव दुधगांवकर का उल्लेख एक अद्‌वितीय राजनेता के रुप में होता है । महाराष्ट्र का नेतृत्व निश्चित करने वाले गिने-चुने लोगों में से एक थे बापूसाहेब !! दृढ़संकल्प के साथ में राजनीति करते हैं । इस कारण समाज उनके समर्थन में खड़ा हो जाता है ।

- बापुसाहेब एक कर्मयोगी हैं, दिलदार मित्र हैं, उनके पास भेदभाव नहीं है, वे स्पष्ट वक्ता है। कार्यकताओं के हित लिए हमेशा वे सक्रिय रहते हैं।

सन 1988 से लोगों की बहस सुनने में आती है कि यदि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या नहीं हुई होती, तो आज बापुसाहेब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे होते।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

रचनात्मक कार्य

- बापुसाहेब तथा भ्रष्टाचार इनका 36 का आँकड़ा है। उनके अनेक मित्रों तथा हितैषियों ने पैसा कमाने के कई रास्ते बताए, लेकिन बापुसाहेब कहते थे कि राजनीति कोई व्यवसाय नहीं है। भ्रष्टाचारमुक्त राजनेता बहुत कम हैं। बापुसाहेब उनमें से एक हैं। इसीलिए युवा राजनीतिज्ञों के लिए उनका चरित्र अनुकरणीय है। 'राजनेता कैसा हो?' इसका नीतिपाठ उनका जीवन देता है।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकीर हुसेन ने खूब कहा है कि, ''**कोई भी काम करो, लेकिन समर्पण भाव से करो।**'' गणेशराव जी का जीवन इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।
- अपने उत्तरदायित्व के एहसास के कारण बापुसाहेब को 'मराठवाडा केसरी' यह उपाधि सार्थक प्रतीत होती है। चुनावों की राजनीति में पक्षश्रेष्ठी के सामने झुकने की आज कोई सीमा नहीं रही है। लेकिन सत्ता हेतु किसी के भी सामने न झुकने का आदर्श बापुसाहेब ने युवा राजनेताओं के सामने रखा है। सम्मान अलग बात है और लाचारी अलग बात है। राजनीति में स्वाभिमान के साथ भी रहा जा सकता है, इसका आदर्श बापुसाहेब ने राजनेताओं के सामने रखा।
- परभणी में कृषि विश्वविद्यालय की माँग हेतु अँड. गणेशराव जी दुधगांवकर ने आंदोलन किया। शासन को कृषि विश्वविद्यालय देना पड़ा। समूचे महाराष्ट्र में कृषि विश्वविद्यालय की माँग करने वाले ॲड. गणेशराव जी दुधगांवकर पहले युवा नेता थे।
- मराठवाडा विकास आंदोलन के द्वारा मराठवाडा प्रांत के लिए विशेष पैकेज मिले तथा इस प्रांत के सर्वांगीण विकास हेतु उन्होंने निरंतर संघर्ष किया।
- मराठवाड़ा प्रांत को मुख्यमंत्री पद मिलना, परभणी में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित होना, शक्कर कारखानों तथा सूत गिरणी का निर्माण होना, आदि बातें मराठवाड़ा विकास आंदोलन के सुपरिणाम हैं।
- मराठवाड़ा विकास आंदोलन, रेल आंदोलन आदि आंदोलनों में साथ लेकर कार्य किया। इस प्रकार युवावस्था में ही उन्होंने अपने नेतृत्व गुणों की झलक दिखाई।
- जून, 1975 को अँड. गणेशराव जी दुधगांवकर के प्रयत्नों के परिणाम स्वरुप ही अंबाजोगाई में मराठवाडा प्रांत का दूसरा तथा एशिया का पहला ग्रामीण शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय कार्यान्वित हुआ।
- महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालयों के लिए कानून ही बनवाया। लोकनेता ना. शंकरराव जी चव्हाण ने बापूसाहेब की क्षमताओं को पहचानकर मंत्री पद दे दिया। पुलोद कार्यकाल में प्रशासकीय मंडल ने कारखाना निर्माण कार्य पूर्ण किया। अँड. गणेशराव जी ने उनके संबंधी उद्धवराव गरुड को चेअरमन बनाकर सहकार क्षेत्र पर काबू पाया। उन्होंने प्रशासकीय मंडल का विस्तार किया, लेकिन पुराने संचालकों को कायम रखा। **पूर्णा शक्कर कारखाना से शक्कर उत्पादन करने का सम्मान अँड. गणेशरावजी दुधगांवकर को मिला।**

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) के तौर पर रचनात्मक कार्य :-

1. बापुसाहेब के मंत्री पद के कार्यकाल में रिधोरा गाँव में प्राथमिक आरोग्य केंद्र तथा पूर्णा नहर पर जोड पूल बनाने की अनुमति मिल गई थी।

2. **बजाज कारखाना, वाळूज** – 2 फरवरी 1983 के शपथविधी के उपरांत उपमुख्यमंत्री रामराव जी आदिक साहेब, राज्यमंत्री (स्वतंत्र कार्यभार) ॲड. गणेशराव दुधगावकर (बापूसाहेब) तथा MDC Chairman IAS रायभान जाधव इन तीनों ने मिलकर मराठवाडा प्रांत का विकास हो, इस हेतु बजाज ऑटो, पुणे इन्हें औरंगाबाद शहर में आमंत्रित किया। परिणामस्वरुप 19 जनवरी 1984 को वाळूज में इस कारखाने का भूमि पूजन हुआ। भविष्य में एशिया का सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होने वाले शहर के रुप में औरंगाबाद शहर प्रसिद्ध हुआ। बजाज कारखाने के कारण कई लोगों को रोजगार मिला। मधुर बजाज जी ने 2023 में दिए हुए अपने साक्षात्कार में कहा कि, हम जब 1983 में औरंगाबाद आए थे तब यह एक निद्रिस्त शहर था।

3. ॲड. गणेशराव जी दुधगांवकर के उल्लेखनीय सहयोग के कारण ही परभणी जिले के शक्कर कारखाने, जिला बैंक, बाजार समितियाँ, पणन संस्थाएँ आदि वर्तमान प्रगत अवस्था को प्राप्त हो सके।

4. **अपने छात्रकाल से ही बापुसाहेब ने विकास आंदोलनों में योगदान देना आरंभ किया था। लोअर दुधना, जायकवाडी प्रकल्प, विष्णुपुरी प्रकल्प आदि से संबंधित आंदोलनों में उन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।**

5. औरंगाबाद का भगीरथ सहकारी शक्कर कारखाना, वेंगुर्ला का काजू प्रक्रिया उद्योग, चंद्रपुर का सुगंधा प्रक्रिया उद्योग आदि का विकास तथा पुनरुज्जीवन करने हेतु बापुसाहेब ने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

6. पेय जल योजना, विद्युतीकरण, सड़कों का निर्माण, वसमत का बस स्टैंड निर्माण, पूर्णा सहकारी शक्कर कारखाना आदि रचनालक कार्यों के माध्यम से जनसाधारण के कल्याण हेतु भरसक कार्य किया।

7. वसमत तहसील में आने वाले शिरड, जवळा आदि सर्कल में स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं का अभाव था। जब बापुसाहेब का नेतृत्व वसमत को मिला तो उन्होंने लोहारा को प्राथमिक उप आरोग्य केंद्र निर्माण किया।

8. मा.श्री. शंकररावजी चव्हाण केंद्रीय अर्थमंत्री, नियोजन मंत्री होने के कारण दिल्ली में उनका सहयोग प्रत्येक स्तर पर मिलता रहा। बापुसाहेब के संबंध सभी राज्यों के युवा नेताओं के साथ थे। दिल्ली में बहुत-से मंत्रालयों में उनके संबंध स्नेहपूर्ण थे। सेक्रेटरी, जॉईंट सेक्रेटरी आदि उनका सम्मान करते थे।

9. 'किसानों के संदर्भ में आस्था रखने वाला नेता' बापुसाहेब के संबंध में गौरवोद्गार सुभाष सूर्यवंशी जी ने कहे थे। (सुभाष सूर्यवंशी-प्रकल्प कक्ष, मराठवाडा विकास महामंडल (एम.डी.सी.) सुभाष जी सूर्यवंशी के ये वचन अक्षरशः सत्य हैं। उनका एक 'शास्ता' के रुप में कै. वसंतदादा जी के मंत्रीमंडल में किए कार्य तंत्रशिक्षा क्षेत्र बहुमूल्य साबित हुए हैं।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

10. **अमरावती जिले के पालकमंत्री के कार्यकाल में किए हुए रचनात्मक कार्य**

- 1 मई 1983 को स्थापित अमरावती विश्वविद्यालय (आज का संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय)
- अमरावती महानगर निगम (15 अगस्त 1983 को स्थापना)
- ऑफिस ऑफ इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस
- महसूल विभाग कार्यालय

इन मूलभूत कार्यों को पुर्ण किया।

11. बापूसाहेब को मिले मंत्रीपद का लाभ अनगिनत गावों को मिला है। पक्की सड़कें, बिजली, स्वास्थ्य केंद्र, पूलों का निर्माण, संजय गांधी निराधार योजना के अनगिनत गरीबों को मिले लाभ, आदि बातों का उल्लेख किया जा सकता है। परिणामतः विकास की प्रक्रिया से ये सारे गाँव जुड़ गए।
12. गणेशराव जी दुधगावकर जब मंत्री बनें तब पाथरी के इंदिरा गांधी नगर स्थित मस्जिद के विकास हेतु उन्होंने बहुत बड़ी मदत की। अपने मंत्री पद के कार्यकाल में बापुसाहेब ने येलदरी स्थित पाठशाला की जमीन की समस्या का हल करने के लिए भरसक प्रयास किए।
13. महाराष्ट्र की राजनीति में मंत्री पद की शपथ लेने के बाद हाजिरा गैस पाईप लाईन गुजरात से मराठवाड़ा प्रांत में किस तरह लानी है, इसकी ब्ल्यू प्रिंट अपनी जेब में रखने वाले पहले नेता अँड. गणेशराव जी दुधगावकर हैं। अपने मतदारसंघ में अनगिनत रचनात्मक कार्य उन्होंने किए।

हाजिरा गैस पाईप लाईन (मार्ग: हाजिरा-बुलढाणा-परभणी-नांदेड-नागपुर-पॅराद्वीप)

14. मराठवाडा डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेशन (एम.डी.सी.) की महत्त्वपूर्ण परियोजनाएँ (जो मराठवाडा प्रांत के विकास संबंध महत्त्वपूर्ण रही हैं।)

नई प्रायोगिकी मराठवाडा प्रांत में आती रहे, इसलिए महत्त्वपूर्ण

इंडो जर्मन टोल रुम (IGTR) तथा केंद्रीय परियोजना

Central Institute of Plastic Engineering Technology. (CIPET)

सेंटर फॉर इलेक्ट्रॉनिक्स डिजाइन ॲण्ड टेक्नॉलॉजी (CEDT) स्थापना 1974, सन2011 से **DESE** नामकरण।

महाराष्ट्र सेंटर फॉर इंटरप्रूनरशिप डेवलपमेंट (MCED)

15. ॲड. गणेशराव जी दुधगावकरने परभणी के गोरक्षण की जमीन बचाने के लिए सातत्यपूर्ण प्रयास किए। परिणामतः गोसंवर्धन परियोजना संस्था की मालमत्ता का संरक्षण हुआ।
16. संत रामदास स्वामी जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज के के संबंध में कहे हुए वचन याद आते हैं-''निश्चयाचा महामेरु। बहुजनांशी आधारु। अखंड स्थितीचा निर्धारु। शिव कल्याण राजा।'' ये सारे वचन अँड. गणेशरावजी

दुधगांवकर के संदर्भ में भी सार्थक साबित होते हैं।

17. रेशन दुकान में दो रुपये प्रति किलो गेहूँ, चावल दिए जाते हैं। जब बापुसाहेब सांसद थे उस समय यह बिल पास हुआ था। इस बिल पर संसद में कई बार विचार-विमर्श हुआ था। इस बिल के लिए AIIMS में भरती बापुसाहेब हॉस्पिटल से उठकर संसद भवन मतदान हेतु आये।
18. आसेगाव, ता.वसमत इस गाँव में तत्कालिन जिलाधिकारी श्रीमती सुधा भावे को भेजकर आर्थिक मदत प्रदान की।

- डिकसल-हासेगांव रोड का भूमिपूजन बापुसाहेब ने किया।
- राष्ट्रीय स्तर पर नाफेड सहकारी संस्था के संचालक के रुप में काम करते समय, गणेशराव जी ने कृषि उत्पादित माल पर प्रक्रिया उद्योग, प्याज की निर्यात, ऑईल मिल्स आदि से संबंधित राष्ट्रीय नीति निर्धारित करते समय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- जिंतूर स्थित Govt. Polytechnic College बापुसाहेब ने ही लाया। संगणक शिक्षा का महत्व एवं वर्तमान जीवन में बढ़ती आवश्यकता को पहचानकर मराठवाड़ा प्रांत में सर्वप्रथम ज्ञानोपासक शिक्षा संस्था में पदव्यूत्तर संगणक कोर्स (M.Sc. Computer) आरंभ किया। परभणी नगर निगम को महानगर निगम का स्तर प्राप्त हो, इस हेतु किए गए आंदोलन का नेतृत्व, ॲड.गणेशराव जी दुधगावकर ने किया। सन 2010 में शासकीय रुग्णालय के साथ शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय हो, यह मांग बापुसाहेब ने की थी।

- राष्ट्रीय स्तर पर 'ज्ञानोपासक' बीस वें स्थान पर है। अल्पावधि में ही 'ज्ञानोपासक' यह नाम शिक्षा क्षेत्र में विख्यात हुआ। ज्ञानोपासक में छात्र संसद का निर्माण गुणवत्ता के आधार पर किया जाता है। कक्षा में जिस छात्र को सर्वाधिक अंक मिलते हैं, उसे कक्षा का प्रतिनिधि बनाया जाता है। बापुसाहेब अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं। स्वयं भी वे अनुशासित जीवन जीते हैं। ज्ञानोपासक कॉपीमुक्त परीक्षा केंद्र है। प्रतिकूल परिस्थितियों में गुणवत्ता की खोज का यह सुपरिणाम है।
- 'कॉपीमुक्त परीक्षा केंद्र तथा गुणवत्ता के आधार पर छात्र संसद का निर्माण' इसी 'ज्ञानोपासक पैटर्न' को महाराष्ट्र शासन ने महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालयों के लिए अपनाया है। इसका श्रेय केवल बापुसाहेब के रचनात्मक दृष्टिकोण को जाता है।

सांसद के तौर पर रचनात्मक कार्य :-

- जब सांसद थे, तब बापुसाहेब ने अनेक सिंचन परियोजनाओं के लिए निधि की माँग संसद में की। लोअर दुधना, जायकवाडी परियोजना नहर, जिसमें पूर्णा तथा गंगाखेड का समावेश है। ये सभी परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं।
- परभणी में एफ.एम. रेडियो आरंभ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

- परभणी में केंद्रीय विद्यालय स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी प्रकार वसंतराव नाईक मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय में कपास, रेशम आदि से संबंधित अनुसंधान हेतु संसाधनों की उपलब्धि हेतु निधि उपलब्ध करके दिया।
- परभणी-मुदखेड रेल मार्ग दोतर्फा बनाना, पैठण-नांदेड (व्हाया-पोखर्णी) इस मार्ग के लिए प्रयत्नशील रहें।
- जब सांसद थे तब विकास प्रक्रिया गतिमान करने हेतु यातायात पर सहेतुक जोर दिया। पैठण, अंबड, घनसावंगी, पोखर्णी, नांदेड यह महामार्ग हो इस हेतू सतत प्रयत्नशील रहें। बापुसाहेब के प्रयासों कारण ही यह महामार्ग पूर्ण हो सका।
- वाटूर फाटा-परभणी रास्ते का काम पूर्ण करने हेतु शासन स्तर पर प्रयास किए।
- जायकवाडी दाई तथा बाई नहर पुनर्निर्मिती हेतु नया प्रस्ताव तैयार करने की मांग की।
- लोअर दुधना परियोजना ए.आई. बी.पी. में समाविष्ठ करने हेतु प्रयास किए। परिणामतः मंठा और परतूर की पानी पुरवठा योजना पूर्ण होने के लिए मदत मिली।
- बेलगाँव, निपाणी, कारवार यहाँ के मराठी लोगों के अधिकारों के लिए हुए धरना आंदोलन में उनका योगदान रहा। अल्पसंख्याक बंधुओं के लिए शादीखाना बनवाने हेतु निधि मंजूर कर लेना, **सिद्धेश्वर प्रकल्प वृद्धि हेतु राज्य तथा केंद्र शासन की ओर समर्थन करना, मराठवाड़ा प्रांत के विकास हेतु शासन नियुक्त 'केलकर समिती' को महत्वपूर्ण सूचनाएँ देना, मराठवाड़ा में हाजिरा से नांदेड़ गैस पाइप लाईन मंजूर हो, इस हेतु यथाशक्ति प्रयत्न तथा समर्थन किया।**
- परभणी-मनमाड तथा मुदखेड-परभणी इन रेल मार्गों को दोतर्फा बनाने के लिए बापुसाहेब ने भरसक प्रयास किए।
- जालना-खामगाव रेल मार्ग का सर्वेक्षण फिर से किया जाए, यह माँग बापुसाहेब ने संसद में सातत्यपूर्ण ढंग से की है।
- मॉडेल कॉलेज तथा केंद्रीय विद्यालय जिले में शुरु हो, इस हेतु प्रयास किए। इसीलिए जालना जिले के घनसावंगी में मॉडेल कॉलेज की स्थापना हुई।
- श्री.गणेशराव जी दुधगांवकर जब सांसद थे तब परभणी तथा पूर्णा में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना हो, महाराष्ट्र के 28 जिलों में CBSE पैटर्न क्रियान्वित करना चाहिए, यही उनकी इच्छा थी।
- अपने राजनीतिक जीवन में बापुसाहेब ने विधायक, मंत्री, सांसद, आदि के साथ-साथ अनेक पदों पर काम करते हुए जिम्मेदारी संभाली है। जब सांसद थे तब अन्न सुरक्षा विधेयक, भूसंपादन पुनर्वसन, महाराष्ट्र में पड़ा अकाल, धनगर समाज को अनुसूचित जाति में समाविष्ट करने हेतु प्रयास आदि विभिन्न समस्याओं की ओर शासन का ध्यान आकर्षित किया।
- एन.एच.222 को चौड़ा करना, केंद्रीय शिक्षण संस्था में आरक्षण दुरुस्ती विधेयक, रेल अर्थसंकल्प, किसान, मजदूर, दलित, वंचित लोगों के प्रश्न संसद में उन्होंने उपस्थित किए। सांसदिय आयुधों का उपयोग करके उन्होंने जनतांत्रिक मूल्यों का संवर्धन तथा उपयोजन किया।

- महाराष्ट्र विधानसभा में किसानों का कर्ज, बीज, खाद, कृषि औजार आदि प्रश्न उठाकर किसानों तथा कृषि मजदूरों का विश्वास संपादन किया।
- परभणी के अल्पसंख्यांक बांधवों के लिए शादीखाना निर्माण के लिए निधि मंजूर किया।
- बापुसाहेब पाँच वर्ष सर्वाधिक सक्रिय सांसद के रुप में सांसद कार्यरत रहें। संसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम उन्होंने अपने नाम पर किया । 'संसदपटू' के रुप में उन्हें गौरवान्वित किया गया। उन पाँच वर्षों में उन्होंने संसद में कुल 418 प्रश्न पूछे। उस समय सांसदों ने संसद में प्रश्न पूछने का औसत प्रमाण 300 था। अर्थात इसके डेढ़ गुना प्रश्न उन्होंने संसद में पूछे। इस प्रकार परभणी की जनता की आवाज को उन्होंने संसद में प्रतिध्वनित किया।
- परभणी के विकास कार्यों में बापुसाहेब का योगदान असाधारण रहा है। उन्होंने वसमत रोड राष्ट्रीय महामार्ग के चौडीकरण हेतु सफल समर्थन किया।

- मराठवाडा विश्वविद्यालय को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का नाम देना चाहिए, इस प्रकार का विचार-विमर्श चल रहा था। उस समय विश्वविद्यालय कार्यकारिणी की बैठक में सर्वप्रथम यह विषय बापुसाहेब ने रखा।
- मराठवाडा प्रांत के 45 आई. टी. आई., 45 तकनीकी हाईस्कूल्स- उदगीर तथा निलंगा के इंजीनियरिंग कॉलेजेस को आदरणीय बापुसाहेब ने प्रशासकीय अनुमति दे दी। उस समय के इस कार्य के द्वारा उन्होंने मराठवाडा प्रांत में तकनीकी शिक्षा की गंगा ही प्रवाहित कर दी।
- बापुसाहेब के शिक्षा क्षेत्र के इस योगदान के कारण ही मराठवाडा प्रांत के अनगिनत छात्र आज नोकरी करके आत्मनिर्भर हो गए हैं। आज ये युवा अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर विराजमान हैं।
- सन 1983 में ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल की स्थापना की। जिंतूर तथा परभणी में ज्ञानोपासक महाविद्यालय स्थापित किए। साथही ग्रामीण इलाकों में पाठशालाएँ प्रारंभ की। इस प्रकार शहरी तथा देहाती छात्रों के लिए गुणात्मक शिक्षा की व्यवस्था की। महाविद्यालय को आई. एस.ओ. नामांकन 2000 स्तर तथा स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय की ओर से दिया जाने वाला 2011-12 का शहरी विभाग का 'उत्तम महाविद्यालय पुरस्कार' प्राप्त होकर महाविद्यालय गौरवान्वित हुआ।
- **परभणी शहर में लुप्त हो रही शैक्षिक संस्कृति को ज्ञानोपासक महाविद्यालय ने पुनरुज्जीवित किया है। इसीलिए समूचे मराठवाड़ा प्रांत में 'ज्ञानोपासक' ख्यातिप्राप्त हुआ।**

जनसेवक दुधगांवकर जी का सपना पुरा हुआ...

सन 1984 का ज्ञानोपासक महाविद्यालय परभणी

सन 2022 का ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी
तिसरी बार नॅक 'अ' दर्जा प्राप्त

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- **बेरोजगार युवाओं की अहम् समस्या उन्होंने हल कर दी:** बापुसाहेब तंत्र शिक्षा मंत्री थे, इसलिए उन्होंने वसमत मतदारसंघ में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था की स्थापना की।
- जिंतूर तथा हिंगोली तहसील में पॉलिटेक्निक की स्थापना की। परिणामतः इन दो संस्थाओं में युवाओं को रोजगार मिला। साथ ही इस विभाग के छात्रों ने इन शिक्षा संस्थाओं में औद्योगिक प्रशिक्षण लिया तथा इन प्रशिक्षित युवाओं को औरंगाबाद तथा पूर्णा सहकारी शक्कर कारखाना में रोजगार मिला। आज यह काम उनकी आजीविका का साधन बन गया। अत: बापुसाहेब का यह कार्य वसमत तथा जिंतूर तहसील के निवासियों की चिरस्मृति में रहेगा।
- **शैक्षिक संस्थाओं को मदत करना, यह उनका स्थायी भाव है।** इसी वजह से शहागड स्थित स्वामी रामानंद शिक्षण प्रसारक मंडल संचालित प्रबोधनकार ठाकरे विद्यालय की इमारत का निर्माण सांसद निधि द्वारा करवाया।
- न्यायमूर्ति धर्माधिकारी, जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य जगद्गुरु निश्चलानंद सरस्वती आदि दिग्गज विभूतियों को सुनने का अवसर बापुसाहेब के कारण परभणी के निवासियों को प्राप्त हुआ।

- औरंगाबाद MIDC का Infrastructural Development करने में गणेशराव जी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। बापुसाहेब की ज्ञानसाधना की वृत्ति के कारण स्नातक शिक्षा पूर्ण होने के बाद उन्होंने एल.एल.बी. किया। कानून की शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने वकालत करना शुरु किया। इस व्यवसाय में उन्होंने काफी सफलता तथा कीर्ति प्राप्त की।
- अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त करके समीर भारत लौट आया है। अपनी बुद्धिमत्ता, ज्ञान तथा कौशल अपने देशवासियों के काम जाए, ऐसी उदात्त सोच समीर दुधगावकर की है। आदरणीय बापुसाहेब के मार्गदर्शन में समीर अपना मार्गक्रमण कर रहा है तथा संत तुकाराम के वचन- '**शुद्ध बीजापोटी फळे रसाळ गोमटी**' को सार्थक कर रहा है।
- सन 2001 से गुणवंत छात्रों के लिए 'रुपाली दुधगांवकर राष्ट्रीय पुरस्कार' आज तक सुचारु ढंग से वितरित किया जा रहा है।
- **समीर भाऊ के शब्दों में** - बापुसाहेब अपने प्रामाणिक प्रयत्नों के कारण मेरे सामने रोल मॉडेल हैं। उनसे बहुत कुछ सीखकर ही मैं अपने जीवन में कुछ अच्छा काम कर सका हूँ। राज्य शिखर संगठन का उपाध्यक्ष बनना अथवा उस पद पर कार्य करते हुए शिक्षा क्षेत्र के साथ जुड़ने का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य चेंबर ने करना चाहिए, यह धारणा रखकर काम किया।
- अततः सांसद बनने का अवसर श्री. बालासाहेब ठाकरे ने बापुसाहेब को प्रदान किया और उन्होंने राष्ट्रवादी काँग्रेस के भूतपूर्व प्रतिष्ठित मंत्री को पराभूत कर के गौरवशाली इतिहास अपने नाम पर लिख दिया।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

बापुसाहेब कि दादी

बापुसाहेब के पिताजी

एक समझदार जनसेवक

- मराठवाडा मुक्तिसंग्राम में अपना खून बहा देने वाला दुधगाव का क्षत्रीयकुलवंत शिंदेशाहीराऊत परिवार है। अँड गणेशराव जी दुधगांवकर के माता-पिता तथा परिवार एक प्रकार से ऊंचे दर्जे के स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतंत्रता सेनानियों को आर्थिक सहायता देकर आंदोलन सक्रिय रहने हेतु इस परिवार ने की हुई मदत के कारण इस परिवार का नामोल्लेख बुजुर्ग लोग बड़े ही सम्मान से करते हैं।
- मराठवाडा मुक्ति संग्राम तथा हैदराबाद मुक्ति संग्राम में जिन महान परिवारों ने त्याग किया उनमें दुधगांव का दुधगांवकर परिवार उल्लेखनीय है। परिवार कितना ही समृद्ध हो, तो भी उसमें अपनी विरासत तथा संस्कृति का संवर्धन करने की क्षमता होगी ही, ऐसा कहा नहीं जा सकता।

- उपेक्षित, वंचित, संसाधनहीन वर्ग के दुख तथा अभावों को समझने वाले, सामने वाले व्यक्ति के दुख तथा आवश्यकता को पहचानने वाले; नाम में ही 'गणेश' होने के कारण बापुसाहेब ने कभी भी किसी की जात-पात का, दूर का नजदीक का, शत्रू-मित्र ऐसा भेदभाव नहीं किया। आज तक के जीवन कार्यों से यह बात स्पष्ट अनुभव होती है।
- खेत में काम करने वाले लोगों को दुधगांवकर जी ने सम्मान कें साथ ऊँचे पदों पर विराजमान किया। उन्हें रोजी-रोटी के साधन दिए। उन्हें 'बड़ा' बना दिया। अपने आसपास के इलाके के लोगों को उन्होंने हमेशा ही मदत की है।
- बापुसाहेब के संबंध में एक विरोधी पक्ष नेता की पत्नी ने कहा था कि, गणेशराव जी और हमारे राजनीतिक संबंध भविष्य में ऐसे ही बने रहेंगे या नहीं; कहा नहीं जा सकता लेकिन उनका सदाचरण तथा उन्होंने दिए हुए सहयोग को मैं कभी भी भूल नहीं सकती।
- मा. बापुसाहेब स्वयं एक जमीनदार तथा संपन्न परिवार के होते हुए भी उन्होंने एक सामान्य परिवार की किंतु सुसंस्कारित परिवार को लडकी के साथ विवाह किया। कै. श्रीधरराव कदम साहेब उनके ससुर जी। बिना दहेज लिए उन्होंने यह विवाह किया था। उस समय यह आश्चर्य की बात थी।
- बापुसाहेब को किसी की प्रशंसा करनी होती थी, तो अनोखे शब्दों में करते थे। फ.मुं. शिंदे को वे लेखक कहकर संबोधित करते थे।
- फ. मुं. शिंदे तथा गणेशराव जी दुधगांवकर किताबों-कापियों को एक साथ बैठकर रॅपर लगाते थे। वास्तव में गणेशरावजी संपन्न परिवार से आए हुए थे। लेकिन उनके स्वभाव में अपनी अमीरी का कहीं पर भी अहंकार नहीं था। उनकी विनम्रता 'विद्या विनयेन शोभते' इस सुवचन को सार्थक करती है। फ. मुं. तथा गणेशरावजी के किस्से पानतावणे सर ने अपने अनोखे शब्दों में व्यक्त किए हैं। गणेशराव जी तथा पानतावणे सर के आपसी संबंध बडी आत्मीयता के थे।

शब्दांकन ''कर्मयोगी अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- अपने गाँव का निवासी व्यक्ति जो घाटी अस्पताल में ॲडमिट था; उसे लगातार पंद्रह दिनों तक समर्थ नगर से पैदल घाटी जाकर भोजन पहुँचाया। ऐसी बापुसाहेब की सेवाभावी वृत्ति रही है ।
- राष्ट्रीय स्तर पर बापुसाहेब जैसे युवा कार्यकर्ता हर जिले में निर्माण हुए। बापुसाहेब का युवा नेतृत्व ऊभर रहा था, फिर भी बुजुर्ग राजनेताओं के प्रति उनके मन में आदर भावना थी। छात्र जीवन से ही उन्हें राजनीति के प्रति आकर्षण था। बापुसाहेब की राजनीति विकासाभिमुख थी। उन्होंने स्वयंकेंद्री राजनीति कभी भी नहीं अपनाई।
- जनतांत्रिक मूल्यों पर बापुसाहेब का विश्वास है। इसी के फलस्वरुप उन्होंने पुणे, मुंबई आदि शहरों में मराठवाडा प्रांत के छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण किया। जिला परिषद, पंचायत समिति, मार्केट कमिटी तथा विभिन्न सहकारी परियोजनाओं का निर्माण उन्होंने किया।
- पाथरी तहसील के पाथरगव्हाण नामक गाँव में बापुसाहेब ने प्राथमिक आरोग्य केंद्र का निर्माण करवाया। शे.का.प. की जिला परिषद में सत्ता थी तो भी पाथरगव्हाण इस गाँव में प्राथमिक आरोग्य केंद्र का निर्माण हुआ।
- प्राचार्य रामदास डांगे इनके द्वारा किए गए ज्ञानेश्वरी ग्रंथ से संबंधित कार्य का गौरव करने का निश्चय किया गया। तत्कालिन गौरव समिती के अध्यक्ष शेषराव जी देशमुख थे। इस हेतु बहुत बड़ी रकम की आवश्यकता थी। उस समय बापुसाहेब ने पच्चीस हजार रुपयों की मदत सहजता से की थी।
- मंत्री पद प्राप्त होते ही लाल दीए की गाड़ी में जाते समय उन्हें व्यक्तिगत ठाँठ-बाँट की बजाय देहातों में रहने वाले गरीब लोगों के बच्चों की पढ़ाई हेतु महाविद्यालय की स्थापना करने का विचार आया। इसी का परिणाम उन्होंने परभणी तथा जिंतूर में महाविद्यालय शुरु किए और पाथरी, सेलू आदि तहसीलों में पाठशालाएँ शुरु कीं। आज इन पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों का भव्य रुप देखने के बाद बापुसाहेब की दूरदृष्टि का परिचय मिलता है। **छत्रपति शाहू महाराज के विचारों का साक्षात् कृतिशील अविष्कार अर्थात बापुसाहेब हैं।**
- कर्मवीर विठ्ठल रामजी शिंदे, कर्मवीर भाऊराव पाटील, कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड ऐसे दिग्गज कर्मवीर इस महाराष्ट्र भूमि में उत्पन्न हुए हैं। बापुसाहेब इसी परंपरा की अगली कड़ी हैं।

- 'अमेरिकन कॅलिफोर्निया बेव्हरेज बिअर' अपनी बियर की बोतल पर गणपती का लेबल लगाया था। यह हिंदू धर्म का अपमान है, यह सर्वप्रथम संसद में कहने का साहस बापूसाहेब ने किया था। किसानों को नुकसान भरपाई मिले इस हेतु उन्होंने यह मुद्दा संसद में उठाया था।
- बापुसाहेब धर्मनिरपेक्ष तथा पुरोगामी हैं। फुले-शाहू-आंबेडकर के विचारों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर होने के कारण अपने मागासवर्गीय, बौद्ध सहकारियों पर उनका प्रेम है, लेकिन उन्होंने ब्राह्मणों का कभी द्वेष नहीं किया।
- पुरोगामी वैचारिक भूमिका और वैचारिक अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य, इनके बापुसाहेब समर्थक हैं। कांग्रेस, राष्ट्रवादी तथा शिवसेना इस प्रकार पक्षीय सफर में उन्होंने पक्षीय वैचारिक प्रारुप सुरक्षित रखते हुए व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थन किया।
- बापुसाहेब का सुसंस्कृत व्यक्तित्व, लोगों की समस्याएँ हल करने की परोपकारी वृत्ति और समृद्ध पारिवारिक विरासत इन कारणों से वे सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में सफल हुए।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- **मंत्रालय स्तर पर काम करने की उनकी शैली अत्यधिक गतिशील थी। विभाग की ओर से आयी हुई फाईल तीसरे दिन कॅबिनेट की ओर भेज दी जाती थी। अपने विरोधियों को यथोचित उत्तर देकर वे उनका समाधान करते थे।**
- बापुसाहेब की खास स्वभावगत विशेषता यह थी कि वे सरकारी पैसा अनावश्यक कामों पर कभी भी खर्च नहीं करते थे।
- अनेक अधिकारियों तथा कर्मचारियों के तबादले उनकी सुविधानुसार किए जाते थे। **बापुसाहेब के लिए भ्रष्टाचार निषिद्ध था।**
- बापुसाहेब ने अपने एक मित्र के संबंध में कहा कि, ये मेरे मित्र हैं और कार्पोरेशन ने उन्हें अभ्यास कार्य हेतु शिकागो भेजना तय किया है। वे शिकागो पहुँचने ही चाहिए। उनके पी.ए. तथा पी.एस. ने दो दिनों में पासपोर्ट, व्हीसा, चलन आदि सबका प्रबंध किया। विदेश जाने के लिए मंत्रीमंडल की अनुमति लेनी पड़ती है। बापुसाहेब ने यह कार्योत्तर मान्यता सुधाकरराव जी नाईक से से ली। इस प्रकार मित्र को शिकागो भेज दिया।
- बापुसाहेब गलत काम हेतु किसी के भी सामने झुके नहीं। उन्होंने हमेशा सत्य का समर्थन किया। सूर्य को कोई हाथ लगाता नहीं, हिमालय को कोई बचाता नहीं। बापुसाहेब सत्य बोलते हैं। वे किसी के बाप को डरते नहीं। उन्होंने अपने जनसामान्य सहयोगियों को मदत की है, विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ दी हैं।
- समूचे महाराष्ट्र में रोजगार हमी योजना के कामों पर बापूसाहेब स्वयं मुआइना करने के लिए जाते थे। जहाँ पर भी उन्हें काम में अनियमितता दिखी, वहाँ उन्होंने अधिकारियों को दंडित किया। अधिकारियों को निलंबित किया।
- न किए हुए काम का श्रेय भी वर्तमान राजनेता स्वयं की ओर ले लेते हैं। ऐसे वर्तमान युग में बापुसाहेब जैसा चरित्रसंपन्न राजनेता मिलना दुर्लभ है। उनकी इसी चरित्रसंपन्नता के कारण ही आम लोगों ने उन्हें समर्थन दिया और वे विधायक, सांसद, मंत्री आदि सफलता के सोपान चढ़ सकें।
- बापुसाहेब ने परभणी जिला परिषद का भ्रष्टाचार जनता के सामने लाया। उन्होंने यह प्रश्न विधिमंडल में उपस्थित किया। परिणामस्वरुप संबंधित व्यक्ति को सजा मिली।
- बापुसाहेब कांग्रेस के राज्य उपाध्यक्ष थे फिर भी उन्होंने आपातकाल का कभी भी समर्थन नहीं किया। वे आपातकाल के विपरित अपने विचार व्यक्त करते थे। जब शिवसेना में थे, तो उन्होंने धार्मिक उत्पाद को कभी भी स्थान नहीं दिया। अपने सामाजिक, राजनीतिक मंतव्य वे निर्भयता से व्यक्त करते थे।
- जब बापुसाहेब वसमत में आए, तो उन्होंने बताया कि, मैं मुख्यमंत्री ए. आर. अंतुले जी से मिला हूँ और उन्हें इस घटना की विस्तार से जानकारी दी है। इस प्रकार घायल तथा मयत लोगों को बापुसाहेब के प्रयासों के कारण आर्थिक मदत मिल गई।
- अति वृष्टि के समय बापुसाहेब तत्कालिन मंत्री यशोदा बजाज उर्फ दीदी तथा तत्कालिन कलक्टर सौ. सुधा भावे को वसमत लेकर आए और अति वृष्टि हुए इलाके का मुआइना किया। वसमत तहसील में अतिवृष्टि के कारण अकाल पड़ा था तब वसमत तहसील के लिए तात्काल शासकीय मदत प्राप्त की थी। इस प्रकार उन्होंने जनसाधारण को अकाल से राहत दिलाई थी।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल द्वारा संचालित पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों में बहुजन समाज, अल्पसंख्यांक समाज तथा मागास प्रवर्ग के गुणवान युवक-युवतियों को अध्यापक तथा प्राध्यापक बनने का अवसर बापुसाहेब ने ही उपलब्ध करके दिया। किसी भी प्रकार का डोनेशन उन्होंने नहीं लिया। युवाओं को नौकरियाँ देते समय बापुसाहेब ने न जाति देखी, न धर्म देखा, न रिश्तेदारी देखी। गुणवत्ता और अर्हता देखकर ही उन्होंने युवाओं को नोकरी के अवसर प्रदान किए। गरीब, मागासवर्गीय, तथा एस.टी. प्रवर्ग के युवकों में जब उन्हें गुणवत्ता दिखी तो उनकी नियुक्ति खुला प्रवर्ग के भीतर भी कर दी। छत्रपति शाहू महाराज के आरक्षण नीति का प्रत्यक्ष अंमल बापुसाहेब ने किया। इसी तरह छत्रपति शाहू महाराज अपने संस्थान के मागासवर्गीय लोगों का सहारा बनकर रहते थे।
- सादगीपूर्ण जीवन, उच्च विचार, अहंकार का अभाव, शालिनता, विनयशीलता, सरलता, विद्वत्ता, परोपकार, न्यायप्रियता आदि अँड. गणेशराव जी की चारित्रिक विशेषताएँ हैं। सभी जाति-धर्म के लोग उनके मित्र हैं। सामाजिक समता, धर्मनिरपेक्षता तथा जनतंत्र ये मूल्य उन्होंने अपने जीवन में अपनाए और इन्हीं मूल्यों के सहारे उन्होंने जीवनयापन किया।
- बापुसाहेब के मित्रों ने कहा है, ''इतने अमीर होने के बावजूद भी उनकी सादगी, विनयशीलता, आडंबरहीनता, नेकी, मानवता आदि सद्गुण जनमानस को प्रभावित करते रहे हैं। उनकी वृत्ति एक खिलाड़ी की है। जीते तो घमंड नहीं, हारे तो हताशा-निराशा नहीं।''

- बापुसाहेब के मित्रों के शब्दों में ही, ''अरे देखो भाई शफी सहाब, **गणेशराव फरिश्ते जैसे लग रहे हैं,** नई, क्या बात है साहब! उनके घुंगराले लंबे-लंबे सर के बाल, मुछें बढी हुई दाढी, सफेद कुर्ता पायजामा, ओ आगे आगे और हम उनके पिछे-पिछे चले जा रहे है! **ऐसा लगता है जैसे मसिहा आगे चल रहा है और काफिला पिछे पिछे बढता जा रहा है।** वाह ! क्या खुब मंजर है।''
- बापुसाहेब जब सांसद थे, तो संसद में उन्होंने कृषि, शिक्षा, उद्योग आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने मतदार- संघ की समस्याएँ उन्होंने वहाँ उपस्थित की और उनका हल निकालने का प्रयास किया।
- चारधाम यात्रा को गए हुए 40 से 50 लोगों को प्राइवेट ट्रॅवल्स से दिल्ली के पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। यह समाचार तुरंत हयातनगर में पहुँचा। लोग रोने लगे, रिश्तेदार-नातेदार विलाप करने लगे। बापुसाहेब मंत्री थे। उन्होंने निर्देश देने पर अस्पताल में इन सभी घायलों का व्यवस्थित इलाज किया गया।
- परभणी-पाथरी रोड पर का एकरुखा गाँव का पोंगल त्यौहार पर हुआ वाद-विवाद बापुसाहेब ने शांततापूर्ण ढंग निपटाया।
- गणेशराव जी का साहस तथा अपनी मिट्टी के साथ उनकी निष्ठा सर्वपरिचित है। उनका लोगों के साथ बर्ताव आत्मीयतापूर्ण रहा है।
- कहते हैं कि मिट्टी में मिलने पर भी इत्र की महक जाती नहीं और तोड़ने पर भी हीरे की चमक कम होती नहीं। ईश्वर ने मित्र नामक अद्भुत रसायन बनाया है। - मन हलका करने के जब कोई नहीं होता तब 'मैं हूँ ना' ऐसा जो कहता है

शब्दांकन ''कर्मयोगी अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

वह सच्चा मित्र होता है। बापुसाहेब ऐसे ही मित्र हैं।

- डॉ. सौ. संध्याताई के व्यक्तित्व को विकसित होने का पूरा अवसर बापुसाहेब ने दिया। यह लक्ष्मीनारायण की ही जोड़ी है। डॉ. संध्याताई ने केवल अपनी घर-गृहस्थी ही नहीं सँभाली, बल्कि वे ज्ञानोपासक महाविद्यालय में प्राध्यापिका तथा प्राचार्या के रुप में भी सेवारत रही। इतना ही नहीं पोखर्णी जैसे छोटे-से गाँव में रहकर अपनी खेती का भी कारोबार संभाला। बापुसाहेब ने पाई हुई सफलता में सौ. संध्याताई का योगदान बहुत बड़ा है।

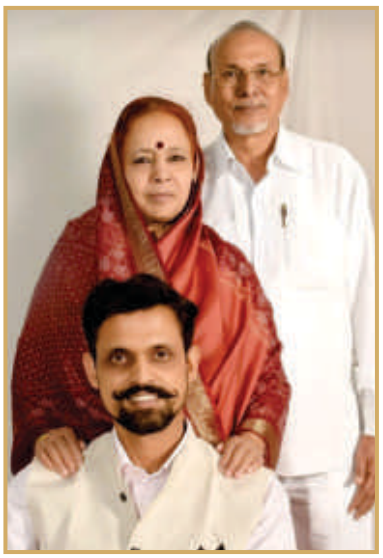

- बापुसाहेब की सहचारिणी सौ. संध्याताई विज्ञान की पीएच.डी. धारक हैं। 'विद्या विनयेन शोभते' इस वचन को डॉ. संध्याताई ने अपने आचरण के माध्यम से सार्थक कर दिया है। क्योंकि अपने ज्ञान, पद तथा संपन्नता का उन्हें बिल्कुल अहंकार नहीं है। उनके बच्चों में भी यही सादगी देखने को मिलती है। ''हम असामान्य है, विशेष है'' ऐसा आचरण उनका कभी भी नहीं रहा।
- साहित्यिक उपक्रमों में उनका योगदान प्रचुर रहा है। महाराष्ट्र राज्य के अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों से बापुसाहेब के आत्मीय संबंध रहे हैं।
- गरीब हैं, पर अपने विषय पर जिनका प्रभुत्व हैं, जो अपने विषय में निष्णात हैं, ऐसे प्रोफेसरों की नियुक्तियाँ गणेशराव जी ने अपने महाविद्यालयों तथा पाठशालाओं में की हैं। बापुसाहेब के लिए गुणवत्ता ही चुनाव की शर्त रही है। बापुसाहेब आर्थिक लोभ से कोसों दूर हैं, इसी बात का यह सबूत है। सामाजिक न्याय, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का ध्यान उन्हें हमेशा है। यह उनकी दृष्टि प्रशंसनीय है।
- बापुसाहेब के बड़े भाई लिंबाजीराव दुधगांवकर उर्फ दादा जिला परिषद के अध्यक्ष थे। वर्तमान युग में राजनीति अल्पावधी में अमीर बनने का साधन बन गई है। लेकिन बापुसाहेब ने राजनीति के माध्यम से अपनी स्वार्थ सिद्धि कभी भी नहीं की। वे पीढ़िजात संपन्न थे। उनके लिए पैसा मात्र साधन है; उसे उन्होंने साध्य कभी भी नहीं माना।
- ऐसा कहा जाता है कि Power corrupts and absolute power absolutely corrupts, ऐसा आचरण करने वाली कांग्रेस पार्टी का विचार न करते हुए इन दोनों भाइयों ने युवाओं के सम्मुख आदर्श का अनोखा उदाहरण रखा है। यह गौरव की बात है, अभिमान करने जैसी बात है, अनुकरणीय बात है।
- बापुसाहेब ने सोद्देश्य 'मेरिट ओरिएंटेड' शिक्षा के बजाय 'देहाती छात्रों के लिए शिक्षा' इस नीति को अपनाया। मराठवाडा प्रांत में 'संगणकशास्त्र' यह विषय जनसामान्य तक पहुँचे, इस हेतु ज्ञानोपासक महाविद्यालय में इस विषय का 'अध्ययन-अध्यापन' बापुसाहेब ने आरंभ किया।
- राजनीति, सामाजिक क्षेत्र तथा शिक्षा क्षेत्र में बापुसाहेब का व्यक्तित्व तथा आचरण पारदर्शी रहा है। इसी कारण बापुसाहेब का समाज में एक प्रभाव है। सभी के मन में उनके प्रति आदर भाव है। **जो भीतर है, वही बाहर है,** ऐसा शुद्ध अंत:करण बापुसाहेब का है।

शब्दांकन ''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

- बापुसाहेब जनपरिषद नामक संगठन के सदस्य थे। उन्होंने परभणी जिले में सन 2000 में समाजवादी जन परिषद नामक संगठन स्थापित किया था।
- एखाद व्यक्ति ध्येय से प्रेरित हुआ तो असंभव काम को भी संभव बना देती है। । यह वाक्य बापुसाहेब के संबंध में बिल्कुल सत्य है।
- जिंतूर तहसील के मैनापुरी स्थित एशिया का पहला 'सहकारी खाद कारखाना' बापुसाहेब के प्रयाओं की ही फलश्रुती है। इस कारखाने के उद्घाटन अवसर पर लिंबाजीराव दुधगांवकर ने कहा था कि खाद कारखाना निर्माण का काम बहुत बड़ा है। लेकिन मुझे विश्वास था कि यह निर्माण कार्य होने ही वाला है। क्योंकि गणेशराव जी ने कोई कार्य करने का निश्चय किया तो वे उस काम को पूर्ण करते ही हैं।

- बचपन से ही यह दृढनिश्चय गणेशराव जी में मैं देखते आ रहा हूँ। अत: खाद निर्मिती कारखाना पूर्ण होने वाला है, यह आमविश्वास मुझे था और यह आत्मविश्वास गणेशराव जी ने सच करके दिखाया है।
- जब बापुसाहेब सांसद थे तो उस समय विलासराव जी देशमुख महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय मंत्रीमंडल में थे। दोनों की राजनीतिक पार्टियाँ भिन्न-भिन्न थीं, फिर भी दोनों में परस्पर अपनापन तथा आस्था थी। बापुसाहेब को सांसद बनने का अवसर स्वयं बालासाहेब ठाकरे जी ने दिया था। बापुसाहेब के मन में भी बालासाहेब ठाकरे के प्रति असीम सम्मान था।
- परभणी, जालना लोकसभा चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते समय अँड. गणेशरावजी दुधगांवकर ने निधि देते समय कभी भी यह नहीं सोचा कि परभणी अपना है और जालना पराया है। घनसावंगी तथा परतुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में उन्होंने यथाशक्ति निधि प्रदान किया। इतना ही नहीं बल्कि जालना-नगरसोल डेमो एक्सप्रेस के लिए भी उन्होंने प्रयास किए।

'परस्पर विरोधी विचार तथा कार्यप्रणालियों के कारण भावी चुनावों में मतदाता निर्णायक रहेंगे, कुछ राजनीतिक पार्टियों के अस्तित्व का ही प्रश्न निर्माण होगा, यह भविष्यवाणी वर्तमान राजनीति के संबंध में बापुसाहेब ने पहले ही व्यक्त की थी।

शब्दांकन ''कर्मयोगी अॅड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब'' अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

बापुसाहेब के ही शब्दों में...

- लगभग 1965 को विद्यार्थी प्रतिनिधि का चुनाव लड़ा। यह चुनाव तत्कालिन युथ कांग्रेस के बॅनर में लड़ लिया। युक्रांद तथा शेकाप का प्रभाव छात्र आंदोलन पर था। आगे चलकर शिवाजी महाविद्यालय की छात्र संसद का अध्यक्ष बना।
- मैं औरंगाबाद के एम.पी. लॉ कॉलेज में पढ़ाई के लिए था, तभी मराठवाडा विकास आंदोलन शुरु किया। इस आंदोलन का नेतृत्व करते हुए मराठवाडा प्रांत के विकास हेतु सक्रिय रहा।
- मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद नामांतर के समय, मैं इस आंदोलन का प्रभावी नेतृत्व कर सका, इसका श्रेय मेरे परिवार को तथा हमारे परिवार के प्रमुख लिंबाजीराव दुधगांवकर को जाता है। महाराष्ट्र राज्य के टेक्निकल विभाग के मंत्री के रुप में मै कार्य कर पाया।

तत्कालिन केंद्रिय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे)
इनके साथ बापुसाहेब और साथी

- एक मंत्री के रुप में विना अनुदानित इंजीनियरिंग कॉलेज को मान्यता देने की नीति मैंने अपनाई।
- एल. एल. बी. को प्रवेश लिया। सन 1971-72 इस शैक्षिक वर्ष में मैं एम.पी. लॉ कॉलेज स्टुडंट कौंसिल का अध्यक्ष बना। एल.एल. बी. का अध्ययन करते समय ही लगभग 1972 को मराठवाडा प्रांत के विकास हेतु आंदोलन हुआ। मैं मराठवाडा स्टुडंट युनियन असोशिएशन' (मुसा) के अध्यक्ष के रुप में चुनकर आया।
- हमने हमारी माँगे प्रत्यक्ष मुख्यमंत्री के सामने रखीं। जायकवाडी प्रकल्प, अप्पर पैनगंगा, लोअर दुधना, उजनी परियोजना, विष्णुपुरी परियोजना, ब्रॉड गेज रेल, आकाशवाणी, हाईकोर्ट आदि माँगे उनमें प्रमुख थीं। महाराष्ट्र राज्य का भावी मुख्यमंत्री मराठवाडा प्रांत का ही होना चाहिए यह एक विशेष माँग हमने की थी ।
- उस समय मैं मराठवाडा पदवीधर मतदारसंघ से छात्र आंदोलन के माध्यम से चुनकर आया था। उस समय मैं मराठवाडा विश्वविद्यालय का एक्जीक्यूटिव काऊंसिल का सदस्य था।
- नामांतर आंदोलन के समर्थन में मराठवाड़ा प्रांत से मैं एकमात्र विधायक था।

गौरवग्रंथ सारांश

हिंदी/मराठी

उपर्युक्त शब्दांकन
''कर्मयोगी ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर उपाख्य बापुसाहेब''
अमृत महोत्सव गौरव ग्रंथ से लिया गया है।

प्रकाशित संपुर्ण गौरवग्रंथ

सांसद ॲड. गणेशरावजी दुधगांवकर के कार्यों का पूनर्विलोकन

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
1. हाजिरा गॅस पाईपलाईन - सन 1983 से महत्वपुर्ण पृष्ठपोषण (Followup) 15,000 करोड़ रु. निवेशवाले (सन 1988) खाद कारखाने रिफायनरी, प्लास्टिक उद्योग, घरेलू गॅस पाईपलाईन, कारखानों का जाल विस्तृत करनेवाले प्रकल्प - ऐसा वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी प्रकल्प अहवाल है।	हाजिरा-नांदेड-नागपूर गॅस पाईपलाईन निर्माण हेतू प्रस्ताव 1985 के काल में पेश किया। **मराठवाडा क्षेत्र और विदर्भ के औद्योगिक विकास और रोजगार निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण 25 लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्माण की क्षमता का प्रस्ताव**	➔ सूरत (गुजरात) से पॅराव्दिप (ओरीसा) तक 1550 कि.मी. लंबाई के गॅस पाईपलाईन प्रकल्प को मंजूरी प्राप्त। ➔ इस पाईपलाईन से महाराष्ट्र के धुलिया, नंदूरबार, जलगाँव, बुलढाणा, अकोला, अमरावती, वर्धा, नागपूर, भंडारा इन जिलों को मिलाया गया है। **GAIL कंपनी को गॅस पाईप लाईन जोडने का टेंडर प्राप्त है।** ➔ भविष्य में बुलढाणा से जालना, औरंगाबाद और परभणी को पाईपलाईन से जोडा जाए, अकोला से वाशिम, हिंगोली, नांदेड के लिए जोडा जाए, इसके लिए निरंतर केंद्र सरकार की ओर पृष्ठपोषण जारी है।
2. रेल		✻ यातायात में मुश्किल न आए इस हेतु चुडावा-वसमत इस बायपास रस्ते को मंजूर कराया.
3. केंद्र सरकार का फुड पार्क		✻ छ.संभाजीनगर (औरंगाबाद) के लिए मंजूर हुआ।
4. केंद्रिय विद्यालय	केंद्रिय विद्यालय संघठन इनकी ओर से परभणी और जालना जिला मुख्यालय में केंद्रिय विद्यालय का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है।	➔ केंद्रीय विद्या संघठन, नई दिल्ली की ओर से परभणी और जालना जिला स्थित कक्षा 1ली से 10वी तक CBSE पॅटर्न के अनुसार केंद्रिय विद्यालय प्रारंभ करने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए है। ➔ राज्य सरकार की ओर से भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात विद्यालय प्रारंभ किये जायेंगे। ➔ ग्रामीण विभागों के बुद्धिमान छात्रों के जीवन को विशिष्ठ पहचान देने में यह विद्यालय महत्त्वपूर्ण होंगे।

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
	सिंचाई (नहर)	
1) माजलगाव दाहिना (दाया) कालवा (नहर)	16 वर्षो से अपूर्ण कार्य था । 101 कि.मी तक कार्य पूर्ण लेकिन प्रकल्प अपूर्ण रहा ।	➔ निरंतर पृष्ठपोषन के कारण कि.मी. 101 से 114, 114 से 124 ओर 125 इस कार्य के आगे के कार्य को प्रशासकीय मंजुरी टेंडर प्रक्रिया पूर्ण । अब प्रत्यक्ष कार्य की प्रतिक्षा । ➔ कार्यारंभ आदेश प्राप्ति का निरंतर पृष्ठपोषणता जारी । ➔ यह प्रकल्प पूर्णतः अर्थात कि.मी-134 तक नहर पूरी होने के बाद **गंगाखेड तहसिल के 12000 हेक्टर भूमि सिंचाई के क्षेत्र में आ सकती है ।**
2) निम्न दुधना प्रकल्प	वेगवर्धित वेगसिंचाई कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित (AIBP)	➔ प्रस्तुत प्रकल्प के लिए AIBP के अंतर्गत इस वर्ष 45 करोड रु. का कोष (निधी) प्राप्त । प्रकल्प प्रभावित 'नान्सी' गॉव के पूर्नवसन (पूर्नस्थावित) होकर नहर काम को 99% पूर्णत्व प्राप्त हुआ । ➔ दायाँ नहर (कालवा) 47% तो बायाँ (डावा) नहर (कालवा) 92% पूर्ण हो गया हैं ।
3) करपरा मध्यम प्रकल्प	2009-10 विशेष दुरुस्ती प्रस्ताव शासन कि ओर मान्यता के लिए प्रस्तुत किया है ।	➔ प्रकल्प के विशेष बदलाव प्रस्ताव की किंमत रु.9.42 करोड को शासन की मंजूरी मिली । ➔ प्रकल्प के पहले 2 कि.मी. का विस्तारीकरण पूर्ण होकर 1041 हेक्टर भूमि सिंचाई क्षेत्र में आएगी ।

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
	रस्ता / मार्ग	
1) पैठण-अंबड-आष्टी-पाथरी-पोखर्णी-पुर्णा-नांदेड महामार्ग	राष्ट्रीय महामार्ग के लिए राज्यशासन की ओर प्रस्ताव की पेशकश। **कै.मा.ना. शंकरराव चव्हाण इनका जन्मस्थल पैठण (नाथसागर) से कर्मभूमि नांदेड राष्ट्रीय राजमार्ग का कार्यान्वयन लगभग पूरा है।**	➔ राष्ट्रीय महामार्ग मंजुरी के लिए उचित प्रतिकृत मार्ग की संपूर्ण जानकारी का नक्शा राज्य और केंद्र सरकार की ओर प्रस्तावित किया, आज रास्ता लगभग तैयार है।
2) बैतूल-अंजनगाव सुर्जी-अकोट-अकोला-रिसोड-सेनगाव-जिंतूर-परभणी-गंगाखेड-अंबाजोगाई-कळंब-धाराशिव	प्रस्तुत मार्ग को राष्ट्रीय महामार्ग का दर्जा दिया गया। इसके लिए 2010-11 में राज्य सरकार की ओर माँग की	➔ प्रस्तुत मार्ग का रुपांतर राष्ट्रीय महामार्ग में हो, इसके लिए उचित प्रतिकृति में राज्य और केंद्र सरकार की ओर प्रस्ताव की पेशकश और निरंतर पृष्ठपोषण किया गया।
3) वाटूर-जिंतूर-औंढा नागनाथ-नांदेड और औंढा नागनाथ-हिंगोली महामार्ग	इस महामार्ग कों BOT तत्व पर चतु:पद्रीकरण की निरंतर माँग की गई। 2012-13 में प्रस्तुत मार्ग को राज्य सरकार के BOT तत्व पर मंजुरी प्राप्त। टेंडर की घोषणा।	दृष्टिक्षेप (दृष्टिपात) में महामार्ग (वाटूर ते जिंतूर) ➔ चतु:पद्रीकरण - 61.21 कि.मी. ➔ कुल लंबाई - 144 कि.मी. में से ➔ सिमेंट कॉंक्रीटीकरण - 5.95 कि.मी. ➔ दृपद्रिकरण (दुपदरीकरण) - 77.24 कि.मी. ➔ योजना खर्च - रु. 686 करोड।
4) राष्ट्रीय महामार्ग -222	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, नई दिल्ली NHDP - IVA में प्रस्तावित 2010-11 प्रस्तावित करने में सफलता प्राप्त। कि.मी. 342-442 तक के मार्ग के कार्य का ठेका (अनुंबध) L&T कंपनी को दिया गया। **मानवत रोड में रेल उड्डाणपूल होगा।**	➔ राष्ट्रीय महामार्ग -222 (कि.मी. 442/00 ते 615/00) अर्थात मानवत रोड से महाराष्ट्र - आंध्र राज्य सीमा के इस मार्ग के दोपदरीकरण कार्य के बजट रु. 695 कोटी भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की ओर मंजुरी हेतु प्रस्तुत किया गया। ➔ इस वर्ष 2013-14 मध्ये परभणी उपमार्ग के साथ इस प्रकल्प की मान्यता (मंजूरी) हेतु निरंतर पृष्ठपोषण आरंभ किया। ➔ मानवत रोड रेल उड्डाणपूल तयार

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
5) राष्ट्रीय महामार्ग	राष्ट्रीय महामार्ग NH-222	प्रस्तावित कार्य के लिए प्राप्त कोष (पूँजी) ➔ **ढालेगाव से मानवत रोड** के लिए रु. 17.50 करोड । ➔ मानवत रोड से दंत महाविद्यालय रु. 5.50 करोड । ➔ दंत महाविद्यालय से रेल्वे स्टेशन परभणी रु. 5.50 करोड । ➔ श्री दत्तधाम से जिरो फाटा रु. 5.00 करोड ।
6) राष्ट्रीय महामार्ग-211 (पाचोड से शहागड) 30 कि.मी.	NHDP - IVB	➔ राष्ट्रीय महामार्ग-211 के चतुःपदरी करण कार्य को प्रत्यक्ष आरंभ । ➔ शहागड में रु. 60 करोड उड्डाणपूल प्रस्तावित ।
7) प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजना	टप्पा-5 में 12 कामों के प्रस्ताव के प्रतिक्रिया के अभाव में प्रलंबित पुलों का काम प्रधानमंत्री ग्रामसडक परियोजना के अंतर्गत परभणी जिले में 146 करोड रु. के कार्य प्रस्तावित है। प्रधानमंत्री ग्रामसडक परियोजना के अंतर्गत जालना जिलेमे 30 करोड रु के कार्य प्रस्तावित है ।	➔ भाग-5 में परिवधित बजट के साथ (रु 18 करोड) केंद्र सरकार की ओर मंजुरी हेतु प्रस्तुत किया गया । ➔ मार्ग के 19 पुलों के कार्य की मंजुरी टेडंर प्रक्रिया पूर्ण की । प्रत्यक्ष कार्य का प्रारंभ (14 करोड 40 लक्ष रु.) ➔ परभणी और जालना जिले में प्रस्तावित कार्यों का प्रारंभ हो इसके लिए प्रमुखता से पृष्ठपोषण किया गया ।
8) छत्रपती शिवाजी महाराज पुतले से श्री दत्तधाम (अपघात प्रवण क्षेत्र का रस्ता)	पिछले 12 वर्षो से कोई काम नहीं हुआ।	➔ 2010-11 शिवाजी नगर से खानापूर फाटा - साईड पट्टा - 1 करोड 20 लाख व्यय । ➔ 2012-13 साईड पट्टे के डामरीकरण - 1 करोड रू. व्यय (छत्रपती शिवाजी महाराज पुतला से वसंतराव नाईक पुतला) ➔ 2012-13 मार्ग दुभाजक ओंर विद्युत पोल का हटाये जाने के लिए कार्य संपन्न हुआ - 2 करोड 88 लक्ष रु. व्यय हुआ ।

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
	रेल	
1) परभणी - मुदखेड	परभणी-मुदखेड रेल मार्ग के विस्तारीकरण की माँग ।	➔ रेलमार्ग के दुतर्फा विस्तारीकरण को मंजुरी प्राप्त । प्रस्तावित 350 करोड रुपये के बजट की रेल बोर्ड की ओर पेशकश । प्रत्यक्ष राशि बढाकर कार्य के शुभारंभ के हेतु रेलमंत्रालय की ओर निरंतर पृष्ठपोषण ।
2) परभणी-मनमाड सिकंद्राबाद-मुदखेड आदिलाबाद-मुदखेड	इन सभी रेलमार्गों को दुतर्फा विस्तारीकरण करणे की माँग ।	➔ 2013 के रेल बजट में प्रस्तुत रेल मार्गों के दुतर्फा विस्तारीकरण कार्य के सर्वेक्षण को मंजुरी प्राप्त ।
3) पूर्णा (जं.) मे मल्टिस्पेशालिटी हॉस्पिटल	2010-11 के रेल बजट में मंजुरी	➔ पूर्णा (जं) में प्रस्तावित मल्टिस्पेशालिटी हॉस्पिटल के **प्रस्थापित प्रकल्प (योजना) में संम्मलिन** करने हेतु रेलमंत्रालय की मंजूरी । ➔ प्रस्तुत हॉस्पिटल के लिए केंद्रिय स्वास्थ मंत्रालय की ओर पृष्ठपोषण निरंतर जारी ।
4) चुडावा - बसमत उपमार्ग		➔ रेल यातायात में रुकावटे ना हो इसलिए चुडावा - बसमत उपमार्ग को मंजूरी प्रदान ।
5) परभणी (जं.) और पूर्णा (जं.)	परभणी (जं.) और पूर्णा (जं.) इन दो रेलस्थानको को 'आदर्श रेलस्थानक' की सूची में सम्मिलित होने के कार्य में 2010 में सफलता प्राप्त ।	➔ 'आदर्श रेल्वेस्थानक' सूचि मे सम्मिलित होने से दोनो रेलस्थानकों में कार्य का प्रारंभ । पूर्णा के बहुत से कार्य पूर्णत्व की ओर तो परभणी के प्लॅटफॉर्म विस्तारी करण वॉशेबल अॅप्रान ये कार्य प्रगती पर अग्रेसर । रेल स्थानक के बाहर सेर्क्युलेटिंग स्थान (एरीया) का कार्य संपन्न साथही नये पादचारीपूल का कार्य प्रगति पथ पर अग्रेसर (विकासाधिन)
6) गंगाखेड, मानवत रोड, परतूर, सेलू, मकृवि का उड्डाणपूल	गंगाखेड रेल उड्डाणपूल को मंजूरी (मान्यता)	➔ गंगाखेड स्थित रेल उड्डाणपूल को मंजुरी और कार्य का प्रारंभ । **2021 में पुल तैयार हुआ ।** ➔ मानवत रोड यहाँ के उड्डाणपूल को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की ओर से पुल तैयार ।

	इ.स. 2009	इ.स. 2013-14 / वर्तमान स्थिती
7) सेलू, मानवत रोड, परतूर, पोखर्णी (नृसिंह) और गंगाखेड रेल स्थानक	इन सभी रेलस्थानक कों का 2010-11 के आदर्श रेल स्थानक की सूचि में माँग के तहत सम्मिलित ।	➔ मानवतरोड रेलस्थानक का कार्य संपन्न हुआ। सेलू, परतूर, गंगाखेड और पोखर्णी (नृसिंह) यहाँ के रेलस्थानकों का कार्य भी विकास की ओर अग्रेसर ।
8) अकोला-खंडवा	अकोला-खंडवा रेलमार्ग विस्तार करणे की माँग	➔ अकोला से गांधी स्मारक रेलमार्ग विस्तारीकरण कार्य का प्रारंभ ।
9) रेल्वे आरक्षण केंद्र	जिंतूर, मंठा, सोनपेठ, घनसावंगी, पालम तहसिल डाक कार्यालय में रेल आरक्षण केंद्रों की माँग ।	➔ जिंतूर के डाक कार्यालय में रेल आरक्षण केंद्र का प्रारंभ । अन्य स्थानो पर केंद्र के क्रियान्वयन हेतु निरंतर पृष्ठपोषण जारी ।
10) नई रेलगाडिया आरंभ करने में सफलता ।		
11) परळी-बीड-नगर		➔ परली-बीड नगर इस रेलमार्ग के शिघ्र कार्यारंभ के लिए संसद में मुद्दा उठाया ।
अन्य विकास कार्य		
1) परभणी स्टेशन ऑफिस पोस्ट	परभणी और परतूर में नए डाक कार्यालय के ईमारत निर्माण हेतु केंद्र सरकार की ओर प्रस्ताव दाखिल किया ।	➔ परभणी और परतूर में नए डाक कार्यालय के निर्माण कार्य का प्रस्ताव शासन की ओर से स्वीकृत । 12 वी पंचवार्षिक परियोजना में सम्मिलित हुआ । ➔ परभणी के ईमारत निर्माण को इस वर्ष प्रारंभ होगा । तो परतूर के ईमारत का पृष्ठपोषण जारी है । ➔ प्रधानमंत्री मोदी द्वारा डिजीटल इंडिया योजना के लिए यह फायदेमंद होगा ।
2) एफ.एम. रेडिओ परभणी	2009 से निरंतर एफ.एम. केंद्र प्रारंभ होने हेतु पृष्ठपोषण	➔ परभणी आकाशवाणी केंद्र परिसर में एफ.एम. केंद्र के लिए आवश्यक सभी मुलभूत सुविधाएँ पूरी की गई । 102 MHz इस Frequency पर एफ.एम. रेडिओ आरंभ हुआ हैं ।

महाराष्ट्र के प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद श्री. गणेशराव दुधगांवकर इनके पचास साल के कर्तृत्व के सारे पहलुओं के लिए www.Dudhgaonkar.in/Ganeshrao वेबसाइट पर अवश्य भेंट दें ।

कुछ सम्माननीय साथिदारों की नजरों से बापूसाहेब...!

मराठवाडा के कर्मवीर : ॲड. गणेशराव दुधगांवकर (बापूसाहेब)

श्री. भिमराव हटकर
वरिष्ठ पत्रकार, नांदेड

''राष्ट्रीय औसत से लगभग डेढ़ गुना ज्यादा प्रश्न बापूसाहेब ने संसद सदन में पूछ कर जनता की आवाज को शासनकर्ताओं तक पहुंचाया।''

बापूसाहेब द्वारा सभागृह में उपस्थित किए हुए प्रश्न :

1. परभणी के वसंतराव नाईक कृषि विश्वविद्यालय में मेगा फूड पार्क निर्माण किया जाए। (दि.10-08-2010)
2. नए बन रहे भूसंपादन कानून 2011 में किसानों को उचित रकम मिलना तथा उनके आर्थिक हितों का संवर्धन किया जाए।
3. अकाल एवं अभाव की स्थिति की पृष्ठभूमि में किसानों को कम कीमत में बीज तथा खाद उपलब्ध कर दिया जाए। (दि.19-08-2010)
4. 2009 में हुई अतिवृष्टि से गोदावरी नदी में आई बाढ़ के कारण किसानों तथा अन्य पीड़ितों को आर्थिक मदद दी जाए। (दि. 09-12-2009)
5. नांदेड़ से पैठण यह राष्ट्रीय महामार्ग 220 किया जाए। (दि.20-12-2011)
6. परभणी जिले में से जाने वाला राष्ट्रीय महामार्ग क्रमांक 222 यह चौगुना किया जाए। (दि.22-08-2012)
7. मेहकर तहसील के लोणार झील को राष्ट्रीय पर्यटन का दर्जा देकर उसका विकास किया जाए।
8. राज्य के धनगर समाज को अनुसूचित जमाती में समाविष्ट करके उन्हें उस प्रवृत्ति की सभी सुविधाएं दी जाए। (दि.5-12-2012)
9. केंद्रीय शिक्षा संस्थान प्रवेश अंतर्गत आरक्षण दुरुस्ती विधेयक 2020 पर हुई चर्चा में सहभागी होकर आरक्षण के समर्थन में विचार व्यक्त किए। (दि.16-05-2012)
10. 2009 में हुई अतिवृष्टि तथा बाढ़ से उत्पन्न स्थिति से निर्माण डेंगू, मलेरिया, पीलिया, चिकनगुनिया आदि रोगों से त्रस्त जनता को केंद्र द्वारा वैद्यकीय सहायता पैकेज दिया जाए। (दि.30-11-2010)

बापुसाहेब ने संसद में पूछे हुए 418 प्रश्नों में से उपर्युक्त दस प्रश्न तथा उन प्रश्नों का स्वरुप देखें तो उन प्रश्नों से बापुसाहेब के स्वभावगत गुण, जैसे-सामाजिक उत्तरदायित्वता का एहसास, नैतिकता तथा विकासात्मक दृष्टि आदि दृष्टिगोचर होते हैं। संसद हो या विधानसभा; प्रश्न पूछना, बहस में योगदान देना आदि सांसदिय आयुधों का उपयोग बापुसाहेब ने जनसाधारण लोगों के प्रश्नों को अभिव्यक्ति देने के लिए किया है, यही बात स्पष्ट होती हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने वाले ॲड. गणेशराव दुधगांवकर

श्री. अशोक पाटील, भूतपूर्व मंत्री
केज जि.बीड

भूतपूर्व सांसद ॲड. गणेशरावजी दुधगांवकर नौ सितंबर 2019 को पचहत्तरवें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। ॲड. दुधगांवकर अत्यंत शांत, संयमी, बुद्धिमान, संवेदनशील, उत्तरदायित्व का एहसास रखने वाले व्यक्ति हैं। जनसाधारण का हित करने वाले, इसके साथ ही राजनीतिक वर्तुल के बाहर निकलकर सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सातत्यपूर्ण काम करने वाले नेता के रुप में ख्याति प्राप्त हैं। उद्योग, सहकार आदि विविध क्षेत्रों में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

ॲड. दुधगांवकर जी को छात्रावस्था से ही समाजसेवा में अभिरुचि थी। औरंगाबाद में विधि शिक्षा ग्रहण करते समय वे 'मराठवाडा विश्वविद्यालय संघ' इस संघटन से जुड़ गए। इस संघटन के माध्यम से उन्होंने अनेक छात्र आंदोलन करवाए। फिर वह परभणी का कृषि विश्वविद्यालय का आंदोलन हो या मराठवाड़ा विकास आंदोलन हो । इन आंदोलनों में उनका सहयोग उल्लेखनीय रहा है। संघटन का काम करते समय उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि की चाह नहीं रखी और न ही संघटन में किसी पद की अपेक्षा की।

ॲड. दुधगांवकर जी ने विधि की पढ़ाई पूर्ण करने उपरांत परभणी आकर सच्चे अर्थों में सामाजिक कार्य करना आरंभ किया। किसानों, मेहनतकश जनता के काम करते समय ही वे महाराष्ट्र पणन संघ के संचालक बने। यह अवसर मिलने के बाद उन्होंने सहकार क्षेत्र में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया। 1980 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पक्ष ने उन्हें वसमत चुनाव क्षेत्र से उम्मिदवारी प्रदान की। यहाँ बहुमत प्राप्त करके वे विधानसभा में कार्य करने लगे। उनके समाजाभिमुख कार्यों को देखकर ही स्व. वसंतदादा पाटील जी के मंत्रीमंडल में' तंत्रशिक्षण तथा रोजगार हमी योजना' विभाग के मंत्री के रुप में कार्य करने का उन्हें अवसर दिया गया। रोजगार गॅरंटी योजना के माध्यम से उन्होंने अनेक लोकोपयोगी योजनाएँ महाराष्ट्र में कार्यान्वित की। उनके इन कार्यों के परिणामस्वरुप ही उन्हें जिंतुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र की उमीदवारी मिली। यह चुनाव भी वे बहुमत से जीत गए।

विधानसभा में तथा राज्यस्तर पर नेतृत्व करते समय ॲड. दुधगांवकर जी ने युवाओं तथा अपने कार्यकर्ताओं को सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के अवसर प्रदान किए तथा उनमे नेतृत्व गुण विकसित करने के प्रयास किए। छात्रावस्था में ही ॲड. दुधगांवकर कहा करते थे कि सांसद के रुप में काम करने का अवसर मिला तो अच्छा होगा। और यह अवसर उन्हें 2005 के संसद चुनाव में मिला।

परभणी जिले के सांसद के रुप में काम करते समय उन्होंने अनेक लोकोपयोगी कार्य किए। केंद्र शासन की 'कोयला, खाण तथा पोलाद' इस स्थायी समिति का सदस्य बनने का सम्मान उन्हें मिला । **संसदीय कामकाज में सर्वाधिक उपस्थिति का विक्रम उन्होंने अपने नाम पर किया** । इसी समय 'अमेरिकन कॅलिफोर्निया बेव्हरीज बिअर' कंपनीने गणेश देवता का लेबल बोतल को लगाया था तब **यह हिंदू धर्म के अपमान का मुद्दा सर्वप्रथम लोकसभा में उन्होंने ही उपस्थित किया था ।** परभणी नगरपालिका को महानगरपालिका का दर्जा प्राप्त हो, इस हेतु किए गए धरना आंदोलन का नेतृत्व ॲड. दुधगांवकर जी ने ही किया था। महँगाई के खिलाफ किए गए 'जूते मारो' आंदोलन का नेतृत्व भी उन्होंने ही किया था। 2011 के शीतकालीन अधिवेशन में कपास खरेदी से संबंधित हुए धरना आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बेलगाँव, निपाणी, कारवार यहाँ के मराठी लोगों के अधिकारों के लिए हुए धरना आंदोलन में उनका योगदान रहा। अल्पसंख्याक बंधुओं के लिए शादीखाना बनवाने हेतु निधि मंजूर कर लेना, **सिद्धेश्वर प्रकल्प वृद्धि हेतु राज्य तथा केंद्र शासन की ओर समर्थन करना, मराठवाड़ा प्रांत के विकास हेतु शासन नियुक्त 'केलकर समिती' को महत्वपूर्ण सूचनाएँ देना, मराठवाड़ा में हाजिरा से नांदेड़ गैस पाइप लाईन मंजूर हो, इस हेतु यथाशक्ति प्रयत्न तथा समर्थन किया।**

इतना ही नहीं बल्कि परभणी के विकास कार्यों में उनका योगदान अतुलनीय रहा है। वसमत रोड़ राष्ट्रीय महामार्ग चौड़ा करने के काम का समर्थन उन्होंने ही किया था। इसके साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं के निर्माण तथा विकास में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। परभणी जिले में 'ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल' के माध्यम से अनेक पाठशालाएँ तथा महाविद्यालय शुरु किए। परिणामतः शहरी छात्रों के साथ-साथ देहाती छात्रों को भी पढ़ाई का अवसर मिला। उनके अनगिनत छात्र राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विविध क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

ॲड. दुधगांवकर जी को सहकार क्षेत्र में महाराष्ट्र राज्य को. ऑप. कपास उत्पादन समिती, इफको, नाफेड, कृषक भारती को. ऑप. जि. नई दिल्ली आदि के संचालक के रुप में काम करने का अवसर मिला। इसके साथ ही उन्होंने महाराष्ट्र राज्य पणन महासंघ के अध्यक्ष के रुप में भी काम किया। परभणी जिले के किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद मिले, इस हेतु उन्होंने जिंतूर में दाणेदार मिश्र खाद कारखाना शुरु किया था। सहकारी चिनी के कारखानों को वे समय-समय पर यथाशक्ति मदत करते रहे।

ॲड. दुधगांवकर जी अपने इतने प्रदीर्घ राजनीतिक, सामाजिक कार्यों के बावजूद भी आम जनता के साथ उनके संबंध अतिशय स्नेहपूर्ण हैं। लोगों की समस्याएँ हल करने के लिए वे आज भी प्रयत्नशील हैं। उनके और मेरे संबंध छात्रावस्था से ही युवा संघटन के माध्यम से रहे हैं। ॲड. दुधगांवकर जी का सहयोग तथा मदत हमेशा मिलती आई है और आज भी मिल रही है।

राज्य की राजनीति को प्रभावित करने वाले तथा नेतृत्व निश्चित करनेवाले नेता : ॲड.गणेशराव दुधगांवकर

- श्री.मुश्ताक अहमद
संपादक, उर्दू दैनिक मुकद्दस, औरंगाबाद
भूतपूर्व अध्यक्ष, शहर जिला राष्ट्रवादी काँग्रेस, औरंगाबाद

मराठवाड़ा की भूमि में जन्मे तथा राज्य की राजनीति में एक समय अपनी मुद्रा लगाने वाले भूतपूर्व मंत्री गणेशराव जी दुधगांवकर, इन्होंने अपनी उम्र के पचहत्तर वर्ष पूर्ण किए हैं, इस सुअवसर पर मन आनंदित हो रहा है। वे प्रदीर्घ समय तक राजनीति में सक्रिय रहे अनुभवी व्यक्ति हैं।

महाराष्ट्र राज्य की राजनीति की दिशा निश्चित करने में बापूसाहेब की अहम भूमिका रहती थी। बाबासाहेब भोसले जी को मुख्यमंत्री पद से हटाने का संकल्प बापूसाहेब ने किया। अंततः उसी वर्ष बाबासाहेब भोसले जी को मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा। आदिक मुख्यमंत्री नहीं बनें, वे उपमुख्यमंत्री बनाए गए और वसंतदादा पाटील जी मुख्यमंत्री बने थे। उस समय बापूसाहेब को मंत्रीमंडल में लिया गया। इस प्रकार राज्य की राजनीति में उनका प्रभाव था।

आज विगत दिनों को देखे तो उन्होंने किए हुए कार्यों की मुद्रा हमें स्पष्ट दिखती है। उन्होंने निर्माण की हुई संस्थाओं में अनगिनत लोगों को रोजगार मिला है। इसके साथही आज की पीढि को ज्ञान प्राप्ति का मार्ग भी मिला है। इसमें से अनेक पीढियों का निर्माण हुआ है। कई परिवार आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हुए हैं। खेती में समृद्धि आयी है। परभणी जिला मराठवाड़ा सर्वाधिक चिनी उत्पादवाला जिला है। इसका श्रेय गणेशराव जी दुधगांवकर को जाता है। तत्कालिन काँग्रेस की राजनीति में दुधगांवकर जी को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान था । **महाराष्ट्र का नेतृत्व निश्चित करने वाले गिने-चुने लोगों में से एक थे - बापूसाहेब ।**

1980 में औरंगाबाद विधानसभा चुनाव क्षेत्र से काँग्रेस की ओर से अब्दुल अजीम चुनकर आए थे। मैं उन्हीं का कार्यकर्ता था। उस चुनाव में दुधगांवकर वसमत चुनाव क्षेत्र से विजयी हुए थे। काँग्रेस पक्षश्रेष्ठी में दुधगांवकर जी का वजन था। राज्य की राजनीति में प्रभाव था। मैं और कुछ पदाधिकारी सभी मिलकर दुधगांवकर जी से मिले और हमने उनसे बिनती की कि अब्दुल अजीम जी को भी आपके साथ मंत्रीमंडल में काम करने का अवसर मिले । दुधगांवकरजी को 'बापूसाहेब' इस उपनाम से सभी लोग जानते-पहचानते हैं। उनकी एक विशेषता है कि उन्होंने एक बार वचन दिया तो काम हुआ ही समझो। **उन्होंने हमें आश्वासन दिया और उसे पूरा भी किया। परिणामत: अब्दुल अजीम जी बापूसाहेब के साथ मंत्री बनें।**

अल्पसंख्यांकों के हित को उन्होंने हमेशा ध्यान में रखा । अल्पसंख्यांक समुदाय के हित के लिए बापूसाहेब ने किया हुआ कार्य चिरस्मरणीय है।

1985 में परभणी जिले के सभी विधानसभा चुनावक्षेत्रों की उम्मीदवारी दुधगांवकर जी के कहने पर दी गई थीं। इस चुनाव में दुधगांवकर जी ने तकरीबन सभी उम्मीदवारों को चुनकर लाया था अत: काँग्रेस पक्ष में उनका वजन और भी बढ़ गया था।

राजनीति में युवा वर्ग को अवसर देना बापूसाहेब की विशेषता थी। युवाओं पर ही उनकी राजनीति निर्भर थी। वे एक साहसी नेता के रुप में प्रसिद्ध थे। राजनीति में रहकर उन्होंने कभी भी अपने स्वार्थ का विचार नहीं किया । सुरेश वरपुडकर को कांग्रेस ने विधानसभा में उम्मीदवारी नहीं दी थी। बापूसाहेब ने उम्मीदवारी दिलाने के काफी प्रयास किए थे। तब बापूसाहेब कांग्रेस के पदाधिकारी थे। बापूसाहेब ने तब सुरेश वरपुडकर को सिंगणापुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र में निर्दलिय प्रत्याशी के रुप में खड़ा किया और उन्हें चुनकर भी लाया। तब काँग्रेस पक्ष ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी की । राजनीति में रहकर उन्होंने अपने स्वार्थ का कभी भी विचार नहीं किया। **वे हमेशा कार्यकर्ताओं की मदत करते रहें।**

श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री बनाने में बापूसाहेब की भूमिका अहम थी। मराठवाडा प्रांत को मुख्यमंत्री पद मिले, इस हेतु पक्षीय स्तर पर यथाशक्ति समर्थन किया था। परिणामतः श्री. शंकररावजी चव्हाण को मुख्यमंत्री पद मिला।

बापूसाहेब जी ने अपने कार्यकाल में युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने अल्पसंख्याकों की समस्याएँ हल की। समूचा समाज, सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी पंथों को अपने साथ लेकर चलने वाला नेता अर्थात ॲड. गणेशरावजी दुधगांवकर हैं। अपनी आयु के पच्चहत्तर वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपलक्ष्य में उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।

कर्मयोगी : गणेशराव जी दुधगांवकर

श्री. साहेबराव लबडे (अवकाशप्राप्त सहायक पोलिस आयुक्त, पुणे)

सम्माननीय गणेशरावजी उपाख्य बापूसाहेब दुधगांवकर हमारे नजदीकी रिश्तेदार हैं । अतः बचपन से ही उनका परिचय था ही लेकिन उनका सही परिचय 1965-66 मे मैं श्री शिवाजी महाविद्यालय मैं पढ़ाई हेतु जाने के बाद ही हुआ । बापूसाहेब का ॲडमिशन सायंस को था और मेरा आर्टस् को । बापूसाहेब अपने सुस्वभाव के कारण विद्यार्थी प्रिय थे । उनका व्यक्तित्व प्रभावी था । अतः अन्य छात्र भी उनके साथ हमेशा रहते थे । उनका बोलना करारी तथा दृढ़संकल्प भरा था । साहसीवृत्ति तथा विवेकी निर्णयक्षमता उनमें होने के कारण छात्रों पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ा था । कॉलेज के जनरल सेक्रेटरी के चुनाव में बापूसाहेब उम्मीदवार थे उस समय मैं साए की तरह उनके साथ था । परिणामतः उनके स्वभाव के अनगिनत पहलू मुझे अनुभव हुए । उदार वृत्ती, शांत एवं विवेक स्वभाव, परिपक्व विचार एवं आवेशपूर्ण प्रस्तुति आदि बातों के कारण वे अपने विचार सामनेवाले व्यक्ति को समझा पाते थे । यह चुनाव उनके भावी जीवनरुपी फिल्म का जैसे ट्रेलर ही था । चुनाव भावनात्मक था । विज्ञापन भी कीए गये थे । विरोधियों ने बहुत कोशिश की लेकिन चुनाव जीते बापूसाहेब ही । इन्हीं अनुवभों से ही उनके भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

बापूसाहेबजी ने अपनी स्थानक की पढ़ाई श्री शिवाजी महाविद्यालय से ही पूर्ण की । लेकिन उनकी ज्ञान लालसा उन्हें आगे की शिक्षा के लिए प्रेरित कर रही थी । आगे चलकर उन्होंने एल.एल.बी. की उपाधि हासिल की । इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने पद्व्युत्तर शिक्षा ग्रहण करके एल.एल.एम. यह उपाधि भी हासिल की । जिस व्यवसाय का संबंध सीधे जनसाधारण से आता है वह वकालत का व्यवसाय आरंभ किया और उसमें उन्होंने सफलता भी प्राप्त की । इसके बाद राजनीति का क्षेत्र उन्हें जैसे आमंत्रण दे रहा था ।

बापूसाहेब के लिए राजनीति कोई नई बात नहीं थी । राजनीति उनके घर में ही थी । उनके बड़े भाई लिंबाजीराव उर्फ दादा जिला मध्यवर्ती बँक के अध्यक्ष थे । आज के समय में राजनीति अल्प समय में अमीर बनने का मार्ग समझा जाता है । लेकिन बापूसाहेब उस मार्ग के पथिक नहीं थे । वह खानदानी अमीर थे । पैसा कमाना यह उनके जीवन का उद्देश्य तब भी नहीं था और आज भी नहीं है । इसलिए राजनीति में आना उनके लिए सहज स्वाभाविक था । राजनीति में प्रवेश आसानी से हुआ लेकिन राजनीति में बने रहना और सफल होना यह बात व्यक्ति की गुणवत्ता लोकप्रियता तथा लोगों की समस्याएं हल करने की योग्यता पर निर्भर होती है । बापूसाहेब का व्यक्तित्व लोगों की समस्याएं हल करने कि तीव्र लालसा तथा सुसंस्कृत पारिवारिक विरासत आदि कारणों से बापूसाहेब इस क्षेत्र में भी सफल हुए । बापूसाहेब के स्वभाव की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है – उनकी निस्पृह वृत्ति । किसी से भी किसी भी प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं । ऐसे निस्वार्थ भाव से किए हुए कार्यों के कारण उन्हें आम जनता का समर्थन हमेशा मिलता रहा । चुनाव तक मतभेद हो सकते हैं, पर एक बार चुनकर आने के बाद सभी पक्षों के लोगों के काम करते थे । किए हुए कामों का श्रेय उन्हें मिले यह अपेक्षा उन्होंने नहीं कि । नहीं किए हुए कामों का श्रेय लेने का आज का जमाना है, ऐसे जमाने में बापूसाहेब जैसा राजनेता मिलना मुश्किल है । उनके इन स्वभावगत गुणों के कारण ही लोगों का समर्थन उन्हें हमेशा ही मिलता रहा है । इसलिए वह विधायक सांसद तथा मंत्री बन सके ।

"Politics is a dirty game", ऐसा कहा जाता है । इस बात का अनुभव भी बापूसाहेब को आया । उनकी उंगली पकड़कर जिन्होंने राजनीति में चलना सिखा, जिन पर बापूसाहेब ने विश्वास किया, उन्होंने ही बापूसाहेब को धोखा दिया । बापूसाहेबजी के स्वभाव में खुन्नस तथा बदला लेने की प्रवृत्ति ही न होने के कारण उन्होंने इन धोखा देनेवालों को भी माफ कर दिया और अपना कार्य अखंड रुप से शुरु रखा । सभी लोगों की बातें वे सुनते थे लेकिन जो सही है, वही कार्य करते थे । किसी के कहने से उन्होंने किसी को नजदीक नहीं लिया और किसी के कहने पर किसी को

दूर भी नहीं किया । वह हमेशा अपने कानों की तुलना में आंखों पर विश्वास करते थे । उसी तरह जीवन में आए हुए परिणामों के लिए उन्होंने कभी भी दूसरों को उत्तरदाई नहीं समझा । वैचारिक मतभेद होने के बाद उन्होंने पक्षांतर भी किया । वह मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठित पदों के अधिकारी बने, लेकिन सत्ता एवं अधिकारों का अहंकार उन्हें कभी नहीं रहा । पदों पर रहते समय भी अपने सहयोगीयों तथा कार्यकर्ताओं के साथ उनका आचरण हमेशा सम्मानजनक ही रहा । वह स्वयं एक प्रामाणिक कार्यकर्ता थे । इसलिए समाज में रहने वाले सर्व साधारण व्यक्ति से लेकर उच्च पदस्थ व्यक्ति तक सभी के प्रति उनके आचरण में साधर्म्य था ।

ऐसा कहते हैं कि, 'प्रत्येक पुरुष को जीवन में मिली हुई सफलता के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है।' बापूसाहेबजी की सहधर्मचारिणी सौ. संध्याताई इस बात का सर्वोत्तम उदाहरण है । बापूसाहेब जब राजनीति में सक्रिय थे तब परिवार की सभी जिम्मेदारियों को संध्याताई ने निभाया । बच्चों की पढ़ाई, सुसंस्कार तथा खेती इन जिम्मेदारियों को उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया । शिक्षा क्षेत्र की सर्वोच्च उपाधि हासिल करके उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया है । उसी तरह ज्ञानोपासक महाविद्यालय की प्राचार्या के रुप में सफलतापूर्वक कार्य करके एक उत्कृष्ट प्रशासक होने का परिचय भी दिया है । बापूसाहेब का साथ हर हालत में उन्होंने निभाया है । वैचारिक तथा भावनिक एकमत के कारण इस दांपत्य का परिवारिक तथा सांसारिक जीवन सफल रहा है ।

बेटा समीर तथा बेटी मधुरा यह दोनों गुणी, बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी संतति इस दांपत्य को मिली है । माता-पिता दोनों बुद्धिमान तथा कर्तृत्व संपन्न हैं । संत तुकाराम महाराज कि काव्यपंक्ति 'शुद्ध बीजापोटी फळे रसाळ गोमटी', के अनुसार दोनों बच्चे बुद्धिमान होने के कारण छात्रवृत्ति पाकर अध्ययन हेतु अमेरिका जाकर उच्चशिक्षित हुए । समीर अब भारत लौटकर अपनी बुद्धि तथा ज्ञान का उपयोग अपने समाज तथा राष्ट्र को हो, इस हेतु कार्यशील है । बापूसाहेब के मार्गदर्शन में वह भी अपना कार्य कर रहा है ।

बापूसाहेब एक कर्मयोगी हैं । श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग, जिसमें फल की आशा न करते हुए कर्म करने के लिए कहा गया है; वह बापूसाहेब जीवनभर जिये हैं । अत: 'कर्मयोगी' यह विशेषण उनके लिए बिल्कुल सार्थक है ।

निस्वार्थ, निष्कलंक जीवनयापन करनेवाले बापूसाहेब का मेरे जीवन में स्थान अनन्यसाधारण है । महाविद्यालयीन स्नेही, एक रिश्तेदार इसके परे जाकर उन्होंने समय-समय पर मेरी मदद की है तथा मार्गदर्शन भी किया है । पुलिस विभाग में जाने की प्रेरणा उन्होंने ही दी है । मेरे लिए वे जीवनभर दीपस्तंभ बनकर मार्गदर्शन करते रहें । उनके इस अमूल्य सहयोग तथा मार्गदर्शन का ऋण मुझ पर हमेशा रहेगा ।

बापूसाहेब तथा मैं आज भी स्नेही हैं । मित्रता की दृष्टि से वे मुझे बराबरी का मानते हैं, यह उनका बड़प्पन है, हृदय की उदारता है । इसके बावजूद भी बापूसाहेब के प्रति मेरे मन में हमेशा आदरभाव तथा सम्मान ही रहेगा । विभिन्न पारिवारिक समारोह में हमारी भेंट नित्य होती है । हम दोनों के परिवार एक दूसरे से सुपरिचित हैं । हमेशा एक-दूसरे के घर आना-जाना होता है । परभणी को जब भी जाता हूं तो बापूसाहेब के घर पर भी ठहरता हूं । दिलखुलास गप्पें होती हैं । हमारी दोस्ती को अब साठ साल पूरे हुए हैं । यह दोस्ती इसी तरह अंतिम साँस तक रहनेवाली है ।

बापूसाहेब के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूं । ईश्वर से यही प्रार्थना है कि, वे दीर्घायु बने, उनका भावी जीवन निरामय रहे और उनका मार्गदर्शन सबको नित्य मिलता रहे ।

श्रृणुयात शरद शत:

प्रबरवरम शरद शत:

जीवेत शरद शत:

भुयात शरद शत:

ज्ञानोपासक गणेशराव दुधगांवकर

- श्री. स. सो. खंडाळकर
विशेष प्रतिनिधी, लोकमत, औरंगाबाद

हाफ दाढ़ी... मूछोंवाला... उँची कदकाठी, बलशाली व्यक्तित्व के धनी, अर्थात - गणेशरावजी दुधगावंकर। मराठी फिल्म में यदि व्हिलन की भूमिका करने का अवसर मिला होता, तो इस भूमिका को गणेशरावजी ने न्याय दिया होता। यह हंसी-मजाक की बात छोड़ो, लेकिन **गणेशरावजी वास्तव में 'हीरो' है। विशेषत: शिक्षा क्षेत्र में उन्होंने दिए हुए योगदान को देखा जाए, तो वह शिक्षा महर्षि ही है। उनका सहकार क्षेत्र का योगदान देखा जाए, तो वह सहकार महर्षि ही है। गणेशराव दूधगांवकर ज्ञानोपासक है।** उन्होंने स्थापित की हुई पाठशालाएँ, महाविद्यालय तथा छात्रावासों के नाम पढ़ने पर उनको ज्ञानोपासक कहना सार्थक लगता है। अपनी प्राण प्रिय संस्थाओं को 'ज्ञानोपासक' यह नाम देना; यह सोद्देश की हुई कृति है।

'ज्ञानोपासक' इस शब्द में ही सब कुछ समाया हुआ है। यह शब्द ही अर्थपूर्ण है। 'ज्ञानोपासक' इस शब्द के सहारे गणेशरावजी दूधगांवकर जैसे लगता है - छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजश्री शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की शैक्षणिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। यह काम स्वागतार्ह ही है। इसके साथ ही यह काम अभिनंदनीय तथा अभिमानास्पद भी है। मुझे तो गणेशरावजी की महानता इसी कार्य में अनुभव होती है। इसी ज्ञानोपासक गणेशराव उर्फ बापूसाहेब का सही उपयोग समाज को होगा। उनके हाथों एक नहीं अनगिनत पीढ़ियों का निर्माण होगा। उनका यह कार्य बेजोड़ है। इसीलिए परभणी, जिंतूर, सेलू, मानवत, पाथरी आदि तहसीलों का इलाका ही नहीं बल्कि समूचा मराठवाडा गणेशराव दूधगांवकरजी के कर्तृत्व के गीत गाएगा।

मराठी के मुर्धन्य कवि प्रा. फ. मुं. शिंदे, प्रसिद्ध बांसुरीवादक दिवंगत प्रा. दत्ता चौगुले तथा जिन्हें शिक्षा की कोई परंपरा नहीं थी, लेकिन जो फ. मुं. और चौगुले इनकी उंगली पकड़कर उस समय एम.ए. की शिक्षा पूर्ण करनेवाले, धों. ज. गुरव, इनके मुंह से हमेशा गणेशराव दुधगांवकर का नाम सुनने को मिलता था। मदद करने की प्रवृत्तिवाले गणेशरावजी के अनेक किस्से सुनने को मिलते थे। ये सभी लोग जब पढ़ने हेतु परभणी में थे, तब इन्हें गणेशरावजी का सहयोग हमेशा मिलता रहा। यह लोग, की हुई इस मदद को भूलना भी चाहें तो नहीं भुला सकते। यह सच है कि, फाइव स्टार होटल में नहीं मिलेगी ऐसी धों.ज.गुरुव इन्होंने बनाई हुई सब्जी का जिक्र फ.मु. सर, डॉक्टर नागनाथ कोत्तापल्ले सर, प्रा. शफी सर, प्रा. अजीत दलवी सर तथा स्वयं गणेशराव दुधगांवकर आज भी करते हैं।

गणेशराव दूधगांवकर ने राजनीति में बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। दो बार विधायक, एक बार सांसद बने। यह सारा समय उन्होंने मराठवाड़ा का विकास करने में लगाया। देश का, महाराष्ट्र का सुसंस्कृत नेतृत्व यशवंतराव चव्हाण तथा वसंतदादा पाटील ये गणेशराव जी के आदर्श रहे हैं। वसंतदादा पाटील के मंत्रिमंडल में गणेशराव तंत्र शिक्षण, रोजगार हमी योजना तथा सेवा योजना विभाग के मंत्री बने। इस अवसर का पूरा लाभ गणेशराव ने उठाया। उन्होंने 45 आयटीआय, 45 टेक्निकल हायस्कूल, साथही उदगीर और निलंगा में अभियांत्रिकी महाविद्यालयों की स्थापना की। इन कार्यों से उनकी दूरदृष्टि का परिचय मिलता है। उनका शिक्षा पर असीम प्रेम रहा है। इस दृष्टि से देखने पर गणेशराव 'ज्ञानोपासक' ही सिद्ध होते हैं।

जब गणेशराव मंत्री थे, तब वे कई बार औरंगाबाद आए। शाहगंज के गांधी भवन में आयोजित कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में उनके भाषण सुनने के कई अवसर लोकमत प्रतिनिधि के रुप में मुझे मिले। बापूसाहेब मुझे

एक सहृदयी, सामाजिक उत्तरदायित्व का एहसास रखनेवाले राजनेता लगे ।

अमर्याद लोकसंग्रह करनेवाले गणेशराव सच्चे अर्थों में ज्ञानोपासक है । वह एक अच्छे इंसान हैं, एक अच्छे दोस्त हैं । यह बात उनका शत्रु भी स्वीकार करता है । इस ज्ञानोपासक को दीर्घायु मिले, उनके हाथों निरंतर सत्कर्म होते रहे यही हार्दिक मंगल कामना ।

स्वाभिमानी नेता : गणेशराव दुधगांवकर

श्री. गोपीकिशन दायमा

महाविद्यालयीन जीवन से ही ॲड. गणेशराव दूधगांवकर को राजनीति में रुचि रही है । उनका स्वभाव, स्मित हास्य तथा स्वाभिमान आदि बातों के कारण एक विशाल मित्र परिवार उनके साथ जुड़ गया । सच देखा जाए, तो स्वाभिमान रखकर राजनीति करना, बड़ा ही दुष्कर कार्य है । यह कठिन कार्य ॲड. गणेशराव दुधगांवकर बड़ी सहजता से करते हैं। यह बात उनके राजनीतिक कार्यों का अध्ययन करने के बाद अनुभव होती है ।

मेरे महाविद्यालयीन जीवन से लेकर आजतक के गणेशराव दूधगांवकर के कार्यों को मैंने बड़ी नजदीकी से देखा है । राजनीति में भी जितने बड़े हैं, उससे भी कई गुना बडे समाज कारण में है । **सामाजिक कार्य हो या राजनीति हो, दोनों सैद्धांतिक स्तर पर होने चाहिए; ऐसा उनका मत था । यह उनका बहुत बड़ा सद्‌गुण है । महाराष्ट्र की राजनीति में ॲड. गणेशराव दुधगांवकर का उल्लेख एक अद्‌वितीय राजनेता के रुप में होता है । दृढ़संकल्प के साथ में राजनीति करते हैं । इस कारण समाज उनके समर्थन में खड़ा हो जाता है ।** चुनाव सभा की व्यूहरचना वे कल्पकता के साथ करते हैं । सभा में दिया जाने वाला उनका भाषण जनसाधारण लोगों को सहजता से समझ में आता है । ॲड. गणेशराव दूधगांवकर उच्चविद्‌या विभूषित है, लेकिन खेत में हल चलाने वाले अशिक्षित किसान की भाषा को समझ लेने की अनोखी विशेषता उनमें देखने के लिए मिलती है।

महाराष्ट्र की राजनीति में **मंत्री पद की शपथ लेने के बाद हजीरा गैस पाइपलाइन मराठवाड़ा में किस तरह लानी है ? इसकी ब्लूप्रिंट उनकी जेब में रखने वाला ॲड. गणेशराव दूधगांवकर यह मराठवाड़ा का पहला नेता है ।**

ॲड. गणेशराव दुधगांवकर ने अपने चुनाव क्षेत्र में अनगिनत विकास कार्य किए । इन कार्यों की वजह से उनको चाहने वाला वर्ग उन्हें कभी भी भूल नहीं सकता । ज्ञानोपासक महाविद्‌यालय के छोटे-से पौधे को उन्होंने विशाल वटवृक्ष में रुपांतरित कर दिया ।

सच देखा जाए तो इस कार्य में उनकी सुविद्य पत्नी डॉ. संध्याताई दूधगांवकर का अमूल्य सहयोग मिला है। उन्होंने उनके परिवारों के पढ़े-लिखे युवाओं को नौकरियां देने का बहुत बड़ा सामाजिक कार्य किया है । यह बात उनमें विशेष है । राजनीति की इस आदर्श कार्यशैली को देखकर ही समाज ने ॲड. गणेशराव दूधगांवकर को 'बापूसाहेब' यह उपाधि प्रदान की है ।

''कर्मयोगी बापूसाहेब''

बाकी लेखों के लिए ''कर्मयोगी बापूसाहेब'' यह अमृत महोत्सवी गौरवग्रंथ जरुर पढें ।

गौरवग्रंथ

दैनंदिनी धारक के सपने और ध्येय

सपना क्र. 1

सपना क्र. 2

सपना क्र. 3

सपना क्र. 4

ध्येय क्र. 1

ध्येय क्र. 2

ध्येय क्र. 3

ध्येय क्र. 4

दैनंदिनी धारक को लिखने हेतु कुछ निर्णय तथा प्रकल्प

महत्त्वपूर्ण बातें

दिनविशेष

जनवरी

11 राजमाता जिजाऊ जयंती
12 स्वामी विवेकानंद जयंती
14 मकरसंक्राती
16 छत्रपती संभाजी महाराज राज्याभिषेक दिन (1681)
26 गणतंत्र दिन

फरवरी

11 श्रीमंत महाराज महादजी शिंदे (सिंधिया) द्वारा दिल्ली का तख्त काबीज (1771)
11 पंडित दिनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथी
12 श्रीमंत महाराज महादजी शिंदे (सिंधिया) पुण्यतिथी
15 संत सेवालाल महाराज जयंती
19 छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती (तारिख के अनुसार)

मार्च

10 महाराज श्रीमंत माधवराव सिंधीया जयंती
11 धर्मवीर छत्रपती संभाजी महाराज बलिदान दिन
11 सयाजीराजे गायकवाड (तिसरे) जयंती

अप्रैल

06 भाजपा स्थापना दिन
11 महात्मा ज्यो. फुले जयंती
14 भारतरत्न डॉ. बा. आंबेडकर जयंती
22 पंडित दि. उपाध्याय द्वारा एकात्म मानवतावाद संबोधन (1965)

मई

14 धर्मवीर छत्रपती संभाजी महाराज जयंती
28 स्वा. वि. दा. सावरकर जयंती
31 महाराणी अ. होळकर जयंती

जुन

26 महाराज जिवाजीराव सिंधीया जयंती

जुलाई

16 संत शिरोमणी सावता माळी पुण्यतिथी
16 महाराज जिवाजीराव सिंधीया पुण्यतिथी
29 संत भगवानबाबा जयंती

अगस्त

15 स्वातंत्र्य दिन

सितंबर

17 मराठवाडा मुक्ती संग्राम दिन
17 प्रधानमंत्री न. दा. मोदी जी जन्मदिन
25 पंडित दिनदयाल उपाध्याय जयंती
30 महाराज श्रीमंत माधवराव सिंधीया पुण्यतिथी

अक्टूबर

02 म.गांधी जयंती
02 ला. बहादुर शास्त्री जयंती

दिसंबर

06 भा. डॉ. आंबेडकर महापरिनिर्वाण दिन
12 स्व. लोकनेते गोपीनाथ मुंडे जयंती
25 नाताळ
25 भा. अटलबिहारी वाजपेयी जयंती

दिनविशेष –
ऐतिहासिक खास घटनाएँ, हर क्षेत्र के उच्च स्तरीय व्यक्तिओं के जन्मदिन और मृत्यु की जानकारी के लिए

www.Dudhgaonkar.in/Dayinfo.pdf

दिनविशेष

महत्वपुर्ण त्यौहारों कि तिथीयाँ
(जिनमें तिथी अनुसार हर साल तारिख में बदलाव होता हैं ।)

• होली	फाल्गुन पूर्णिमा
• गुड़ी पड़वा	चैत्र शुद्ध प्रतिपदा
• श्रीराम नवमी	चैत्र शुद्ध नवमी
(सहकारमहर्षि कै. लिंबाजीराव दुधगांवकर जन्मतिथी)	
• हनुमान जयंती	चैत्र पूर्णिमा
• रमजान ईद	
• बुद्धपौर्णिमा	वैशाखी पूर्णिमा
• आषाढी एकादशी	आषाढ शुद्ध एकादशी
• गुरुपौर्णिमा	आषाढ पौर्णिमा
• मोहरम	
• रक्षा बंधन	श्रावणी पूर्णिमा
• श्रीकृष्ण जयंती	श्रावण वद्य अष्टमी
• गोपाळकाला	श्रावण वद्य नवमी
• श्री गणेश चतुर्थी	भाद्रपद शुद्ध चतुर्थी
(तिथी के अनुसार बापूसाहेब इनका जन्मदिन)	
• ऋषिपंचमी	भाद्रपद शुद्ध पंचमी
• ज्येष्ठागौरी पूजन	भाद्रपद शुद्ध अष्टमी
• अनंत चतुर्दशी	भाद्रपद शुद्ध चतुर्दशी
• ईद-ए-मिलाद	
• घटस्थापना	भाद्रपद शुद्ध प्रतिपदा
• दशहरा (विजयादशमी)	अश्विन शुद्ध दशमी
• कोजागिरी पौर्णिमा	अश्विनी पूर्णिमा
• महर्षी वाल्मिकी जयंती	
• धनत्रयोदशी	अश्विन वद्य त्रयोदशी
• नरक चतुर्दशी	अश्विन वद्य चतुर्दशी
• लक्ष्मीपूजन	अश्विनी अमावस्या
• बलिप्रतिपदा (दिपावली पाडवा)	कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा
• भाऊबीज	कार्तिक शुद्ध द्वितीया
• गुरुनानक जयंती	
• श्रीमद्भगवद्गीता जयंती	मार्गशीर्ष शुद्ध एकादशी
• श्री दत्त जयंती	मार्गशीर्ष शुद्ध पूर्णिमा

हमारी संस्कृति के कुछ खास संदेश

www.Dudhgaonkar.in/SpiritualTeachings.pdf

भूतपूर्व मंत्री (महाराष्ट्र राज्य) तथा सांसद (परभणी लोकसभा)
ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) इनके सामाजिक, राजनीतिक कार्यों के सारांश

Ganeshrao.pdf

ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) अमृत महोत्सव ''सत्य आग्रह'' दैनंदिनी

Calender-Diary.pdf

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान साहब इनके करकमलों से दैनंदिनी 2022-23 का विमोचन संपन्न

इंसानियत को ध्यान में रखते हुए स्वयं के स्वभाव अनुसार कार्य करने हेतू
सामाजिक समरसता प्रकल्प

DSMs-SSP.pdf

सेकडों गावों को सहायता -
ज्ञानोपासक परिवार के शिक्षित लोगों का ग्राम सक्षमीकरण अभियान

DSMs-GramSakshamikaranAbhi

Since 2010, sharing the goods thoughts, Creating awareness for Indian traditions and values

SamirsFavThoughts.pdf

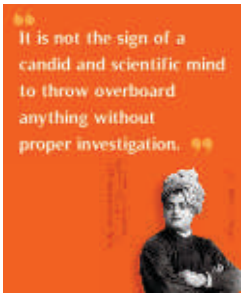

इंडस्ट्री की मांग – नौकरीयाँ दुगनी करने की संकल्पना

DoublingOfJobs-Concept.pdf

बहुआयामी समीर दुधगांवकर

परिचय पत्र हेतु

स्कॅन करें।

USAErSamirDudhgaonkar.pdf

अद्ययावत संकल्पनाओं की जानकारी के लिए

- Children Adopted for Education
- Doubling of Jobs (DoJ)- Partly Hindi
- Gram Sakshamikaran Abhiyan – GSA (Village Strengthening Campaign)
- Social sensitivity(for harmony) Project (SSP)
- Family Business Management

QRcodesList.pdf

For complete list of initiatives, scan the QR Code

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 16, Verse 21

"There are 3 gates leading to hell - **lust, anger and greed.** Every sane man should give these up, for they lead to the destruction of the self. (degradation of the soul)."

अध्याय १६, श्लोक २१

''**काम, क्रोध तथा लोभ** ये नरक में ले जाने वाले तीन द्वार हैं । हर एक विवेकी मनुष्य ने उनका त्याग करना चाहिए क्योंकि इन तीनों के कारण आत्मा का विनाश हो जाता है।'' (आत्मा की निकृष्टता वृद्धिंगत हो जाती है, आत्मा की अधोगति, अवनति होती है।)

अध्याय १६, श्लोक २१

''**काम, क्रोध आणि लोभ** ही नरकामध्ये नेणारी तीन व्दारे आहेत. प्रत्येक समंजस मनुष्याने त्यांचा त्याग केला पाहिजे कारण या तिन्हींमुळे आत्म्याचा विनाश होतो.

(आत्म्याच्या निकृष्टपणात वाढ होते, आत्म्याचा ऱ्हास होतो, अवनती होते).''

Chapter 16, Verse 23

"**He who discards** scriptural injunctions (shastra-vidhi) and acts according to his own whims **attains neither perfection, nor happiness, nor the supreme destination.**"

अध्याय १६, श्लोक २३

''**जो शास्त्र विधियों का त्याग करता है** और अपनी स्वयं की मर्जी अनुसार आचरण करता है, उसे प्रवीणता (सिद्धि), **सुख अथवा सर्वोच्च गंतव्यस्थान प्राप्त नहीं होता।**''

अध्याय १६, श्लोक २३

''**जो शास्त्रविधींना टाकून देतो** आणि आपल्या स्वतःच्या लहरीप्रमाणे वागतो, त्याला प्राविण्य (सिद्धी), **सुख, किंवा सर्वोच्च गंतव्यस्थान प्राप्त होत नाही.**''

Chapter 3, Verse 11

(129th Verse of total 700 Shrimad-Bhagavat-Gita Verses)

"The Gods, being pleased by sacrifices, will also please you, and thus, **by cooperation between men and Gods,** prosperity (the supreme benediction) will reign for all."

अध्याय ३, श्लोक ११

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से १२९वा श्लोक)

''यज्ञ से संतुष्ट देवी-देवता आपको भी संतुष्ट करेंगे, और इस तरह **मनुष्य और देवताओं के आपसी सहयोग से,** समृद्धि का राज्य (परम आशीर्वाद) हर जगह फैल जाएगा।''

अध्याय ३, श्लोक ११

(श्रीमद्भगवद्गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी १२९वा श्लोक)

''यज्ञाने (त्याग) संतुष्ट झालेल्या देवदेवता तुम्हालाही संतुष्ट करतील आणि याप्रकारे **मनुष्य आणि देवदेवता यांच्यामधील परस्पर सहयोगाने,** सर्वत्र समृद्धीचे (सर्वोच्च आशिर्वादाचे) साम्राज्य पसरेल.''

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 2, Verse 59

"The embodied soul may be restricted from sense enjoyment, though the taste for sense objects remains. But, **ceasing such engagements by experiencing a higher taste, he is fixed in consciousness."**

अध्याय २, श्लोक ५९

''देहधारी जीव को इंद्रिय उपभोगों से निवृत्त होने पर भी उसकी इंद्रियों से संबंधित आसक्ति बनी रहती है । लेकिन यदि यह इंद्रियों के कारण विद्यमान आसक्ति प्रतिबंधित कर देने पर; **उस मिठास से भी श्रेष्ठतम रस की मिठास का अनुभव लेकर, देहधारी जीवात्मा चेतना में स्थिर हो सकती है।**''

अध्याय २, श्लोक ५९

''देहधारी जीवात्मा जरी इंद्रियोपभोगापासून निवृत्त झाला तरी त्याची इंद्रियविषयांबद्दलची गोडी राहते; परंतु अशी इंद्रियांमुळे असणारी आवड थांबविल्यास, **त्या गोडीपेक्षा उच्चतर गोड रसाचा अनुभव घेऊन देहधारी जीवात्मा चेतनेमध्ये स्थिर होतो.**''

Chapter 2, Verse 64

"But a person free from all attachment and aversion and able to control his senses through **regulative principles of freedom** can obtain the complete mercy of the God."

अध्याय २, श्लोक ६४

''लेकिन आसक्ति तथा अनासक्ति इन दोनों से मुक्त रहने वाला और **स्वतंत्रता के नियामक तत्वों के अनुसार** इंद्रियों को नियंत्रित करने में समर्थ मनुष्य ईश्वर की पूर्ण कृपा प्राप्त कर सकता है।''

अध्याय २, श्लोक ६४

''पण आसक्ती आणि अनासक्ती (एखादी गोष्ट नकोशी वाटणे) यापासून मुक्त असणारा आणि **स्वातंत्र्याच्या नियामक तत्त्वांनुसार** इंद्रियांना नियंत्रित करण्यामध्ये समर्थ असणारा मनुष्य भगवंतांची पूर्ण कृपा प्राप्त करु शकतो.''

Chapter 2, Verse 66

"One who is not connected with the Supreme can have neither intelligence nor emotions about Lord, without which there is no possibility of peace. **And how can there be any happiness without peace?"**

अध्याय २, श्लोक ६६

''**जो ईश्वर से जुडा हुआ नहीं है** उसके पास बुद्धि नहीं होती अथवा ईश्वर के प्रति श्रद्धा नहीं होती; इनके बिना शांती मिलने की संभावना ही नहीं है। **और शांति के अभाव में सुख की प्राप्ति कैसे हो सकेगी?**''

अध्याय २, श्लोक ६६

''**जो भगवंताशी जुडलेला नाही** त्याच्याकडे बुद्धी नसते किंवा भगवंताविषयी भावना पण नसतात; ज्या गोष्टींशिवाय शांती प्राप्त होण्याची शक्यताच नाही. **आणि शांतीवाचून सुखप्राप्ती कशी होऊ शकेल?**''

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 18, Verse 66

"Abandon all varieties of religion and just surrender unto Me. I shall deliver you from all sinful reactions. Do not fear."

अध्याय १८, श्लोक ६६

''सभी प्रकार के धर्मों का त्याग कर और तुरंत मेरी शरण में आ। मैं तुझे सभी पापों (किए हुए कर्मों के बुरे परिणामों) से मुक्त करुँगा। तू भयग्रस्त मत हो।''

अध्याय १८, श्लोक ६६

''सर्व प्रकारच्या धर्माचा त्याग कर आणि फक्त मला शरण येवून जा. मी तुला सर्व पापांपासून (केलेल्या कर्मांच्या वाईट परिणामांपासून) मुक्त करीन. तू भयभीत होऊ नकोस.''

Chapter 18, Verse 68 and 69

(690th Verse of total 700 Shrimad-Bhagavat-Gita Verses)

"**For one who explains this supreme confidential secret** to the devotees, pure devotional service is guaranteed, and at the end he will come back to Me.

There is no person (servant) in this world more dear to Me than he, **nor will there ever be one more dear.**"

अध्याय १८, श्लोक ६८-६९

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से ६९०वा श्लोक)

''**भक्तों को यह सर्वोच्च रहस्य जो मनुष्य बताएगा** उसे निश्चित रुप से शुद्ध भक्तिभाव प्राप्त होगा और अंत में वह मेरी ओर (ईश्वर की ओर) लौटेगा। ऐसा करने वाले से अधिक प्रिय ऐसा कोई भी सेवक इस संसार में नहीं होगा तथा **उसकी तुलना में मुझे अधिक प्रिय ऐसा कभी कोई होगा भी नहीं।** ''

अध्याय १८, श्लोक ६८-६९

(श्रीमद्भगवद्गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी ६९०वा श्लोक)

''**भक्तांना हे परम रहस्य जो मनुष्य सांगेल** त्याला निश्चितपणे शुध्द भक्तीभाव प्राप्त होईल व अखेरीस तो माझ्याकडे (परमेश्वराकडे) परत येईल. त्याच्यापेक्षा (असे करणाऱ्यापेक्षा) मला (परमेश्वरासाठी) अधिक प्रिय असा कोणीही सेवक या जगामध्ये नसेल, **तसेच त्याच्यापेक्षा अधिक प्रिय असा कधी कोणी होणारही नाही.**''

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

(अमेरीका से पद्व्यूत्तर, सन २००२ से श्रीमद्भगवद्गीता के अभ्यासक समीर गणेशराव दुधगांवकर इनकी टीम द्वारा बडी सजगता से हिंदी भाषा में अनुवादित किए गए श्लोक)

Chapter 16 Verse 1 to 3
The God said :
"fearlessness; purification of one's existence in cultivation of spiritual knowledge; charity; **self-control;** performance of sacrifice; study (swadhyaya); **austerity (harsh discipline);** simplicity; nonviolence; truthfulness; freedom from anger; renunciation (tyag); tranquillity; **aversion to fault-finding;** mercy (daya-compassion) for all living entities; freedom from covetousness; gentleness; modesty; steady determination; **vigor (tej);** forgiveness; fortitude; **cleanliness;** and freedom from envy (adroha) and from the expectation of honor - **these transcendental qualities, O son of Bharata, belong to godly men born into (endowed with) divine nature."**

अध्याय १६, श्लोक १-३
श्री भगवान ने कहा
''निर्भयता, आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाते हुए स्वशुद्धि, ज्ञान, दान, यज्ञकर्म, **आत्मसंयम,** स्वअध्ययन, **कठोर अनुशासन** (तपस्या), सादगी, अहिंसा, सच्चापन, क्रोध से मुक्ति, त्याग, शांति, **त्रुटियाँ खोजने का तिरस्कार,** सभी सजीवों के प्रति दया, लोभ का अभाव, सौम्यता, विनयशीलता, दृढ संकल्प, **उत्साह (तेज),** क्षमा, धैर्य, **स्वच्छता** और
द्वेष तथा सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति -
ये सभी दैवी गुण, हे भारत, दैवी स्वभाव के मनुष्यों में विद्यमान होते हैं।''

अध्याय १६, श्लोक १-३
श्रीभगवान म्हणाले,
''निर्भयपणा, आध्यात्मिक ज्ञानाने स्वशुद्धी, दान, **आत्मसंयम,** यज्ञकर्म,
स्वअध्ययन, **कठोर शिस्तबद्धता** (तपस्या), साधेपणा, अहिंसा,
खरेपणा, क्रोधापासून मुक्तता, त्याग, शांतपणा, **चुका शोधण्याचा तिटकारा,** जीव असणाऱ्या सगळ्यांसाठी दया, लोभ नसणे, सौम्यता, विनयशीलपणा, दृढ निश्चय, **उत्साह,** क्षमा, धैर्य, **स्वच्छता** आणि
व्देष व सन्मानाच्या अभिलाषेपासून मुक्ती -
हे सर्व दैवी गुण, हे भरता, दैवी स्वभावाच्या मनुष्यांमध्ये आढळतात!''

Chapter 16, Verse 4
"Pride, arrogance, conceit (abhiman), anger (krodh), harshness (parushya) and ignorance (aghyanam) – **these qualities belong to those of demonic nature (asuri), O son of Partha."**

अध्याय १६, श्लोक ४
''हे पार्थ; अहंकार, घमंड, दांभिकता, क्रोध (गुस्सा), निष्ठुरता और अज्ञान-
ये असुरी (राक्षस) प्रकृति के लोगों के गुण हैं। ''

अध्याय १६, श्लोक ४
''हे पार्था; दंभपणा, उर्मटपणा, अभिमान, राग, निष्ठुरपणा आणि अज्ञान -
हे असुरी (राक्षसी) प्रकृतीच्या लोकांचे गुण आहेत.''

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

महिना, सन 20

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सो म			
मं ग ल			
बु ध			
गु रु			
शु क्र			
श नि			
र वि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			
शुक्र			
शनि			
रवि			

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

सोम			
मंगल			
बुध			
गुरु			टिप्पणियां
शुक्र			
शनि			
रवि			ग्राम सक्षमीकरण अभियान (GSA) परभणी टिम को आपके कार्य में मदत करने का अवसर अवश्य दें । **www.Dudhgaonkar.in/GSA**

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

दृष्टिक्षेप - 2024

वार	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
सोम	1			1		
मंगल	2			2		
बुध	3			3	1	
गुरु	4	1		4	2	
शुक्र	5	2	1	5	3	
शनि	6	3	2	6	4	1
रवि	7	4	3	7	5	2
सोम	8	5	4	8	6	3
मंगल	9	6	5	9	7	4
बुध	10	7	6	10	8	5
गुरु	11	8	7	11	9	6
शुक्र	12	9	8	12	10	7
शनि	13	10	9	13	11	8
रवि	14	11	10	14	12	9
सोम	15	12	11	15	13	10
मंगल	16	13	12	16	14	11
बुध	17	14	13	17	15	12
गुरु	18	15	14	18	16	13
शुक्र	19	16	15	19	17	14
शनि	20	17	16	20	18	15
रवि	21	18	17	21	19	16
सोम	22	19	18	22	20	17
मंगल	23	20	19	23	21	18
बुध	24	21	20	24	22	19
गुरु	25	22	21	25	23	20
शुक्र	26	23	22	26	24	21
शनि	27	24	23	27	25	22
रवि	28	25	24	28	26	23
सोम	29	26	25	29	27	24
मंगल	30	27	26	30	28	25
बुध	31	28	27		29	26
गुरु		29	28		30	27
शुक्र			29		31	28
शनि			30			29
रवि			31			30
सोम						
मंगल						

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

दृष्टिक्षेप - 2024

जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टुबर	नवंबर	दिसंबर	वार
1						सोम
2			1			मंगल
3			2			बुध
4	1		3			गुरु
5	2		4	1		शुक्र
6	3		5	2		शनि
7	4	1	6	3	1	**रवि**
8	5	2	7	4	2	सोम
9	6	3	8	5	3	मंगल
10	7	4	9	6	4	बुध
11	8	5	10	7	5	गुरु
12	9	6	11	8	6	शुक्र
13	10	7	12	9	7	शनि
14	11	8	13	10	8	**रवि**
15	12	9	14	11	9	सोम
16	13	10	15	12	10	मंगल
17	14	11	16	13	11	बुध
18	15	12	17	14	12	गुरु
19	16	13	18	15	13	शुक्र
20	17	14	19	16	14	शनि
21	18	15	20	17	15	**रवि**
22	19	16	21	18	16	सोम
23	20	17	22	19	17	मंगल
24	21	18	23	20	18	बुध
25	22	19	24	21	19	गुरु
26	23	20	25	22	20	शुक्र
27	24	21	26	23	21	शनि
28	25	22	27	24	22	**रवि**
29	26	23	28	25	23	सोम
30	27	24	29	26	24	मंगल
31	28	25	30	27	25	बुध
	29	26	31	28	26	गुरु
	30	27		29	27	शुक्र
	31	28		30	28	शनि
		29			29	**रवि**
		30			30	सोम
					31	मंगल

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

दृष्टिक्षेप - 2025

वार	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
सोम						
मंगल				1		
बुध	1			2		
गुरु	2			3	1	
शुक्र	3			4	2	
शनि	4	1	1	5	3	
रवि	5	2	2	6	4	1
सोम	6	3	3	7	5	2
मंगल	7	4	4	8	6	3
बुध	8	5	5	9	7	4
गुरु	9	6	6	10	8	5
शुक्र	10	7	7	11	9	6
शनि	11	8	8	12	10	7
रवि	12	9	9	13	11	8
सोम	13	10	10	14	12	9
मंगल	14	11	11	15	13	10
बुध	15	12	12	16	14	11
गुरु	16	13	13	17	15	12
शुक्र	17	14	14	18	16	13
शनि	18	15	15	19	17	14
रवि	19	16	16	20	18	15
सोम	20	17	17	21	19	16
मंगल	21	18	18	22	20	17
बुध	22	19	19	23	21	18
गुरु	23	20	20	24	22	19
शुक्र	24	21	21	25	23	20
शनि	25	22	22	26	24	21
रवि	26	23	23	27	25	22
सोम	27	24	24	28	26	23
मंगल	28	25	25	29	27	24
बुध	29	26	26	30	28	25
गुरु	30	27	27		29	26
शुक्र	31	28	28		30	27
शनि			29		31	28
रवि			30			29
सोम			31			30
मंगल						

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

दृष्टिक्षेप - 2025

जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टुबर	नवंबर	दिसंबर	वार
		1			1	सोम
1		2			2	मंगल
2		3	1		3	बुध
3		4	2		4	गुरु
4	1	5	3		5	शुक्र
5	2	6	4	1	6	शनि
6	3	7	5	2	7	**रवि**
7	4	8	6	3	8	सोम
8	5	9	7	4	9	मंगल
9	6	10	8	5	10	बुध
10	7	11	9	6	11	गुरु
11	8	12	10	7	12	शुक्र
12	9	13	11	8	13	शनि
13	10	14	12	9	14	**रवि**
14	11	15	13	10	15	सोम
15	12	16	14	11	16	मंगल
16	13	17	15	12	17	बुध
17	14	18	16	13	18	गुरु
18	15	19	17	14	19	शुक्र
19	16	20	18	15	20	शनि
20	17	21	19	16	21	**रवि**
21	18	22	20	17	22	सोम
22	19	23	21	18	23	मंगल
23	20	24	22	19	24	बुध
24	21	25	23	20	25	गुरु
25	22	26	24	21	26	शुक्र
26	23	27	25	22	27	शनि
27	24	28	26	23	28	**रवि**
28	25	29	27	24	29	सोम
29	26	30	28	25	30	मंगल
30	27		29	26	31	बुध
31	28		30	27		गुरु
	29		31	28		शुक्र
	30			29		शनि
	31			30		**रवि**
						सोम
						मंगल

दिनविशेष जानकारी हेतू पृष्ठ क्र. 51 तथा 52 जरुर देखें ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 16, Verse 7

"Those who are **demoniac do not know what is to be done and what is not to be done.** Neither cleanliness nor proper behavior nor truth is found in them."

अध्याय १६, श्लोक ७

''**असुरी प्रवृत्ति के लोगों को क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए इस बात की समझ नहीं होती.** स्वच्छता, सदाचार इसके साथ ही सत्य का भी उनमें अभाव होता है।''

अध्याय १६, श्लोक ७

''**असुरी प्रवृत्तीच्या लोकांना काय करावे आणि काय करु नये ही जाण नसते.** स्वच्छपणा, सदाचार तसेच सत्यही त्यांच्यामध्ये आढळत नाही.''

Chapter 16, Verse 8 and 9

"They (the demoniac people) say that this world is unreal, with no foundation, **no God in control** (anishwaram). They (the demoniac) say that it is produced of sex desire and has no cause other than lust (kama-hetukam).

Following such conclusions, the demoniac, who are lost to themselves and who have less intelligence, engage in unbeneficial, horrible (ugra-karmana) **works meant to destroy the world."**

अध्याय १६, श्लोक ८-९

''वे (असुरी लोग) कहते हैं कि, यह संसार अयथार्थ है और निराधार है तथा **परमेश्वर नाम का कोई नियंत्रक नहीं है।**

उनका मत है की मात्र वासना की इच्छा द्वारा यह जगत निर्माण हुआ है और हवस के अलावा अन्य कोई भी कारण जगत की निर्मिति के पीछे नहीं है।''

ऐसे निष्कर्षों पर निर्भर रहकर, असुरी लोग, जो स्वयं में ही खोए हुए होते हैं, जिनमें अल्पबुद्धि होती है, **ऐसे असुरी लोग दूनिया के विनाश का कारण बनने वाले अहितकारी तथा उग्र कर्मों में व्यस्त रहते हैं।''**

अध्याय १६, श्लोक ८-९

''ते (असुरी लोकं) म्हणतात की, हे जग अवास्तव आहे व जग निराधार आहे आणि **परमेश्वर नावाचा कोणीही याचे नियंत्रण करीत नाही.**

त्यांचे म्हणणे आहे की, केवळ वासनेच्या इच्छेमुळे हे जग निर्माण झाले आहे आणि वासनांशिवाय अन्य कोणतेही कारण जग बनण्याच्या मागे नाही.

अशा निष्कर्षावर विसंबून राहून, आसूरी लोक, जे स्वतःमध्येच हरवून गेलेले असतात, ज्यांच्यात अल्पबूद्धी असते, **असे असुरी लोक जगाचा विनाश करण्यासाठी कारणीभूत ठरणाऱ्या अहितकारी व उग्र कर्मांमध्ये व्यस्त असतात.''**

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 16, Verse 13 to 15

"The demonic person thinks, 'So much wealth do I have today, and I will gain more according to my desires. So much is mine now, and it will increase in the future, more and more. He is my enemy, and I have killed him, and my other enemies will also be killed. I am the lord of everything. I am the enjoyer. I am perfect, powerful and happy. I am smart and I know everything. **There is no one like me.** I shall perform sacrifices, I shall give some charity, and thus I shall rejoice.'

In this way, such persons are deluded by ignorance."

अध्याय १६, श्लोक १३-१५

''असुरी मनुष्य सोचता है कि, 'आज मेरे पास इतनी संपदा है और मेरी इच्छानुसार मैं ज्यादा संपदा प्राप्त कर लूंगा। यह इतना अब मेरा है और भविष्य में अधिकाधिक बढेगा। यह मेरा शत्रु है और मैंने उसे मारा है और मेरे अन्य शत्रु भी मारे जाएँगे। मैं सबका मालिक हूँ। मैं ही भोक्ता हूं। मैं परिपूर्ण, बलवान और सुखी हूँ। मैं बुद्‌धिमान हूं और मुझे सब कुछ समझता है। **मेरे जैसा अन्य कोई भी नहीं है।** मैं यज्ञ करूँगा, थोडा दान करुँगा और इस तरह मैं आनंद मनाउँगा!'

इस तरह ये लोग अज्ञान से मोहित होते हैं।''

अध्याय १६, श्लोक १३-१५

''असुरी मनुष्य विचार करतो की, 'आज माझ्याकडे इतकी संपत्ती आहे आणि माझ्या इच्छेनुसार मी अधिक संपत्ती प्राप्त करेन. हे इतके आता माझे आहे आणि भविष्यात ते उत्तरोत्तर वाढेल. हा माझा शत्रु आहे आणि मी त्याला मारले आहे आणि माझे इतर शत्रुही मारले जातील. मी सगळ्यांचा मालक आहे. मीच भोक्ता आहे. मी परिपूर्ण, बलवान आणि सुखी आहे. मी हुशार आहे आणि मला सगळे कळते. **माझ्यासारखा कोणीच नाहीये.** मी यज्ञ करेन, मी थोडे दान देईन आणि याप्रमाणे मी आनंद मनवेल.

अशा प्रकारे ही लोकं अज्ञानाने मोहित झालेले असतात.''

अनेक भाषाओं में श्रीमद्‌भगवद्‌गीता श्लोक सुनने के लिए

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

(अमेरीका से पद्व्यूत्तर, सन २००२ से श्रीमद्भगवद्गीता के अभ्यासक समीर गणेशराव दुधगांवकर इनकी टीम द्वारा बडी सजगता से हिंदी भाषा में अनुवादित किए गए श्लोक)

Chapter 14, Verse 22 to 25

The God said; "O son of Pandu, he who does not hate illumination, attachment and delusion when they are present or long for them when they disappear;
one who is unwavering and undisturbed through all these reactions of these three qualities, **remaining neutral and transcendental, knowing that the modes alone are active;**
who is situated in the self and regards alike happiness and distress;
who looks upon a lump of earth, a stone and gold with an equal eye;
who is equal toward the desirable (priy) and the undesirable (apriy);
who is steady, situated equally well in praise and blame, honor and dishonor;
who treats alike both friend and enemy;
and who has renounced all activities –
such a person is said to have transcended the three modes (qualities) of nature."

अध्याय १४, श्लोक २२-२५

श्री भगवान ने कहा ''हे पांडुपुत्र ! जो अनुभूति, आसक्ति तथा मोहमाया इनकी उपस्थिति नष्ट होने पर भी उनकी आकांक्षा नहीं करता; जो त्रिगुणों में भी दृढ एवं अटल रहता है और **मात्र त्रिगुण ही सक्रिय है यह जानकर स्थितप्रज्ञ और दिव्य रहता है;**
जो आत्मस्थित है तथा सु:ख-दु:ख को समदृष्टि से देखता है;
जो मिट्टी, पत्थर एवं सोने को समदृष्टि से देखता है;
जो प्रिय और अप्रिय के संबंध में समभाव रखता है;
जो सातत्यपूर्ण रहता है तथा प्रशंसा एवं निंदा, मान तथा अपमान इनकी ओर समभाव से देखता है;
जो मित्र एवं शत्रु दोनों के साथ समान बर्ताव करता है और जिसने भौतिक कर्मों का त्याग किया है - **उस मनुष्य को ''गुणातीत'' कहा जाता है।''**

अध्याय १४, श्लोक २२-२५

श्रीभगवान म्हणाले, ''हे पांडुपुत्र! जो प्रचीती, आसक्ती आणि मोहमाया यांची उपस्थिती नाहीशी झाली तरी त्यांची आकांक्षा करीत नाही;
जो त्रिगुणांच्या (सत्वगुण, तमोगुण आणि रजोगुण) प्रभावामध्येही अविचलीत आणि निश्चल राहतो आणि **केवळ त्रिगुणच सक्रीय आहेत हे जाणून स्थितप्रज्ञ आणि दिव्य राहतो;**
जो आत्मस्थित आहे आणि सुख-दु:खाला सारखेच मानतो;
जो माती, दगड आणि सोन्याकडे समदृष्टीने पाहतो; जो प्रिय आणि अप्रिय यांच्याबद्दल समभाव राखतो;
जो सातत्यपूर्ण असतो आणि स्तुती व निंदा मान व अपमान याकडे समभावाने पाहतो;
जो मित्र आणि शत्रू यांच्याशी सारखीच वर्तणूक करतो
आणि ज्याने सर्व भौतिक कर्मांचा परित्याग केला आहे - **त्या मनुष्याला 'गुणातीत' म्हटले जाते.''**

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 17, Verse 14

(608th Verse of total 700 Shrimad-Bhagavat-Gita Verses)

"Austerity (harsh discipline) of the body consists in worship of the God, the brahmanas, the spiritual master, wise human beings and in cleanliness, simplicity, celibacy (brahmacharya) and nonviolence."

अध्याय १७, श्लोक १४

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से ६०८वा श्लोक)

''ईश्वर-ब्रह्म, आध्यात्मिक गुरु तथा प्रज्ञावंतो की पूजा करना तथा पवित्रता, सरलता, ब्रहमचर्य और अहिंसा आदि का अंगीकार, **इन्हें शारीरिक तप कहा जाता है।**''

अध्याय १७, श्लोक १४

(श्रीमद्भगवद्गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी ६०८वा श्लोक)

''भगवंत, ब्रह्म, अध्यात्मिक गुरु व ज्येष्ठ व्यक्तींची पूजा करणे आणि पावित्र्य, सरलपणा, ब्रह्मचर्य आणि अहिंसा (हे जोपासणे) **यांना शारीरिक तप म्हटले जाते.**''

Chapter 17-Verse 15

"**Austerity (harsh discipline) of speech** consists of speaking words that are truthful, pleasing, and beneficial and not agitating to others, and also **in regular study (swadhyaya).**"

अध्याय १७, श्लोक १५

''सत्य, प्रिय, हितकारी तथा औरों को क्षुब्ध न करने वाले शब्द बोलना और **नियमित स्वयं अध्ययन द्वारा** सुझे हुए शब्द बोलना, ऐसे आचरण को वाचिक तप कहते हैं।''

(तपस्या करने वाले को आशीर्वाद मिलेगा ऐसा भगवान सिखाते हैं। स्वयं अध्ययन के बिना नहीं बोलना चाहिए। ऐसे आचरण से वाचिक तप होगा, आशीर्वाद मिलेगा।)

अध्याय १७, श्लोक १५

''सत्य, प्रिय, हितकारक आणि इतरांना क्लेश दायक शब्द न बोलणे आणि नियमितपणे **स्वतः अभ्यास करुन सुचणारे शब्द बोलणे- अशा वागण्याला वाचिक तप असे म्हणतात.**''

(तपश्चर्या करणाऱ्याला आशिर्वाद मिळेल असे भगवंत शिकवितात. **स्वतः अभ्यास असल्याशिवाय बोलु नये,** असे वागल्यास वाचिक तपश्चर्या होईल, आशिर्वाद मिळतील!)

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 18, Verse 5

"Acts of sacrifice, charity and austerity are not to be given up; they must be performed. **Indeed, sacrifice, charity and penance purify even the great souls**."

अध्याय १८, श्लोक ५

''यज्ञ, दान, तप इस तरह के कर्मो का त्याग नहीं करना चाहिए ।

यज्ञ, दान एवं तप करना मनीषीयों (मनाचे देव) को भी पवित्र करता है। ''

अध्याय १८, श्लोक ५

''यज्ञ, दान, तप या कर्मांचा त्याग करु नये; ती कर्मे केलीच पाहिजेत.

यज्ञ, दान आणि तप करणे हे तर मनीषाला (मनाच्या देवाला) देखील पवित्र करते.''

Chapter 18, Verse 6

(628th Verse of total 700 Shrimad-Bhagavat-Gita Verses)

"All these activities should be performed without attachment or any expectation of result. They should be performed as a matter of duty, O son of Partha. **That is My the best, definite opinion (final opinion).**"

अध्याय १८, श्लोक ६

(श्रीमद्भगवद्गीता के कुल ७०० श्लोकों में से ६२८वा श्लोक)

''ये सभी कार्य किसी भी प्रकार की आसक्ति अथवा फल की अपेक्षा के बिना करने चाहिए।

हे पार्थ! ये कर्म कर्तव्य बुद्धि से करने चाहिए, यह मेरा सर्वोच्च तथा अंतिम मत है। ''

अध्याय १८, श्लोक ६

(श्रीमद्भगवद्गीतेच्या एकुण ७०० श्लोकांपैकी ६२८वा श्लोक)

''ही सर्व कर्मे कोणत्याही प्रकारची आसक्ती किंवा फलाच्या अपेक्षेविना केली पाहिजेत.

हे पार्थ! ही कर्मे कर्तव्यबुद्धीने केली पाहिजेत, हे माझे सर्वोच्च आणि अंतिम मत आहे.''

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

(अमेरीका से पद्व्यूत्तर, सन २००२ से श्रीमद्भगवद्गीता के अभ्यासक समीर गणेशराव दुधगांवकर इनकी टीम द्वारा बडी सजगता से हिंदी भाषा में अनुवादित किए गए श्लोक)

Chapter 14, Verse 9

"O son of Bharata, the mode of goodness binds one to happiness; passion conditions one to fruitive action; and ignorance (covering one's knowledge) **binds one to madness."**

अध्याय १४, श्लोक ९

''हे भरतपुत्र ! सत्वगुण मनुष्य को सुख से बाँधता है, रजोगुण मनुष्य को सकाम कर्म से बाँधता है और **तमोगुण मनुष्य को पागलपन से बाँधता है।**''

(तमोगुण के लिए अंग्रेजी शब्द Ignorance का प्रयोग किया गया है। इस शब्द का अर्थ है - अज्ञान। यहाँ Covering one's knowledge कहा गया है। अर्थात व्यक्ति के ज्ञान को आवृत्त करने वाली मानसिकता)

अध्याय १४, श्लोक ९

''हे भरता ! सत्वगुण हा मनुष्याला सुखासोबत बांधतो, रजोगुण हा सकाम कर्माशी बांधतो अणि **तमोगुण हा वेडेपणाशी बांधतो.**''

(तमोगुणाला इंग्लिश शब्द Ignorance वापरण्यात आलेला आहे, ज्या शब्दाचा अर्थ आहे की अज्ञान-इथे Covering one's knowledge म्हटले आहे म्हणजे व्यक्तीचे ज्ञान आवृत करणारी मनःस्थिती)

Chapter 18, Verse 37

"**That which seems like poison at first, but tastes like nectar in the end**, is said to be happiness in the mode of goodness. It is generated by the pure intellect that is situated in self-knowledge."

अध्याय १८, श्लोक ३७

''**जो पहले विष के समान प्रतीत होता है, लेकिन अंततः अमृत में परावर्तित होता है,** वह सात्विक सुख कहलाता है। आत्मज्ञान में स्थित शुद्ध बुद्धिसे - ऐसे सात्विक सुख की उत्पत्ति होती है।''

अध्याय १८, श्लोक ३७

''**जे सुरवातीला विषासारखे वाटते, पण शेवटी अमृतात परावर्तित होते,** त्याला सात्विक सुख असे म्हणतात. आत्मज्ञानात वसलेल्या शुद्ध बुद्धीने हे सात्विक सुख निर्माण होते.''

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 14, Verse 16

"The result of pious action is pure and is said to be in the mode of goodness. But action done in the mode of passion results in misery, and action performed in the mode of **ignorance results in foolishness**."

अध्याय १४, श्लोक १६

''पुण्य कर्मों का फल शुद्धतम होता है और वह सत्वगुण में होता है ऐसा कहा जाता है; लेकिन रजोगुण से प्रेरित किए हुए कर्म का फल दुःखदायी होता है और **तमोगुण से प्रेरित किए हुए कर्म का फल मूर्खता होती है।**''

अध्याय १४, श्लोक १६

''पुण्यकर्माचे फळ शुध्द असते आणि ते सत्वगुणामध्ये असल्याचे म्हटले जाते; परंतु रजोगुणामध्ये केलेल्या कर्माचे फळ दुःखदायी असते आणि **तमोगुणात केलेली कृती मुर्खपणा ठरते.**''

Chapter 18, Verse 28

"**The person (karta-worker) who is always engaged in work (against the injunctions of scripture), stubborn (who acts only according to his nature** (prakriti)), evil, obstinate, cheating and expert in insulting others, and who is lazy, always morose and gloomy, procrastinating is **said to be a worker in the mode of ignorance.**"

अध्याय १८, श्लोक २८

''**जो कर्ता हमेशा शास्त्र विरोधी कर्म करने में मग्न होता है,**

हठी (जो मात्र स्वयं की प्रकृति के अनुसार कार्य करता है); दृष्ट, फँसाने वाला, दूसरों का अपमान करने में कुशल तथा आलसी, सदैव उदास तथा कार्य टालनेवाला होता है, **उसे तमोगुणी कार्यकर्ता कहा जाता है।**''

अध्याय १८, श्लोक २८

''**जो कर्ता नेहमी शास्त्राविरुध्द कर्म करण्यात गुंतलेला असतो,**

हट्टी (जो फक्त स्वतःच्या स्वभावाप्रमाणे कार्य करतो), जो दुष्टपणा करतो, फसवणूक करणारा, दुसऱ्यांचा अपमान करण्यात तरबेज असतो व जो सदैव आळशी, खिन्न आणि काम करताना चालढकल करणारा असतो; **त्याला तमोगुणी कार्यकर्ता म्हटले जाते.**''

श्रीमद्भगवद्गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 17 Verse 5 and 6

"Those who undergo severe austerities and penances not recommended in the scriptures, performing them out of pride and egoism, who are impelled by lust and anger (kama-raga), who are foolish and **who torture the elements of the body as well as the divine presence** (Me-Supersoul) **dwelling within, understand them as to be demons.**"

अध्याय १७, श्लोक ५-६

''जो लोग शास्त्रसम्मत नहीं है ऐसी उग्र और कठोर तपस्या करते हैं वो भी दंभ एवं अहंकारयुक्त भावना के कारण; जो कामभावना से तथा क्रोध, भावना से ग्रस्त होते हैं,

जो मुर्ख होते हैं और **शरीर के भौतिक तत्वों और साथ ही अंतर्यामी परमात्मा को भी तकलीफ पहुँचाते हैं,**

उन्हें असूरी (राक्षस) समझना।''

अध्याय १७, श्लोक ५-६

''जे लोक शास्त्रसंमत नसलेली उग्र आणि कठोर तपस्या करतात, तेही दंभ आणि अहंकारयुक्त भावनेमुळे, जे कामभावनेने आणि क्रोधभावनेने झपाटलेले असतात,

जे मूर्ख असतात आणि **शरीराच्या भौतिक तत्त्वांना व त्याचबरोबर अंतर्यामी परमात्म्यालाही कष्ट पोहोचवितात,**

त्यांना असूरी (राक्षसी) समजावे.''

Chapter 17, Verse 9

"Foods that are too bitter, too sour, salty, hot, pungent, dry and burning are dear to those in the mode of passion. **Such foods cause distress, misery and disease.**"

अध्याय १७, श्लोक ९

''रजोगुणी मनुष्यों को अत्यंत कडवा, खट्टा, नमकीन, तेज, तिखा, शुष्क और दाह उत्पन्न करनेवाला भोजन प्रिय होता है। **ऐसा भोजन तकलिफ, दुःख और व्याधि निर्माण का कारण बनता है।**''

अध्याय १७, श्लोक ९

''रजोगुणी मनुष्यांना अत्यंत कडू, आंबट, खारट, तिखट, झणझणीत, शुष्क आणि दाहकारक आहार प्रिय असतो. **असा आहार त्रास, दुःख आणि व्याधी निर्माण होण्यास कारणीभूत असतो.**''

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 18, Verse 8

"Anyone who **gives up prescribed** duties as troublesome or out of fear of bodily discomfort is said to have renounced in the mode of passion. **Such action never leads to the results** (or elevation) **of renunciation."**

अध्याय १८, श्लोक ८

''जो मनुष्य नियत कर्मों को तकलिफदेह समझकर अथवां ये कर्म शरीर के लिए क्लेशदायक होंगे इस डर से उनका त्याग करता है उसके संबंध में ऐसा कहा जाता है कि उसने रजोगुण में त्याग कर दिया है। **ऐसा करना कभी भी फलप्राप्ति के लिए उचित नहीं होता।** ''

अध्याय १८, श्लोक ८

''जो मनुष्य, **नियत कर्मांना** कष्टप्रद समजून किंवा ते शरीराला क्लेश देतील या भीतीने त्यांचा **त्याग करतो,** त्याच्याबद्दल असे म्हटले जाते की, त्याने रजोगुणात त्याग केला आहे. **असे करणे कधीही त्यागाच्या फलप्राप्तीसाठी योग्य नसते.''**

Chapter 18, Verse 11

"It is indeed impossible for an embodied being to give up all activities. But he who renounces the fruits of action **is called one who has truly renounced."**

अध्याय १८, श्लोक ११

''देहधारी जीवों को सभी कर्मों का त्याग करना वास्तव में असंभव है; लेकिन जो कर्मफल का त्याग करता है **उसे ही सच्चा त्यागी कहा जाता है।** ''

अध्याय १८, श्लोक ११

''देहधारी जीवांना सर्व कर्मांचा त्याग करणे खरच अशक्य आहे; परंतु जो कर्मफलाचा त्याग करतो **त्याला खरा त्यागी म्हटले जाते.''**

Chapter 18, Verse 12

"For one who is not renounced (atyaginam), the threefold fruits of action - desirable, undesirable and mixed- accrue after death. But those **who are in the renounced order of life (sansyasinam) have no such result to suffer or enjoy."**

अध्याय १८, श्लोक १२

''जो त्यागी नहीं है उसे मृत्यु पश्चात इष्ट, अनिष्ट तथा मिश्र ऐसे तीन प्रकार के कर्मफल प्राप्त होते हैं। **लेकिन जो त्यागी हैं (संन्यासाश्रम में हैं) उन्हें कर्मफल का सु:ख या दु:खरुपी फल नहीं भोगना पडता।''**

अध्याय १८, श्लोक १२

''जो त्यागी नाही त्याला मुत्युनंतर इष्ट, अनिष्ट व मिश्र असे तीन प्रकारचे कर्मफल प्राप्त होते. **परंतु जे त्यागी आहेत (संन्यासाश्रमात आहेत) त्यांना कर्मफलाचे सुख अथवा दु:खरुपी फळ भोगावे लागत नाही.''**

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पणींया

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 3, Verse 37

God said, "It is lust which becomes wrath (anger) only, Arjuna, which is born of contact with the mode of passion, **which is the all-devouring sinful enemy of this world.**"

अध्याय ३, श्लोक ३७

श्री भगवान ने कहा, ''हे अर्जुन ! रजोगुण के संपर्क से उत्पन्न कामवासना जो क्रोध में परिवर्तित होती है, **ये ही इस जगत् के सर्वविनाशी महापापी शत्रु हैं।**''

अध्याय ३, श्लोक ३७

श्रीभगवान म्हणाले, ''हे अर्जुना ! रजोगुणाच्या संपर्कातून उत्पन्न झालेले कामवासना ज्याचे क्रोधात रुपांतर होते, **हेच या जगताचे सर्वभक्षक महापापी शत्रू आहे.**''

Chapter 3, Verse 38

"As fire is covered by smoke, as a mirror is covered by dust, or as the embryo is covered by the womb, the living entity is similarly covered by that enemy (lust)."

अध्याय ३, श्लोक ३८

''जैसे धुएँ से अग्नि, धूलि कणों से आईना तथा अर्भक गर्भ से वेष्टित होता है, वैसे ही जीव इन शत्रुओं द्वारा (कामवासना) आच्छादित होता है।''

अध्याय ३, श्लोक ३८

ज्याप्रमाणे धुराने अग्नी, धुळीने आरसा आणि अभ्रक गर्भाने वेष्टिला जातो त्याचप्रमाणे जीव, या शत्रुद्वारे (कामवासना) आच्छादिला जातो.

Chapter 6, Verse 40

Lord Krishna said, "O son of Partha, a transcendentalist engaged in auspicious activities does not meet with destruction either in this world or in the spiritual world; one **who does good, my friend, is never defeated by evil.**"

अध्याय ६, श्लोक ४०

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे पार्थ ! शुभ कार्यों में संलग्न योगी व्यक्ति का इहलोक और परलोक में भी विनाश नहीं होता और मेरे मित्र; **जो इंसान सत्कर्म करता है वह दुष्प्रवृत्तियों द्वारा कभी भी पराभूत नहीं होता।**'' (दुर्गती को प्राप्त नही होते)

अध्याय ६, श्लोक ४०

श्रीभगवान म्हणाले, '' हे पार्था ! शुभकार्यांमध्ये युक्त झालेल्या योगी व्यक्तीचा इहलोकात तसेच परलोकातही विनाश होत नाही आणि हे मित्रा; **जो मनुष्य चांगले कार्य करतो तो दुष्प्रवृत्तींकडून कधीही पराभूत होत नाही.**''

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 3, Verse 24 and 25

"If I did not perform work (Karma-prescribed duties), all these worlds would be put to ruination. I would be the cause of creating unvirtuous population, and I would thereby destroy the peace of all living beings.

As ignorant act attached to the furtive results of prescribed duties, **a learned person should act, by working in the spirit of devotion, be engaged in all activities for benefit of the world.**"

अध्याय ३, श्लोक २४-२५

''यदि मैंने अपना नियत कर्म नहीं किया तो यह सभी ग्रहलोक नष्ट हो जाएंगे । गलत संस्कारोंवाली जनसंख्या उत्पन्न करने के लिए मैं ही कारण बनूंगा और परिणामतः सभी प्राणीमात्रों की शांति का विनाशक मैं बनूंगा ।

अज्ञानी लोग फल की आसक्ति से अपना कर्म करते हैं; **विद्‌वान मनुष्य ने भक्तिभाव से कर्म करते हुए दुनिया के भले हेतू विभिन्न कर्मों में व्यस्त होना चाहिए ।**''

अध्याय ३, श्लोक २४-२५

''मी जर नियत कर्म केले नाही तर हे सर्व ग्रहलोक नष्ट होऊन जातील. अनावश्यक लोकसंख्या उत्पन्न करण्यास मीच कारणीभूत होईन आणि त्यामुळे सर्व प्राणिमात्रांच्या शांततेचा मी विनाशक होईन.

अज्ञानी लोक फलांच्या आसक्तीने आपले कर्म करतात, **विद्धान मनुष्याने, भक्तिभावात कर्म करतांना जगाच्या भल्याच्या वेगवेगळ्या कर्मांत गुंतुन रहावे.**''

Chapter 3, Verse 26

As the ignorant perform their duties with attachment to results, O descendant of Bharat Arjuna, the learned must similarly act, but without attachment, keeping them fully engeged.

अध्याय ३, श्लोक २६

अज्ञानी लोग आसक्ति युक्त भावना रखते हुए कर्म करते हैं। ज्ञानी व्यक्ति ने उनके बुद्‌धि में भ्रम ना उत्पन्न करते हुए तथा स्वयं आसक्ति ना रखते हुए कर्म करते रहने चाहिए; जिस से सभी लोगों का ऐसे आचरण करने के लिए ज्ञानी व्यक्ति नेतृत्व कर सकें।

अध्याय ३, श्लोक २६

नियत कर्मांच्या फलामध्ये आसक्त असणाऱ्या अज्ञानी मनुष्यांचे मन विचलित होऊ नये म्हणून विद्धान व्यक्तीने त्यांना कर्म थांबविण्यास प्रेरित करु नये. याउलट भक्तिभावाने कर्म करुन त्याने त्या लोकांना सर्व प्रकारच्या कार्यांमध्ये युक्त करावे.

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता को जीवन में उपयोगी कैसे लाए इस जानकारी के लिए **www.Dudhgaonkar.in/BG** वेबसाइट पर भेंट देते रहे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ चुनिंदा श्लोक

Chapter 3, Verse 29

"Those who are deluded by the influence of the modes of persons become attached to the results of their actions. But the **wise who understand** these truths should not unsettle such ignorant people who know very little."

अध्याय ३, श्लोक २९

''प्रकृति के गुणों से मोहित व्यक्ति गुणों तथा कर्मों में आसक्त रहते हैं। पर यह सच जाननेवाले ज्ञानी व्यक्ति ने मुर्ख अज्ञानी लोगों को अस्थिर नहीं करना चाहिए।''

अध्याय ३, श्लोक २९

''प्रकृतीच्या गुणांनी अत्यंत मोहित झालेली माणसे गुणांत आणि कर्मांत आसक्त राहतात. **ज्ञानी व्यक्तिने** चांगल्या रीती न जाणनाऱ्या अश्या मुर्ख अज्ञानी लोकांना अस्थिर करु नये.''

Chapter 3, Verse 28

"One who is in **knowledge of the Absolute Truth**, O mighty-armed, does not become attached in the senses and sense gratification, (knowing well the differences between work in devotion and work for furtive results)."

अध्याय ३, श्लोक २८

''जिस मनुष्य को **परम सत्य का** ज्ञान हुआ है, वह मनुष्य कभी भी इंद्रियों में तथा इंद्रियों को खुश करने के लिए आसक्त नहीं रहता (क्योंकि ज्ञानी मनुष्य को भक्तिभावयुक्त किए हुए कर्मों में और फलप्राप्ति हेतु किए हुए कर्मों के बीच का फर्क अच्छी तरह से ज्ञात होता है)।''

अध्याय ३, श्लोक ३१

''**परम सत्याचे** ज्ञान असणारा माणुस कधी इंद्रिये आणि इंद्रियांना खुश करण्यासाठी आसक्त नसतो. (कारण ज्ञानी माणसाला भक्तीभावासहीत केलेल्या कर्मांत आणि फळप्राप्तीसाठी केलेल्या कर्मांमधला फरक व्यवस्थित माहिती असतो).''

डब्ल्यू.हेजनबर्ग, जर्मन भौतिकीविद : ''भारतीय तत्वज्ञान पर की गईं चर्चाओं के बाद, क्वांटम फिजिक्स की जो संकल्पनाएँ विचित्र लगती थीं, उनके अर्थ समझ में आने लगे ।''

(क्वांटम फिजिक्स दुनिया का सर्वाधिक कठिन विषय माना जाता है।)

अनेक भाषाओं में श्रीमद्भगवद्गीता श्लोक सुनने के लिए

हाथ मदत का - प्रख्यात ज्ञानोपासक परिवार के शिक्षित लोगों का...!

ग्राम सक्षमीकरण अभियान

1. ज्ञानोपासक परिवार ने परभणी जिला परिसर के सेकडों गाँवों की ओर ध्यान देने का निश्चित किया है । इन गाँवों के नागरिकों से टीम समीर दुधगांवकर निरंतर संपर्क में रहनेवाली है ।

2. इन गाँवों के अतिरिक्त जिन गाँवों के नागरिकों को हमारी ओर से मदद की अभिलाषा है, उन्होंने निम्नलिखित प्रारुप में जिस विषय से संबधित समस्या होगी, उस व्यक्ति से संदेश प्रेषित करें ।

समस्या संदेश करने का प्रारुप

आपका संपूर्ण नाम	:
गाँव (तहसिल, जिला)	:
संपर्क क्रमांक	:
समस्या	:
आप फिलहाल क्या करते है ?	:

3. सभी मंडली स्वयं का कार्य करते-करते समाजसेवा (जनसेवा) के लिए समय दे रहे है । इसलिए जनता ने उन्हें सीधा संपर्क न कर अपनी समस्या (व्हॉट्सॲप अथवा एसएमएस के द्वारा) भेज सकते है ।

4. कुछ कारणवश यदि तुरंत जवाब ना मिला तो आप पहले +9194 2293 5407 इस क्रमांक पर स्मरण देने हेतु उपर्युक्त संदेश भेजे ।

   यहाँ भी उत्तर नहीं आया तो आप सीधा समीर दुधगांवकर इनके +9198 2023 0402 इस क्रमांक पर संपर्क करें ।

ग्राम सक्षमीकरण अभियान विषय

नागरिकों को मदत की आवश्यकता पडने पर निम्नलिखित समिती सदस्यों को अपनी समस्याएँ WhatsApp मेसेज द्वारा भेजें ।

विषय	नाव	शिक्षा	संपर्क हेतु मोबाईल नंबर
1. खेती हेतु रास्ते या गाँव तथा शहर के अंतर्गत रास्तों की माँग	सदाशिव प्रल्हादराव इंगळे	B.A.B.Ed	9421 86 4940
	गोविंद एकनाथ गोरे	M.A. B.Ed	9764 67 1816
2. जिला अंतर्गत रस्तों के प्रश्न (PMGSY फेज ३)	रुखसाना बेगम शमीम अहेमद	B.A.B.Ed	7972 01 8830
	निळकंठ नागनाथअप्पा कापसे	M.Sc. B.Ed., NET JRF	9604 48 8555
3. सिंचन व्यवस्था	सुदर्शन तुकाराम कदम	B.Sc. B.Ed	9423 45 6777
	कल्याण डीगांबर जाधव		9049 60 3248
4. बिजली समस्या	वाल्मिक बापूराव भोसले	M.A. B.Ed. (History)	7588 08 2339
	मधुकर ज्ञानदेव भिसे	M.A. B.Ed. (Political Sci.)	9404 73 8681
5. नई शिक्षा प्रणाली तथा करिअर मार्गदर्शन	संघपाल सुभाषराव नरवाडे	M.Sc. B.Ed (Biology)	9860 07 0820
	शरद जाधव	M.Sc. B.Ed (Physics)	8308 06 0263
6. उद्योग क्षेत्र में नौकरियाँ दिलाना	अशोक रामकिशन काळे	M.A.B.Ed. (English)	9552 18 2599
	संदीप जगनराव सरकटे	M.E. (E&TC)	9422 87 3758
7. पोकरा प्रकल्प में मदत अथवा कृषि आधारित उद्योग	प्रल्हाद सुदामराव काठोळे	B.A.B.Ed	9168 45 6873
8. नव उद्योग निर्माण तथा उससे संबंधीत समस्याएँ	नवगिरे अण्णासाहेब वामनराव		9765 44 3307
	रामेश्वर अंभूरे	M.A. (History)	7769 87 7765
9. सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम (MSME) उद्योगों के लिए उपलब्ध सरकारी योजना	डॉ. विजय माणिकराव राऊत	M.Phil, PhD (Commerce)	9403 02 5291
10. पर्यावरण (वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान आदि)	दिनकर हरिभाऊ पवार	M. Sc. B. Ed. Ph.D Scholar	8007 63 2801
	किरण साहेबराव राऊत	M.A.B.Ed (Economics)	9823 98 2544
11. पारिवारीक व्यवसाय नियोजन तथा उसका महत्व	समीर गणेशराव दुधगांवकर	M.S. Mech Engg USA	9820 23 0402
12. नये प्रकल्प तथा उनसे संबंधित शासकीय दफ्तरों से संवाद	डॉ. भीमराव खाडे (Ph.D., Chem.) संतोष दत्तराव कदम देविदास तुकाराम शिंपले		9423 44 3275 7588 67 6086 9960 51 1621

ग्राम सक्षमीकरण अभियान का

सामाजिक समरसता (सामंजस्य) प्रकल्प

- परिस्थिति का यह प्रभाव है कि, आज भारत में 8 करोड लोगों को मनःशांति के लिए प्रतिदिन दवाईयाँ लेनी पडती है । इसलिए अर्थसंकल्प 2022 में मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाईन बनाना घोषित किया गया ।
- मादकद्रव्यों का सेवन बढा है ।
- नोकरीपेशा लोगों के अपराध बढ रहे है ।

जानकार बताते है कि, भारतीय संस्कृति को अनदेखा करने के कारण यह हुआ है ।

हिंदू संस्कृति सबसे प्राचीन है । दैनंदिन जीवन जीने के लिए उचित निर्णय लेने के लिए करीब 5000 वर्षो पूर्व श्रीमद्भगवद्गीता में संदेश दिया है ।

- **सोलहवें अध्याय के 13 से 15 वा श्लोक हमें सिखाते है कि, पैसा-पैसा करनेवाले लोग बूरी प्रवृत्ति के होते है ।**
- **सोलहवें अध्याय के, श्लोक 21 में सिखाया जाता है की, काम, क्रोध और लोभ नरक प्रवेश के तीन द्वार है । प्रत्येक मनुष्य ने इनका त्याग करना चाहिए । क्योंकि इन तीनों के कारण आत्मा का विनाश होता है ।**

इसका अर्थ क्या है ? अर्थ यह है कि, मनुष्य ने पैसों को सर्वस्व मानना नहीं चाहिए । (अर्थार्जन को जीवन का एकमेव अर्थपूर्ण कार्य ना समझे ।)

फिर क्या करें ? इन्सानियत को ध्यान में रखते हुए स्वयं के स्वभाव अनुसार कार्य करना चाहिए !

अनुभवी लोग बताते है, मनुष्य केवल छः प्रकार के कार्य कर सकता है । इस ज्ञान को लेकर ग्राम सक्षमीकरण अभियान में परिवारों में जाकर प्रवृत्ति के अनुसार इन छः में से कोई एक कार्य का चुनाव करके जीवनभर कर्म करें, उस विचार का महत्व बताना है । लोगों द्वारा चुने हुए कार्य में हमें उनकी मदद करनी हैं ।

कार्य करने का प्रकार (करिअर प्रकार)		
करियर 1 (A)	-	शासकीय सेवा (शासकीय सेवा मतलब भ्रष्टाचार करने का अवसर ऐसा विचार ना करें । अन्य लोगों की सेवा करने की प्रवृत्ति चाहिए, तभी शासकीय सेवा करने योग्य है ।)
करियर 1 (B)	-	निजी कंपनी में सेवा
करियर 2	-	छोटा व्यवसाय करना । (दुकान चलाना, कृषि पर निर्भर उद्योग, डॉक्टर, वकील, आदि कार्य)
करियर 3	-	बडे उद्योजक बनना । (टाटा-बिर्ला समान)
करियर 4	-	निवेश में से बडा धन कमाना ।
करियर 5	-	सामाजिक कार्य अथवा राजनीतिक कार्य करना । पैसों के लिए करिअर 1B /2/3/4 करें । पैसों का उद्देश्य रखकर राजनीतिक कार्य ना करें । जनता के हित के लिए प्राप्त राशि (धन) खाकर राजनीति करके न जिए ।
प्रकार 6	-	ऐसे लोग जिन्होंने आज तक कुछ निश्चित नहीं किया ।

सारांश :

1. **'लालच बुरी बला है', यह हमारी संस्कृति सिखाती है ।**
2. **स्वयं की प्रवृत्ति को समझकर अपने कार्य का चुनाव करें और जीवनभर आनंद पाते हुए कार्य करें ।**
3. **संविधान बताता है कि, सभी को अवसर दिया जाना चाहिए । सबकुछ एक ही परिवार को, बाकी सारें परिवार वंचित रहे, ऐसा बर्ताव पूरी तरह गलत तो है हि लेकिन वह असंवैधानिक भी है ।**

(सामाजिक समरसता प्रकल्प के विस्तृत PDF हेतु +9194 2293 5407 पर व्हॉटसॲप करे ।)

ग्राम सक्षमीकरण अभियान हेतु
सन्माननीय सदस्यों की मार्गदर्शन समिति

क्र.	नाव	प्रभाव क्षेत्र
1	Mr. Arvind Shivajirao Nade and Family	धाराशिव (उस्मानाबाद), लातूर
2	Adv. Ganeshrao Dudhgaonkar and Family	परभणी, हिंगोली, जालना, अमरावती और बुलडाणा साथ ही संपूर्ण महाराष्ट्र
3	Mr. Shivajirao Kavhekar and Family	लातूर
4	Mr. Anil Jadhav and Family	नांदेड, लातूर, मुंबई
5	Dr. Suresh Sadawarte and Family	परभणी, नांदेड, छ. संभाजीनगर
6	Mr. Sarang Salvi and Family	महाराष्ट्र
7	Mr. Vinay Hatole and Family	छ. संभाजीनगर, परतूर (जालना)
8	Mr. Shekhar Ghungarwar and Family	नांदेड
9	Mr. Jagannath Kachhave and Family	परभणी, नांदेड, लातूर, मुंबई
10	Ms. Usha Jadhav and Family	छ. संभाजीनगर, लातूर, भालकी
11	Mr. Hanumantrao Gore and Family	बीड
12	Dr. Ashok Kolhe and Family	बीड
13	Mr. Dharnidhar Patil and Family	धाराशिव (उस्मानाबाद), पंढरपूर
14	Mr. Pratap Kadam and Family	परभणी, पंढरपूर

''हाथ सहायता का - प्रख्यात ज्ञानोपासक परिवार के शिक्षित लोगों का...! ''

ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी

50,000 से अधिक परिवारों को उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करने वाला मंडळ

www.Dnyanopasak.in

ग्राम सक्षमीकरण अभियान

अभियान की प्रेरणा : भारत के शिक्षा मंत्रालय का उन्नत भारत अभियान

मराठवाडा आँचल के सेकडों गाँवों की सेवा में
15 बुनियादी विषयों पर कार्य करने वाला अभियान ।
मराठवाडा - 8 लोकसभा तथा 46 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का प्रदेश

कृषि रास्ते, सिंचाई व्यवस्था, युवकों को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराना, उद्योग निर्माण में मदद, पर्यावरण, स्वच्छता अभियान आदि विषयों में योगदान देने वाला अभियान ।

अभियान संकल्पना

समीर गणेशराव दुधगांवकर (शिंदे)

उपाध्यक्ष - भाजपा परभणी जिला (ग्रामीण)
अमेरिका से पदव्युत्तर अभियंता, राज्य उद्योग संघटना का नेतृत्व,
परभणी युथ आयकॉन, श्रीमद्भगवद्गीता अभ्यासक

+9191 4536 4999
+9189 5637 7449
(केवल महत्वपुर्ण संदेशों के लिए)

Samir@Dudhgaonkar.in
SamGDudhgaonkar
SamirGDudhgaonkar

समीर इनके
विस्तृत परिचय हेतु

कार्यालय : C विंग, लायब्ररी के निचे, ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जिंतूर रोड, परभणी - 431 401.

+9194 2293 5407
Office@Dudhgaonkar.in

अनेक पिढीयों से पंढरपुर वारी में संत ज्ञानेश्वर माऊली के पादुकाओं का अभिषेक करना यह सन्मानप्राप्त परिवार

www.Dudhgaonkar.in

स्व. तानुबाई ज्ञानोबाराव दुधगांवकर
ॲड. गणेशराव दुधगांवकर (बापूसाहेब) इनकी दादी

स्व. नागोराव ज्ञानोबाराव दुधगांवकर
(बापूसाहेब के पिताजी)

स्व. राजाई नागोराव दुधगांवकर
(बापूसाहेब की माताजी)

स्व. लक्ष्मीबाई नागोराव दुधगांवकर
(बापूसाहेब की माताजी)

कै. प्रयागबाई बापूराव निकम राव्हेकर
सेलू
जिला परभणी, महाराष्ट्र

कै. रुक्मिणीबाई उत्तमराव शेजूळ
सुर्यवंशी आडगावकर, माजलगाव
जिला बीड, महाराष्ट्र

कै. लिंबाजीराव नागोराव दुधगांवकर
PDCC अध्यक्ष (1970 - 1987)

कै. अंबादासराव नागोराव दुधगांवकर

कै. रावसाहेब नागोराव दुधगांवकर

बापूसाहेब की बडी बहनें

बापूसाहेब के बडे भाई

ॲड. गणेशराव दुधगांवकर तथा सुविद्य पत्नी डॉ. सौ. संध्या दुधगांवकर

कु. रुपाली, कु. मधुरा, चि. समीर (बापूसाहेब की संतानें)

दुधगांवकर परिवार

ॲड. श्रीधरराव रावणराव कदम धारासुरकर तथा चंद्रकला तुकारामबापु पाटील तादलापुरकर परिवार

बापूसाहेब एवं डॉ.सौ.संध्याताई, सुपुत्र समीर के साथ

बापूसाहेब, सुपुत्री मधुरा एवं डॉ.सौ. संध्याताई दुधगांवकर

कर्मयोगी बापूसाहेब के कर्तृत्व के कुछ क्षण...

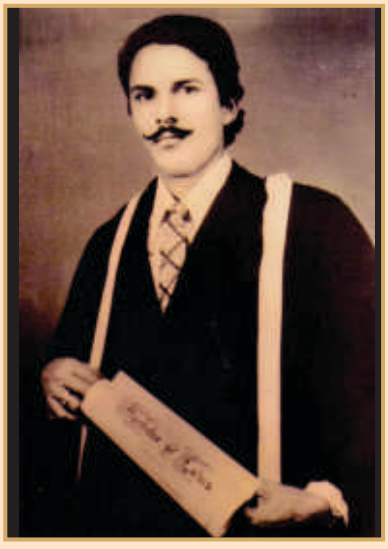

माणिकचंद पहाडे विधी महाविद्यालय, औरंगाबाद
एलएल.बी. की उपाधि स्वीकार करते समय

राज्यमंत्री ॲड. गणेशराव दुधगांवकर इनका
मंत्रालय दफ्तर का छायाचित्र

शिवाजी महाविद्यालय परभणी कि ओर से मानचिन्ह धारक विद्यापीठ खिलाडी
बापूसाहेब (पिछे की पंक्ति में बाएं से तिसरे, टाय पहने हुए), साथ में साहेबराव लबडे,
विजय ठाकूर, अविनाश पेडगावकर, एल.डी. चौधरी, लाला हाश्मी, रशीद खाँन,
उमर अली, अविनाश धामणगावकर, लक्ष्मीकांत गायकवाड, सुरेश जाधव,
कु. प्रतिभा देशपांडे, कु. धामणगावकर, प्रा. वाईकर, प्रा. खेडकर,
प्रा. बायस, प्राचार्य डांगे, प्रा. बागल, प्रा. तायडे, प्रा. भोईटे मॅडम (1967-68)

बाएं से डॉ. बरदाळे, बापूसाहेब (राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार),
उपमुख्यमंत्री बॅरिस्टर रामराव आदिक
तथा ॲड. मुंजाजीराव जाधव

सन 1961 की
महाराष्ट्र राज्य स्थापना के पहले
से ही उच्च गुणवत्तापूर्ण
सामाजिक कार्य करनेवाले
दुधगांवकर परिवार के सदस्य
श्री. लिंबाजीराव और बापूसाहेब,
राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री
मा. यशवंतराव चव्हाण के साथ,
साथ में श्री. रावसाहेब जामकर

माणिकचंद पहाडे विधीकुल
छात्र संघ के समारोह में बांये ओर से
प्राचार्य श्री. शास्त्री
भाषण करते हुए बापूसाहेब,
मा. शंकररावजी चव्हाण
(सिंचन मंत्री, महाराष्ट्र राज्य),
ॲड. सुखदेव शेळके

मा. मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील जी
के साथ भोजन का स्वाद
लेते हुए बापूसाहेब
(राज्यमंत्री - स्वतंत्र कार्यभार)
तथा मंत्री डॉ. बळीराम हिरे

पुर्णा सहकारी चिनी कारखाना प्रथम हंगाम समारोह
के अवसर पर पूजा करते हुए
मा. मंत्री बापूसाहेब एवं सौ. संध्याताई दुधगांवकर

माननिय मुख्यमंत्री शंकररावजी चव्हाण इनका स्वागत करते हुए
मा. लिंबाजीराव दुधगांवकर, अध्यक्ष (प.जि.म.स.बँक)
तथा श्री. ओमप्रकाशजी देवडा

तत्कालीन काँग्रेस पार्टी नेता
श्रीमती प्रतिभाताई पाटील (पूर्व राष्ट्रपती)
के साथ मा. मंत्री गणेशराव दुधगांवकर उपाख्य बापूसाहेब

महाराष्ट्र स्टेट कॉ.मार्केटिंग फेडरेशन मुंबई कि बैठक में फेडरेशन के
अध्यक्ष बापूसाहेब, फेडरेशन के व्यवस्थापकीय
संचालक श्री. नंदलालजी IAS तथा अन्य

जितूर का खाद कारखाना (पॅफको) का निरीक्षण करते समय बाएं ओर से-
श्री.के.आ. कान्हे, आ. रायभानजी जाधव, एम.डी.सी. चे चेअरमन,
श्री. भुजंगराव कुलकर्णी (भूतपूर्व सचिव), कारखाने के चेअरमन
बापूसाहेब तथा श्री. सुभाषराव सूर्यवंशी (CEO-एम.डी.सी.)

बहुजन हितकारणी सभा के समारोह में पत्रकार तथा
साहित्यिक श्री. उत्तमजी कांबळे का सत्कार करते हुए
बापूसाहेब, संस्थासचिव ॲड. श्रीधरराव कदम,
प्राचार्य डॉ. सुरेश सदावर्ते तथा प्रा.डॉ. अशोक जोंधळे

मुंबई में मा. मंत्री श्री. दिवेकर इनके निवासस्थान पर
जगप्रसिद्ध गायिका श्रीमती लता दीदी मंगेशकर इनसे सदिच्छा भेट करते
हुए श्री. गणेशराव दुधगांवकर परिवार, दिवेकर परिवार
तथा मंत्री डॉ. हिरे साहब

केंद्रिय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे) के साथ
ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत), साथ में
साथी रामराव जाधव तथा एस.एच.हाश्मी (परभणी)

समाजसेवक अण्णा हजारे जी ने जिंतूर के
ज्ञानोपासक महाविद्यालय को भेट दी ।
उनके साथ संस्थाध्यक्ष बापूसाहेब

राहुरी के भूतपूर्व विधायक श्री. कदम चंद्रशेखर लक्ष्णमराव
इनके साथ बापूसाहेब, ज्ञानोपासक महाविद्यालय, जिंतूर
यहाँ कार्यक्रम में

मॅगेसेसे पुरस्कार प्राप्त जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह जी, अलवर (राजस्थान)
के लिए आयोजीत ज्ञानोपासक महाविद्यालय जिंतूर यहां एक कार्यक्रम में
संस्थाध्यक्ष बापूसाहेब, सचिव डॉ.सौ. संध्याताई दुधगांवकर

शिक्षण परिषद का उद्घाटन करते हुए
विख्यात न्यायमुर्ती श्री. चंद्रशेखर धर्माधिकारी, बापूसाहेब,
प्राचार्या डॉ.सौ. संध्याताई दुधगांवकर, श्री. सुगावकर गुरुजी
तथा प्रा.डॉ. अशोक जोंधळे

सत्य आग्रह

७५ अमृत महोत्सव

कृतज्ञता ज्ञापन समारोह

परभणी और हिंगोली इन दो जिलों के राजनीतिक ऋषितुल्य व्यक्तिमत्त्व

प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

1971-74 • 'मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय परभणी' तथा 'मराठवाडा विकास' आंदोलन के एक प्रमुख युवा नेतृत्व

1980 • जीवन के प्रथम चुनाव के लिए सीधे लोकसभा उम्मीदवारी घोषित युवा

• बसमत के विधायक बनें

1983 • महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बदलने में अहम भुमिका निभाने वाले युवा विधायक

• राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) - निष्कलंक कर्तृत्व

- अमरावती तथा बुलढ़ाणा जिले के तत्कालिन पालकमंत्री

• संस्थापक अध्यक्ष - ज्ञानोपासक शिक्षण मंडळ, परभणी (www.Dnyanopasak.in)

- आज तक 50,000 परिवारों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाली संस्था

1985 • जिंतूर के विधायक बनें

1986 • हाजिरा गॅस पाईपलाईन : हाजिरा (गुजरात) - परभणी - नागपुर - पॅराव्दिप (ओरीसा) तक 1550 कि.मी. लंबाई के गॅस पाईपलाईन प्रकल्प के लिए यशस्वी कोशिश करनेवाले दुरदर्शी नेता

- मराठवाडा, विदर्भ के औद्योगिक विकास हेतु महत्त्वपूर्ण, २५ लाख प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार निर्माण की क्षमता का प्रस्ताव

1987 • अध्यक्ष - महाराष्ट्र राज्य मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड

1989 • देश का प्रथम सहकारी खाद कारखाना शुरु किया

1990 • पाथरी विधानसभा चुनाव में यथाशक्ति चुनाव लड़ा

परभणी जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक, विभिन्न सरकारी संस्थाएँ, ज्ञानोपासक शिक्षण संस्था, मुंबई मार्केट कमिटी, मार्केटिंग फेडरेशन जैसी संस्थाओं में नौकरियाँ प्रदान करने में अहम भूमिका निभाने वाले

2009 • पंद्रहवीं लोकसभा के सदस्य

- संसद में सर्वाधिक उपस्थिति तथा सक्रिय योगदान

2014 • मोदी लहर दिखाई देने के बावजुद भी तत्वनिष्ठा हेतू सांसद पद नकार दिया। इसका प्रमुख कारण शिवसेना पक्षप्रमुख का स्वभाव, जिस मुद्दे की वजह से आगे सन 2022 में महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बदला गया।

2019 • लोकसभा और विधानसभा चुनावों में प्रमुख भुमिका निभायी

विस्तृत परिचय हेतु ''कर्मयोगी बापूसाहेब'' यह अमृत महोत्सव गौरवग्रंथ अवश्य पढें।

गौरवग्रंथ

मराठवाडा के राजनीतिक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय

प्रख्यात भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत)

* सन 1987 उप-चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी विधायक बनाने वाले लोकनेता
* देश की निती में बदलाव लाकर, देश के प्रथम सहकारी खाद कारखाना के संस्थापक (1990's)
* पाच विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों से प्रभावी ढंग से चुनाव लड़नेवाले प्रत्याशी (यह देश के गिने-चुने साहसी उदाहरणों में से एक)
* विभिन्न समाज के युवाओं को विधायक बनाने में निर्णायक भुमिका निभाने वाले कर्तृत्ववान व्यक्ति

बापुसाहेब की कारकीर्द हेतू

स्कॅन करें।

केंद्रिय मंत्री मा. माधवराव सिंधीया (शिंदे) के साथ
ॲड. गणेशराव नागोराव दुधगांवकर (शिंदेशाही राऊत) साथ में
साथी रामराव जाधव तथा एस.एच.हाश्मी

दैनंदिनी के लिए

स्कॅन करें।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान साहब इनके करकमलों से दैनंदिनी 2022-23 का विमोचन संपन्न